भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

वर्ष 39 अंक : 3 17-5-2016 मंगलवार (मई-जून) वार्षिक शुल्क : ₹111.00

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

'उपासनाधाम-वेमार में मूर्तिप्रतिष्ठा'

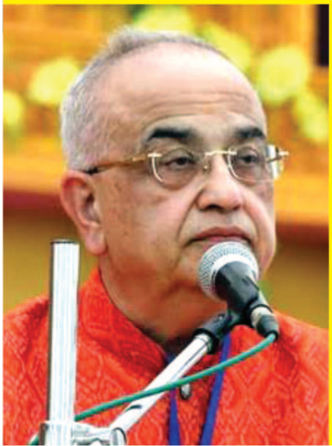

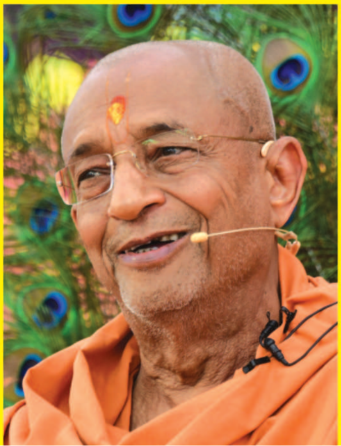
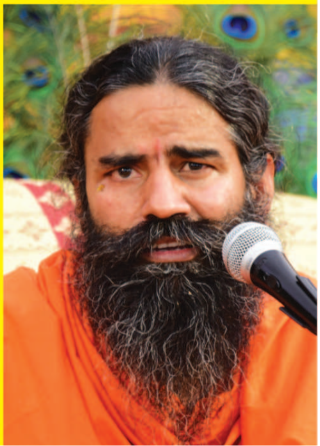

संतभगवंत साहेबजी

अमृत महोत्सव

गुरुवर्य योगीजी महाराज और गुरुहरि काकाजी के प्राकट्य पर्व पर...

अहो ! अबकी बार **2 जून** को सरलता के मूर्तस्वरूप **गुरुवर्य योगीजी महाराज की प्राकट्य तिथि** एवं **12 जून** को निर्दोषबुद्धि के राजा **गुरुहरि काकाजी महाराज का प्राकट्य दिन** – दोनों पास-पास ही हैं। सहज ही 'अनुपम मिशन' द्वारा रचित भजन की पंक्ति – *गुरु अने गुरुहरिथी भर्या निरंतर रहीए...* का स्मरण हो आता है। प.पू. योगीजी महाराज वाकई ऐसी दिव्य विभूति थे, जो सदैव अपने प्रभु एवं गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज में ही लय और लीन रह कर सभी क्रिया करते। निम्न छोटे-से प्रसंग से इस बात का एहसास होता है –

एक **हरिभक्त** ने गुरुहरि योगीजी महाराज को नई पेन दी और कहा–

बापा, आप इससे लिख कर इसे प्रसादी की कर दें।

प.पू. बापा ने लॅटरपेड पर लिखा–

'स्वामिश्रीजी सत्य हैं'; 'स्वामिनारायण सत्य हैं'; 'शास्त्रीजी महाराज की जय हो।'

सामान्यतः हम या तो अपना नाम लिखते हैं या फिर अपने हस्ताक्षर करते हैं। यह हमारी अस्मिता को दर्शाता है, जो 'सूक्ष्म अहं' ही है। पर, प.पू. बापा का यह छोटा-सा जॅस्चर बताता है कि भगवान स्वामिनारायण एवं गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज के अस्तित्व में ही उन्होंने अपने निजी अस्तित्व को लीन कर दिया था और यही कारण था कि वे सरलता की मूर्ति थे। इसी प्रकार उनके आध्यात्मिक वारिस ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज, गुरुवर्य योगीजी महाराज की मूर्ति में निरंतर निमग्न रहे। इतना ही नहीं, संबंध में आए हर एक में उन्होंने प.पू. बापा की महिमा भर-भर कर, उन्हें प.पू. बापा से जोड़ कर, उनमें अध्यात्म की भूख जगाई और प्रभुमय जीवन जीता किया।

हम सब खूब भाग्यशाली हैं कि जब **गुरुहरि योगीजी महाराज का 125वाँ प्राकट्य** वर्ष प्रारंभ हो रहा है, तभी हम **ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं पप्पाजी** की **शताब्दी** का सोपान चढ़ रहे हैं और इसी दौरान, प्रत्यक्ष स्वरूपों की निश्रा में 'बृहद् गुणातीत समाज' **शिकागो** में **10, 11 व 12 जून 2016** को **ब्रह्मस्वरूप काकाजी – पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव** का एक सोपान मनाएगा।

ऐसे मंगल अवसर पर गुरुहरि योगीजी महाराज की आशीर्वादरूप वाणी एवं वर्षों पहले हुताशनी के उत्सव पर ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा, प्रभु को हमारी प्रार्थना पहुँचे इस हेतु बताई शर्तें समझें। हमारा तो ज्ञान भी 'प्रगट' है... सो, गुरुहरि योगीजी महाराज एवं ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा दिया गया यह ज्ञान आज भी वैसा ही 'प्रगट' है –

भजन करते-करते क्रिया करें, तो अंतर में ठंडक रहती है। अंतर में ठंडक देख कर बड़े **संत** राज़ी होते हैं और वे **राज़ी हों तो 'बुद्धियोग' देते हैं।**

'बुद्धियोग' क्या ? तो, संत के वचन में हमें शंका न हो। संत रात कहे तो रात, लेकिन उसमें शंका न हो। तब संत राज़ी हो जाते हैं।

जिसने हठ, मान और ईर्ष्या पकड़ रखा हो, वह संत को राज़ी नहीं कर पाएगा। किसी की प्रगति को सहा न जाए – वह ईर्ष्या। दृष्टांत के रूप में – मुक्तानंदस्वामी ने दादाखाचर की प्रशंसा की, यह बात जीवाखाचर से सही नहीं गई। इसे कहा जाए – मान ने बाधा डाली।

ऊपर कहा वैसा 'बुद्धियोग' यानि –संत की आज्ञा फट्-से मान लेनी ; यह बात हम में अभी तक आई नहीं है। हम अपने मन से मान लेते हैं कि प्रसन्नता मिल गई। राज़ी तो हैं, वर्ना ऐसा जोग मिलता नहीं। लेकिन, सैद्धांतिक प्रसन्नता के लिए तो अनुवृत्ति – यानि मरजी के मुताबिक बरतना पड़ता है !

संत हम पर निरंतर राज़ी कैसे रहें ? उनकी कोई भी आज्ञा चूकें नहीं, तो वे निरंतर राज़ी ही रहेंगे। अन्यत्र और अन्य सुख की चाह नहीं रखना। यदि और कहीं सुख मान लिया हो, तो पश्चाताप होना चाहिए। जिसे जो गुरु मिले हैं, उसे वे मानते हैं। तो, हमें तो सर्वोपरि गुरु मिले हैं; सो, सर्वोपरि प्राप्ति होगी।

सर्वोपरि गुरु शास्त्रीजी महाराज मिले हैं, फिर भी कोरे क्यों रहते हैं ? सत्पुरुष के साथ अपने जीव को जोड़ा नहीं है – इसलिए। पशु भी अपना खूंटा छोड़ कर अन्यत्र नहीं जाता। एक जने ने अपनी भैंस बेच दी थी। पर, अगले दिन सुबह वह कोढ़ के खूंटे के पास आकर खड़ी रह गई ! हमने गुरु द्वारा ही मोक्ष प्राप्ति को माना है, फिर भी खोट रह जाती है, क्योंकि हमारे विश्वास में खोट है। यहाँ जलाभक्त का दृष्टांत दिया।

फिर बोले – विश्वास भी हो, लेकिन निष्कपट नहीं रह पाते। श्रीजी महाराज ने एक वृद्धा से सारे पैसे मांगे थे। उसने सोचा कि महाराज मेरे सारे पैसे उत्सव में खर्च लेंगे। सो, पाँच हज़ार रख कर, दो हज़ार दे दिए। फिर, उसी रात उसके घर में चोर आए और वो पाँच हज़ार चुरा ले गए। साक्षात् भगवान माने थे, लेकिन कपट रखा। यूं, ज़्यादा नहीं – पर थोड़ा कपट रह ही जाता है। ऐसा कपट यानि– अंतर्यामी सत्पुरुष के पास भी सच बोले नहीं। इसे कहा जाए गुप्त कपट – छुपा कपट। सत्पुरुष के पास निष्कपट रहें, तो ब्रह्मरूप हो ही जाएँ–यह सिद्धांत की बात है।

विश्वास, निष्कपटभाव इत्यादि के बिना भले ही माला फेरें, नियम पालें, लेकिन मुख्य बात तो रह जाती है – इसे बहुत बड़ी खोट कहा जाए। निष्कपट होने पर तो सारा सत्संग 'गुणातीत' लगता है।

– गुरुवर्य योगीजी महाराज

अध्यात्म के मार्ग पर चलते मुक्तों की प्रार्थना प्रभु को अचूक पहुँचे ही, इस हेतु शर्तें–

(1) हम जिससे प्रार्थना करते हैं, उसके पास इतनी सत्ता, सामर्थ्य, ऐश्वर्य और प्रताप होने का हमें संपूर्ण भरोसा होना चाहिए। **हमें पू. बापा मिले हैं,** सो संपूर्ण श्रद्धा और विश्वास से सम्राट को पुकार करना आसान हैं। **जो स्वरूप प्रकृतिपुरुष के भीतर के हों,** उनसे हम भले ही कितनी ही प्रार्थना करें, लेकिन **वे माया से परे होने की रीति या रहस्य नहीं बता सकते और हमें स्वभावरहित नहीं कर सकते।**

(2) एकांतिक के वचन से, विशिष्ट सेवा के रूप में, गुरुदेव को **शुद्धभाव से**, प्रामाणिकता और सच्चे दिल से, स्वरूपयोग और स्वरूप उपशम के रूप में, नियमित प्रातः-सायं दो बार आधा-आधा घंटा प्रार्थना – भक्ति करना।

यहाँ '**शुद्धभाव**' **यानि–** ***'भगवान के धाम में जो मूर्ति हैं, वे प्रभु मुझे सच में साक्षात् मिले हैं'*** **–ऐसी प्रतीति रखनी।** प्रामाणिकता से प्रार्थना भले की हो, लेकिन यदि दिल की सच्चाई नहीं हो, तब भी इच्छित परिणाम नहीं आता।

(3) प्रार्थना में कोई निजी स्वार्थ, कामना या रागद्वेष नहीं होना चाहिए। किसी का तनिक भी बुरा चाहना ही नहीं। भगवान सभी का मंगल करें और साथ में मेरा भी करें। मेरे हित, उत्कर्ष तथा विकास के लिए जैसा माहौल जरूरी हो, वहाँ और वैसे मुझे रखें – ऐसी निष्काम भावना से प्रार्थना करना।

(4) ऐसी प्रार्थना के बाद थोड़े ही अंतराल पर जो कुछ बने और बनता जाए, वह सब उसके फलरूप है, ऐसा चौकस-पक्का मान कर, गुरुदेव के कार्य को संपूर्ण सहकार देते हुए, साक्षीभाव से, खूब प्रेम से स्वीकार कर, वे जैसे चलाएँ वैसे चलना। गुरुदेव कभी भी हमारा अहित करेंगे ही नहीं – होने भी नहीं देंगे। **पारस से पारस बनाने का ही उनका सत्यसंकल्प होता है। इसीलिए, वे हमारे आध्यात्मिक विकास के लिए, ऐसा कार्य शुरू कर देते हैं।** तो, ज़रा भी घबराए बिना, निश्चिंतता रख कर, केवल उनकी ओर ही दृष्टि रख कर वर्तते रहना। बहुत कम समय में अव्यक्त वासना और स्वभाव को जीत कर हम उन्हें टाल सकेंगे और फिर पल-पल आश्चर्यों की परंपरा बनती रहेगी और मूर्ति का आनंद आता रहेगा।

यूं, स्वभावरहित होने के बाद, भगवान की मरजी के मुताबिक, अनादि महामुक्तों की भाँति, काम करते हो जाओगे। प.पू. स्वामीबापा की कृपा और दृष्टि से आज यह आसान है और **ऐसे मुक्तों की भी हमें पहचान हुई है**, तो अब 'आज्ञास्वरूप' में से 'अनुवृत्तिस्वरूप' में प्रवेश करने की लगन लगा लेना।

– गुरुहरि काकाजी महाराज, 1970

'योगी परिवार' के 'स्नेहमिलन' की दिव्य स्मृतियाँ...

प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव की शुभ बेला... यानि 'योगी परिवार' का 'स्नेहमिलन'! 11 मार्च 2016 की सायं तक 'ताड़देव' मंदिर का पवित्र आंगन गुणातीत समाज के स्वरूपों, संतों, बहनों एवं मुक्तों की उपस्थिति से इलेक्ट्रीफाई हो उठा। संपूर्ण वातावरण एक अनोखे-दिव्य हर्ष से भरपूर हो गया!

और... अगले दिन यानि– **12** की **सायं** साढ़े पाँच बजे, प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव की पूर्वसंध्या निमित्त प.पू. हंसा दीदी, प.पू. ज्योति बहन व प.पू. दीदी एवं प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई और प.पू. वशीभाई के सान्निध्य में आयोजित बहनों-भाइयों की सभा से, इस 'स्नेहिमलन' की मंगल शुरुआत हुई। इसी वर्ष **3 फरवरी**-ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार के महामंगलकारी दिन-प.पू. हंसा दीदी, प.पू. ज्योति बहन एवं प.पू. प्रेम बहन के वरद् हस्तों, पवई की नौ बहनों ने भागवती दीक्षा ली थी। तब संयोगवश प.पू. दीदी वहाँ नहीं जा पाई थीं, लेकिन दिल से वे उस समय वहीं थीं। सो, **भागवती दीक्षा ली तीन बहनें पहली बार दिल्ली मंदिर आ रही हैं, यह जान कर प.पू. दीदी की खुशी, उमंग-उत्साह देखते ही बनता था।** उनके अंतर में एक ही अभिलाषा कि किसी भी प्रकार इन बहनों का स्वागत-सत्कार करके, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं प.पू. गुरुजी को राज़ी कर लूँ। सो, प.पू. दीदी की भावना प्रकट करने हेतु, बहनों-भाभियों ने, वडील बहनों के साथ, **'कल्पवृक्ष हॉल'** में प्रवेश करने के लिए सीढ़ियों पर चढ़ रही इन बहनों का पुष्पों से स्वागत किया। तभी कुछ मिनिट तक चक्रवात की भांति इतनी ज़ोर से ठंडी हवा

चली कि मुक्तों के हाथों में से पुष्प अपनेआप उड़ कर बहनों पर बरस पड़े! **मानो देवी-देवता भी आज भगवान भजती इन बहनों का स्वागत करने के लिए अंतरिक्ष से यहाँ आए थे!!**

हॉल में स्वरूपों द्वारा स्थान ग्रहण करने के बाद बहनों की विशिष्ट सभा आरंभ हुई। सर्वप्रथम, **प.पू. दीदी** ने **प.पू. हंसा दीदी** व **प.पू. ज्योति बहन** को हार अर्पण करके सभी की भावनाएँ व्यक्त कीं। **पू. स्वाति दीदी** एवं **पू. गार्गी दीदी** ने पवई की **पू. माधुरी बहन, पू. मीना बहन** एवं **पू. कृपा बहन** का पुष्पहार एवं स्मृति भेंट से स्वागत किया। प.पू. दीदी द्वारा आशिष याचना के बाद, प.पू. हंसा दीदी, प.पू. ज्योति बहन का आशीर्वाद प्राप्त हुआ और पू. माधुरी बहन ने भी उनसे प्रार्थना की।

पिछले कई सालों से मंदिर के उत्सवों में होते सांस्कृतिक कार्यक्रमों को तैयार करवाने में, कोरियोग्राफर के रूप में **पू. परछाईं दीदी** का अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। पर अबकी बार, प.पू. दीदी के वचन से पू. परछाईं दीदी ने, सौ. यात्रा एवं सौ. मानसी मित्तल के सहयोग से, स्वयं भक्तिनृत्य प्रस्तुत करके प.पू. गुरुजी के प्रति भक्ति अदा की। **नृत्य के अभिनय की हर अदा में- हर मुद्रा में प.पू. गुरुजी के प्रति उनकी अत्यधिक प्रीति छलकती देख कर, उपस्थित सभी स्वरूप एवं मुक्त भावविभोर हो गए... प.पू. दिनकर अंकल की तो आँखें भर आईं!**

बहनों की सभा पूरी होने के बाद करीब पौने आठ बजे, प.पू. गुरुजी संतगण के साथ हॉल में आए और... **पू. गौरव गर्गजी** एंव **पू. अमृतभाई पटेल साहेब** ने अपनी हृदयभावनाएं व्यक्त की। इसी दौरान प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी सभा में दर्शन देने के लिए पधारे। **पू. दिव्यांग** ने ***'सर जो तेरा चकराए या दिल डूबा जाए, चल तू प्यारे धुन के सहारे...'*** पुरानी फ़िल्मी राग पर स्वरचित नया भजन प्रस्तुत किया। **प.पू. दिनकरभाई, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** एवं **प.पू. गुरुजी** द्वारा आशिष वर्षा से सभा का समापन हुआ।

13 मार्च – प.पू. गुरुजी के 79वें प्राकट्योत्सव की प्रातः 9:00 बजे, कल्पवृक्ष हॉल में प्रत्यक्ष स्वरूपों की निश्रा में महापूजा संपन्न होने के बाद, **पू. इलेशभाई** एवं **पू. राकेशभाई** ने भजन प्रस्तुत किए। **पू. चिंतन अग्रवाल** ने कविता के रूप में एवं अमदावाद के **पू. विपुलभाई** ने फ़िल्मीगीत की पंक्ति एवं 'स्वामिनारायण' धुन गाकर अपनी भावना प्रकट की। प.पू. गुरुजी के आशीर्वचन की ऑडियो सी.डी. **'मार्गदर्शिका- 10'** का पू. अश्विनभाई (पवई) ने अनावरण किया और सांकरदा के पू. स्नेहलस्वामी ने आशिष दी। अंत में 'श्रीहरिनो सनेडो' करके भाइयों ने आनंद व्यक्त किया।

सायं करीब पौने छः बजे, फूलों से सुसज्जित 'टमटम' के **सारथी बने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने, संतभगवंत साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई के साथ सभामंडप में प्रवेश किया। पृष्ठभूमि में सांकेतिक रूप से गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के मंदिरों एवं भवनों को दर्शाता फ्लेक्स लगाया गया था और... उसके नीचे **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** के अंतर की निम्न भावना अंकित थी –

'ख़ास कर मैंने तो हमारा सब कुछ साझा ही गिना है। जहां जैसी जिस वक़्त ज़रूरत।

मेरा-तेरा, निजी-अपना नहीं रखना। हमें इतना ही ***सिखाना*** *है,*

*बाकी सब तो सभी मुक्त करते ही हैं और वह **'महाराज का ज्ञान'** है।*

शायद हीरों से तोले जाएँ, तो भी क्या ? लेकिन रहस्य जाना नहीं कहा जाए।

*हम ठहरे अक्षरपुरुषोत्तम के **'गुणातीत ज्ञान'** वाले और वह **'विश्वधर्म'** हुआ।*

*तो, तुम अब **'सर्वदेशीयता'** से तैयार हो जाओ व दूसरों को भी तैयार करते जाओ।'*

प.पू. साहेबजी जैसे ही स्टेज पर आए, थोड़ी देर वहाँ खड़े रह कर खूब गौर से उन्होंने यह पढ़ा और **प.पू. गुरुजी** से उसी समय पूछा भी – *यह काकाजी ने कहा था ?*

आवाहन् धुन-भजन से प.पू. गुरुजी के 79वें प्राकट्योत्सव की सभा प्रारंभ हुई। सर्वप्रथम, सभी स्वरूपों-विभूतियों का पुष्प हार से स्वागत किया गया। प.पू. गुरुजी के प्रति प्रेम व भक्ति अदा करते हुए, दिल्ली के मुक्तों एवं गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों से आए संतों-हरिभक्तों ने उन्हें हार-स्मृति भेंट अर्पण की। हमें मिले गुणातीत स्वरूप युवा पीढ़ी को खुद से लगाव करा कर, किस प्रकार उनमें संस्कार सिंचन करते हैं, यह पानीपत के पू. पुनीत गोयलजी के बड़े सुपुत्र **पू. वैभव** ने स्वानुभव से सभी को अवगत कराया। तत्पश्चात्, **पू. हिमंतस्वामिजी (लंडन)**, **पू. वशीभाई** एवं **पू. प्रेमस्वरूपस्वामिजी** ने माहात्म्य दर्शन कराया। **'स्वामिनारायण धुन'** की महिमा का दर्शन कराता नया भजन ***'सर जो तेरा चकराए या दिल डूबा जाए, चल तू प्यारे धुन के सहारे...'*** **पू. दिव्यांग** ने आज भी प्रस्तुत किया। इसका राग और शब्द सुन कर संतभगवंत साहेबजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, स्टेज पर विराजमान एवं पूरे पंडाल में बैठे सभी पुराने जोगी मगन हो गए। इस भजन के दौरान उसमें लीन संतभगवंत साहेबजी की चलती-थिरकती उंगलियाँ सभी के चित्त पर हमेशा के लिए अंकित हो गईं। भजन के पश्चात्, **संतभगवंत साहेबजी** ने तो प्रसन्नता से अभिनंदन करते हुए आशीर्वाद दिया–

हम सब पुराने लोगों के समय का एक गाना था –

सर तेरा चकराए या दिल डूबा जाए, आ जा प्यारे पास हमारे...

इस धुन पर यह बहुत अच्छा भजन बनाया है।

*हम सबको फ़िल्मीगाना ऐसे ही याद रह जाता है, उसे याद रखने रटना नहीं पड़ता। कोई गाने लगे, तो हम अपने आप गाने लगते हैं। लेकिन हमारी बहनों, संतों और कई साधक भाइयों ने **फ़िल्मी राग पर** भजन बनाए हैं, **वे भजन सुनने के बाद फ़िल्म का पुराना गाना दिमाग़ से निकल जाता है और भजन ही याद रह जाता है। यही करना था, जो हो गया।** यह भजन बहुत अच्छी धुन और बहुत अच्छी थीम पर बना है। इसलिए दिव्यांग तुझे बहुत-बहुत अभिनंदन। गुरुजी कैसे-कैसे युवानों को तैयार करके हमें उनका दर्शन करवा रहे हैं, वही गुरुजी की भक्ति है! और... गुरुजी में जो महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी और पप्पाजी का तत्त्व काम कर रहा है, इससे हमें मालूम होता है कि जो भगवान का काम है, वही गुरुजी के द्वारा यहाँ हो रहा है। यह देख कर- जान कर हमें बहुत खुशी हुई और आपने ये भजन के द्वारा हम सबको झूमा दिया–पर्टिकुलर मुझे तो है ही।*

प.पू. भरतभाई एवं **प.पू. दिनकरभाई** के आशिष के बाद **पू. राकेशभाई, पू. दिव्यांग** एवं **पू. हृदय** ने प.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन निमित्त बनाया नया भजन– ***'निष्ठा काकाजी की रखी तूने जीवन में...'*** प्रस्तुत किया। और... अबकी बार निमंत्रण कार्ड पर गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा प.पू. गुरुजी को दिए आशीर्वाद का प्रसंग प्लॅ के रूप में स्क्रीन पर दर्शाते हुए, सभी मुक्तों की ओर से **पू. राकेशभाई** ने भगवान स्वामिनारायण एवं सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना की –

हे प्रभु! उत्तर भारत के मुक्तों पर अनहद् कृपा बरसा कर हमें प.पू. गुरुजी की निश्रा दी, जिन्होंने गुरुहरि काकाजी महाराज की हर एक बात, चेष्टा या स्मृति को सैद्धांतिक रूप से शाश्वत् किया है। आज संबंध में आते हम सभी को उसी के अनुरूप ढाल कर, जीतेजी अक्षरधाम का दिव्य सुख दिलाने हेतु वे हर समय उपलब्ध भी रहते हैं। सो, अथक् परिश्रम से उनके द्वारा दी जा रही क़वायद हमेशा हमारी जीवनशैली बनी रहे –ऐसी प्रार्थना...

अंत में **प.पू. गुरुजी, संतभगवंत साहेबजी एवं प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** की दिव्य वाणी का अद्भुत लाभ लेकर अविस्मरणीय स्मृतियाँ संजोते हुए, विसर्जन प्रार्थना के बाद सभी ने महाप्रसाद के लिए प्रस्थान किया।

प.पू. गुरुजी के प्राकट्य पर्व की पूर्व संध्या
12 मार्च, 2016–बहनों की सभा

प.पू. दीदी (दिल्ली)

...आज बहुत आनंद का दिन है। गुरुजी के प्रागट्य दिन की पूर्वसंध्या शुरू हो गई। मार्च में जब गुरुजी का प्रागट्य दिन आता है, तो–मैंने अकसर देखा है कि गुरुजी के चेहरे पर एक अलग-सी चमक होती है। इतने सालों से गुरुजी की सेरेछाया में रहते हुए मुझे भी पता है कि अपना बर्थडॅ- प्रागट्योत्सव खूब धामधूम से मनाने का उन्हें मन में हो, ऐसा तो हो ही नहीं सकता। लेकिन, उस चमक का रहस्य जो मैं समझी हूँ वह जैसे कि बंसरी ने बताया कि अपना 'योगी परिवार' इकट्ठा होने वाला होता है, उससे वे बहुत उत्साहित होते हैं। आज दीदी, ज्योति बहन, नीलम बहन, मनी बहन, ज्योत की अन्य बहनें, दिनकरभाई, भरतभाई, बापू, वशीभाई और सब भाई जो आए हैं, इन **सबके यहाँ आने के आनंद का रिफ्लेक्शन गुरुजी के फेस पर दिखाई देता है।**

तो, अपनों का स्वागत तो क्या करना? सभी स्वरूपों की हूँफ के कारण ही हम सब आज यहां पर आनंद-किल्लोल कर रहे हैं। सो, सबको खूब-खूब धन्यवाद और प्रार्थना कि हमेशा ऐसे ही आते रहना। ज्योति बहन दिसंबर में मल्कानी अंकल के 75वें बर्थडॅ निमित्त आई थीं, तब मेरे पूछने पर कह कर गईं थीं कि वे मार्च में नहीं आएँगी। मैंने भी इनकी एईज व तबियत के हिसाब से आग्रह नहीं किया। पर, सबसे लास्ट में मॅसेज आया ही कि ज्योतिबेन भी पधार रहे हैं। सब बहनों के आनंद का तब ठिकाना नहीं रहा। पवई की बहनें भी 3

फरवरी को भागवती दीक्षा लेने के बाद पहली बार दिल्ली मंदिर आईं हैं। हमारी जमात जब बढ़ती है, तो हमें आनंद ही होगा। इसलिए इनका भी बहुत-बहुत स्वागत है। काकाजी, भरतभाई और वशीभाई की सेरेछाया में इतने सालों से साधना जो कर रही थीं, सो अंतर तो भगवा था ही। लेकिन, दीदी और ज्योतिबहन ने भगवा कपड़े देकर गुणातीत समाज के इतिहास में एक और बड़ी घटना जोड़ दी।

बंसरी ने जब '**योगी परिवार**' की बात की, तो एकदम मुझे काकाजी और पप्पाजी का एक प्रसंग याद आ गया, जो गुरुजी ने थोड़े दिन पहले ही बताया था। तब गुरुजी शायद इंटर में पढ़ते थे। ग्लास्टन के फिजिक्स की एक बुक गुरुजी ने लाइब्रेरी में देखी और उन्हें वह बहुत पसंद आ गई। लेकिन जैसे कि गुरुजी ने बताया कि मुझे तो अपने मूड पर ही पढ़ना पसंद था। ऐसा नहीं कि इसी समय लाइब्रेरी में जाकर पढ़ो, ऐसा करो। वह बुक उन्हें खूब पसंद आ गई, पर उस समय घर की आर्थिक हालात के कारण इतने पैसे नहीं थे कि वे बुक खरीद सकें। तो मन ही मन में सोच रहे थे कि यह बुक कैसे लूंगा? इसी सोच में दो-तीन दिन हो गए। किसी को यह बात कही भी नहीं थी। गुरुजी जब कॉलेज जाते तो ताड़देव होकर जाते। सो, एक दिन सुबह नौ-साढ़े नौ बजे गुरुजी ताड़देव गए। वहां हॉल में काकाजी और पप्पाजी बैठे थे। गुरुजी तो पांव छूकर निकलने लगे। उस समय पप्पाजी से ज़्यादा बातचीत नहीं होती थी और पप्पाजी भी जानते थे कि यह काकाजी से ज़्यादा एटॅच्ड है। लेकिन, जैसे ही निकलने लगे कि पीछे से पप्पाजी ने कहा – *दिलीप, पैसा-बैसा जोइए छे?* गुरुजी एकदम ताज्जुब रह गए कि मैंने तो किसी को कोई बात की ही नहीं है, तो आज पप्पाजी अचानक यह कैसे पूछ रहे हैं? उस समय पप्पाजी को सभी बाबुभाई कहते थे। तो, गुरुजी ने कहा– *शाना पैसा बाबुभाई?* तुरंत पप्पाजी ने कहा –*तारे कईं जोईतुं होए, कंई लेवुं-करवुं होय।* तब गुरुजी ने भी एकदम कहा – *हाँ, जोइए तो छे, पण तमने कोणे कह्युं?* पीछे सोफे पर बैठे हुए काकाजी एकदम बोले – ***योगी परिवार छे राजा, योगी परिवार!*** *लई जाओ।* फिर काकाजी ने कहा– *मारी रूममां मारा झब्बामांथी पैसा काढ़ी ले।* और गुरुजी सेकण्ड हॅण्ड बुक 40 रुपये की लेकर आए थे।

यह प्रसंग हमें यह भी दर्शाता है कि इन स्वरूपों की आपसी एकता-आंतरिक एकता, अद्वैत–ऐक्य कैसा है? हमारी मायिकदृष्टि तो इसे समझ ही नहीं पाती।

मुझे याद है जब 25 जनवरी को हरिधाम में बहुत ज़ोर-शोर से गुणातीतानंदस्वामी की द्विशताब्दी मनाई थी। 26 तारीख को ज्योत में काकाजी के साक्षात्कार का फंक्शन मनाया गया। फिर वहां से सब नापा गए। काकाजी ने गुरुजी से कहा कि आनंदी और स्मिता को मैं अपने साथ दोबारा बॉम्बे ले जाता हूँ, तुम्हें उनका काम तो नहीं है। गुरुजी ने कहा मुझे तो कुछ काम नहीं है। सो, स्मिता दीदी और मैं दोबारा मुंबई गए थे। वहां हम 5 फरवरी तक रहे। यूं 1986 में काकाजी के साथ मुंबई में हम लास्ट रहे। 31 जनवरी को काकाजी ने पवई में भरतभाई का प्राकट्य पर्व मनाया। 3 फरवरी को फंक्शन होने के बाद शाम को काकाजी दिव्या मासी की बहन हेमलताबेन झवेरी के घर पधरामनी करने के लिए गए। हमें भी साथ में लेकर गए। हेमलता बेन ने जो भेंट रखी उसमें से काकाजी ने 1 रुपया लेते हुए कहा– *यह आनंदी को दे दो, उसका तो ज़्यादा कुछ खर्च*

नहीं है और बाकी के सौ रुपये आप विद्यानगर पप्पाजी को भेज दो। हेमलता बेन ने कहा– *काकाजी मैं वहां और भेज दूंगी, आप ये रखो।* तुरंत बोले– *नहीं-नहीं,* ***हुं ने पप्पा एकज छीए ने, तो तमे मारा वचने आ पप्पाजीने विद्यानगर मोकली आपो।***

ऐसे जॅस्चर्स से स्वरूप हमारा जतन करते ही रहे हैं। आज भी काकाजी और पप्पाजी गए नहीं हैं। जो कुछ हो रहा है, वह हर एक को अंदर प्रतीति कराता ही होगा कि उनका कार्य वैसे का वैसा ही चालू है। आज पवई में भरतभाई, वशीभाई एवं भाईयों द्वारा, शिकागो में दिनकरभाई द्वारा, विद्यानगर गुणातीत ज्योत में –हंसादीदी, ज्योतिबेन, देवीबेन, ताराबेन द्वारा। दिल्ली में जब भी कभी भूकंप, तेज बरसात या बाढ़ इत्यादि की घटना बनती है, तो सबसे पहला फोन हंसा दीदी का आता है कि वहां सब ठीक है न, अपने यहां कुछ हुआ नहीं है ना? कई बार ख्याल ही आ जाता है कि अभी यह घटना बनी है, तो पहला फोन **दीदी** का ही आएगा। **वहां बैठे हुए भी** वे **हम सबकी इतनी चिंता करती हैं।** ऐसे ज्योति बहन का एक प्रसंग सुना। गुरुजी हमें सिंगापोर ले गए थे। ज्योति बहन की सेविका प्रीति मवानी के भाई अमित मवानी सिंगापोर रहते हैं। उन्होंने पधरामनी करने के लिए गुरुजी और हमें अपने घर बुलाया। उनकी एक छोटी बेटी है। उनकी मिसीज़ ने मुझे बताया कि बेबी के जन्म के समय उन्हें बहुत तकलीफ हो रही थी। पर, हॉस्पीटल में अचानक ही ज्योति बहन आए और सीधा ऑपरेशन थीएटर में चले आए। उसी समय उनकी बेबी का जन्म हुआ और ज्योति बहन ने उसे अपने हाथों में उठाया; सो, बहुत भाग्यशाली लड़की है। हम कल्पना करें कि ज्योति बहन का ऑपरेशन थीएटर में सीधा ही चले जाना!! मैं तो यह सुनकर एकदम ताज्जुब ही रह गई कि **ऐसी परवरिश करने वाले, हमारी पल-पल की चिंता करने वाले स्वरूप कहां से मिलेंगे!** कृपा करके वे हमारे जीवन में आए हैं। तो, हमें उनके पास से 'गुणातीत ज्ञान' का खज़ाना ले लेना है। अपनी छोटी-छोटी अपेक्षाओं से उनकी नापातोली नहीं करनी है। उनसे हमें और कुछ पाना है; वे हमें और कुछ देने के लिए धरती पर आए हैं।

इन लोगों ने आज ऐसा समाज भी तैयार कर दिया है, जो कई बार हमें अंतर्दृष्टि करा जाता है। अमदावाद से हमारे परिमलभाई और सुवास आते हैं। रक्षाबंधन या गुरुपूर्णिमा के दिनों में वे यहाँ आए होंगे। सुहृद्स्वामी ने आलू का लच्छा बनाया था, जो परिमलभाई को बहुत पसंद आया। वे अमदावाद लौट गए, तो गुरुजी ने किसी के साथ आलू के लच्छे का डिब्बा भरवा कर उनके घर भेजा। गुरुजी ने फोन करके परिमलभाई से मज़ाक में कहा– *इसके ग्यारह सौ रुपये देने पड़ेंगे।* परिमलभाई के पास सुवास भी बैठी होगी, उसने परिमलभाई से कहा कि गुरुजी से कहो– *ग्यारह सौ नहीं, अगर ग्यारह हज़ार भी देने पड़ें तो भी बहुत सस्ता है।* गुरुजी ने अपने नॅचर के मुताबिक मज़ाक में कहा– *अच्छा, आप लोग तो धीरुभाई अंबाणी, टाटा-बिड़ला से भी ज़्यादा अमीर हो गए कि इतने से आलू के लच्छे के ग्यारह हज़ार देना सस्ता लगा।* **सुवास** ने फिर गुरुजी से कहलवाया –

सच, धीरुभाई अंबाणी, टाटा-बिड़ला से तो हम बहुत अमीर हैं ही, क्योंकि हमें आपका जोग हुआ है!

बहनों को सभा का बहुत लिमिटेड टाइम मिला है; आज वैसे दीदी और ज्योतिबेन का लाभ लेना है। लेकिन, साहेब का एक सूत्र है जो मैं रोज़ प्रार्थना करती हूँ–

'तारूं कार्य, तारा बळे, तारी रीते, तने राजी करवा हम करते रहें।'

और… इन स्वरूपों के अंतर में हमारी तरफ से हाश हो, हम कभी भी इन्हें मोहताज़ ना करें–ऐसी प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. हंसा दीदी (गुणातीत ज्योत)

…काकाजी और पप्पाजी की शताब्दी हम लोग मना रहे हैं। बहुत सालों से काकाजी और पप्पाजी की गोद में हम लोग रहे हैं। योगीजी महाराज की कृपा से बहनों को भगवान भजने की मंजूरी मिल गई। भगवान स्वामिनारायण ने कहा है कि मेरे संतों द्वारा मैं प्रगट रहूँगा। भगतजी महाराज गृहस्थ थे, फिर भी शास्त्रीजी महाराज ने उनसे अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना का पाठ पढ़ा। सो, एक गृहस्थ भगवान दे सकते हैं, भगवान का कार्य कर सकते हैं। बस, इसी तरह काकाजी और पप्पाजी दोनों गृहस्थी–श्वेतांबरी थे, लेकिन योगीजी महाराज को युवकों में जो कार्य करना था, वैसा कार्य उन्होंने बहनों में किया। स्वामिनारायण के संतों की मर्यादा है कि स्त्रियों के साथ बोलना-देखना या कोई भी संबंध नहीं रखना। **हम लोग तो नसीबदार बने कि सोनावाला बिल्डिंग में चार मंजिल चढ़ कर जाते थे। वह हीरा-डाइमंड की बहुत बड़ी माइन थी। हमें उस माइन में सिर्फ जाने की नहीं, बल्कि रहने की मंज़ूरी मिल गई…**

गुरुजी की पहचान तो हम लोगों को 1955 से है। वे दौड़-दौड़ कर ताड़देव की सीढ़ियाँ चढ़ते थे और बा के पास जाते थे। बा के तो वे बहुत लाड़ले। गुजराती में बोलते हैं–लाड़कवाया पुत्र। बा चाय पीती थीं, तो उनकी प्लेट में सामने अपना मुंह रख देते थे और साथ में पीते थे। गुरुजी ने बा का इतना प्रेम पाया है। इसी प्रकार आप सबको मालूम है कि काकाजी उनके एड्मिशन के लिए लाइन में खड़े थे। तब स्पष्टवक्ता **दिलीप** ने कहा था– *दादुकाका, आप मेरे एड्मिशन के लिए यहां भले खड़े हैं, पर ऐसा नहीं मानना कि मैं साधु हो जाऊंगा।* काकाजी ने कहा– *ठीक है।* पर, आज देखते हैं कि वे **खुद तो साधु बन गए और अन्यों को भी साधु बना रहे हैं, साधुता दे सकते हैं… संत के जीवन का हेतु ही यही है वे आपको साधुता देने के लिए ही आए हैं।** आपको लेनी है तो ठीक, नहीं लेनी है तो उनमें ताक़त होती है कि आप उनसे मांगोगे ही कि हाँ, मुझे साधुता दे दो… सत्पुरुष द्वारा भगवान ही यह सब कराते हैं।

जब योगीजी महाराज ने 'गुणातीत ज्योत' का भूमिपूजन किया, उस समय उन्होंने आशीर्वाद दिया था– *गुणातीत ज्ञान का संदेशा दुनिया में यहां से फैलेगा।* उस आशीर्वाद को पचास साल हो गए। 'गुणातीत ज्ञान' एक ही स्थान–सिर्फ विद्यानगर गुणातीत ज्योत से ही नहीं, बल्कि योगी परिवार द्वारा समग्र विश्व में फैला है। पप्पाजी, काकाजी और संतों सब देश-विदेश जाते थे। शिकागो में रोज़ सुबह सब मुक्तों को टेलीफोन द्वारा दिनकरभाई का कैसा सान्निध्य और ज्ञान मिलता है। 'प्रथम प्रभु बाद में हमारे स्टॅप्स'–यूं सुबह-सुबह ज्ञान देते हैं। भरतभाई भी ऐसा करते हैं। ज्योति बहन जो आई हैं, वो मल्कानीजी के आग्रह से आई हैं, वर्ना

वे नहीं आने वाली थीं। तो, उन्हें भी थैंक यू– क्योंकि मुझे हाश हुई कि कोई मेरे साथ आ गईं। **हमें किसी का साथ मिलता है, तो पावर भी बहुत आ जाती है और आनंद भी आता है।**

जैसे कि आनंदी दीदी ने इन बहनों की बात करते हुए कहा कि हमारी जमात बढ़ रही है। शायद श्वेत वस्त्र में होती, तो भी कोई बात नहीं थी। लेकिन भरतभाई, ज्योति बहन को काकाजी स्वरूप मानते हैं। तो, ज्योतिबेन ने कहा कि भरतभाई अब बहनों को भगवा ड्रेस दे दें? उन्होंने एकदम मंजूरी दे दी एवं बहनें भी तैयार हो गईं। सो, 3 फरवरी–जब काकाजी को साक्षात्कार हुआ था, उस दिनाँक को बहनों को यह भगवा ड्रेस मिल गया। इन सबको धन्यवाद और स्वागत है। माधुरी बहन तो बहुत छोटी थी, तब 5-6 बहनें राजुभाई के साथ आती थीं। आज देखिये न, हमारे साथ बैठ गई और साथ में बैठी हैं तो भी आनंद है, बहुत आनंद है; क्योंकि हमारी ज्योत-वारसा चालू रहेगा। यह कितनी अच्छी बात है। दुनिया में सभी को अपने वारिसदार की चिंता होती है कि कौन हमारा वारिसदार बनेगा? लेकिन जैसे कि मीरांबाई ने कहा है कि रामरतन धन पायो... वो हमारी दौलत है, जो कभी खूटता नहीं और कोई लूटता भी नहीं। हम भी सबको आसानी से देते रहते हैं, तो भी बढ़ता ही रहता है। बस, ऐसा ही आपका काम अभी है। हमें बताया था कि आपका स्वागत है, मैं तो भूल ही गई। लेकिन, बाद में याद आ गया कि कितना श्रम...! काकाजी तो 1986 में गए–30 साल हो गए। इन बहनों को भरतभाई की कितनी पावर है? काकाजी के स्वरूप भरतभाई ने इन बहनों को प्रभु के नज़दीक पहुंचने के लिए सिन्सियर ट्राई किया और हेमंत वशी उनके साथ हैं। हेमंत वशी कौन हैं मुझे तो मालूम नहीं था। लेकिन एक दिन एक भाई मेहुलभाई व्यास मुझे अपने घर भांडुप ले गए, उन्होंने मुझे बताया कि हेमंतभाई कौन हैं? तब तक मुझे ऐसा था हेमंत वशी बस बहुत अच्छा प्रवचन करता है। उनका जन्मदिन भी 7-7 को आता है, उनके बारे तब कहूँगी। क्योंकि–गुरुजी ने भले समय की मर्यादा नहीं रखी है, लेकिन समय का कितना प्रयोग करना, वह हम पर निर्भर करेगा। वे बेचारे नीचे अकेले बैठे हैं। वे जो कुछ कर रहे हों, पर मुझे तो लगता है कि अकेले हैं। वे हमारे फ्रेंड दिलीपभाई हैं, गुरुजी तो आपके लिए हैं। हमारे लिए तो दिलीप मेहता-डी.डी. मेहता–बस। मेरा स्वभाव पहले से थोड़ा स्ट्रीक्ट था। मैं भगवान भजने वाली बहन थी, वे एक युवक के रूप में ताड़देव आते थे। मैं कभी उनके सामने या किसी को स्माईल देती नहीं थी। एक दिन मैं घनश्याम व प्रफुल्ल को पढ़ा रही थी। बाहर खिड़की में खड़े रह कर वे एकदम मुझे कहने लगे–*हंसाबेन, तमे बहु गुस्सो करो छो।* वे स्पष्ट वक्ता थे। बेशक, मैंने कभी उन पर गुस्सा किया ही नहीं था, फिर भी वे बोले। मैंने वह स्वीकार कर लिया कि हो सकता है, आज नहीं तो भविष्य में शायद मैं गुस्सा करूंगी। लेकिन अब तो नहीं कर सकती क्योंकि डायरेक्ट बोलने का कोई सवाल नहीं है और गुस्सा करने की जरूरत भी नहीं है, क्योंकि अब वे तूफान-शरारत नहीं करते, सयाने हो गए हैं। मेरा भाई सयाना हो गया है।

बचपन में इला भाभी के हसबंड घनश्यामभाई अमीन को टॅान्सिल्स का ऑप्रेशन करवाने के लिए अस्पताल में एडमिट किया था। तब वह 12 साल का था, लेकिन 13 साल लिखे जाने के कारण जेन्ट्स के वॉर्ड में उसे दाख़िल कर दिया। वहां विचित्र सिच्युएशन थी और उसे डर लगता था। तो, घर पर फोन आया कि मुझे बहुत

डर लगता है। मैंने कहा बेटा आज रात रुक जा, सुबह आकर ले जाऊंगी। अगले दिन मैं उसे लेने जा रही थी, तो पप्पाजी ने दिलीपभाई को मेरे साथ भेजा। मैं और दिलीपभाई पहुँचे, तो वो खिड़की पर खड़ा था। मैंने कहा– *बेटा, अपनी झोली लेकर नीचे आ जा, सो वो आ गया।* जैसे ही नीचे आया और दिलीपभाई टेक्सी लेकर आए कि हम तीनों डॉक्टर की मंजूरी के बिना भाग गए। यूँ हम बहुत साथ में रहे हैं। यह तो स्मृति है, लेकिन अब तो गुरुजी का कार्य सुनना है। कैसा कार्य है ? अक्षरज्योति में एक फोटो लगाया है। उसमें काकाजी और गुरुजी बैठे हैं। काकाजी हाथ में जल देते हुए कहते हैं –*तमारे निमित्त थवानुं छे।* बहुत अच्छा सॅन्टेन्स लिखा है - आशीर्वाद है और **सत्पुरुष बिना मांगे जब आशीर्वाद देते हैं, तो वे हमारे भविष्य में आसानी से साकार होते हैं।**

हे महाराज! हे स्वामी! हे काकाजी! हे पप्पाजी! आज हमारी बहनों की जमात बढ़ गई है उसका तो आनंद है, लेकिन हम सबको आप जो देने के लिए आए थे, वो साधुता सुख - शांति - आनंद से हम लोग प्राप्त कर सकें –ऐसी कृपा करना। जय स्वामिनारायण।

प.पू. ज्योति बहन (गुणातीत ज्योत)

...अंतर में खूब आनंद होता है... हम पर भरोसा करके काकाजी - पप्पाजी को जो कार्य करना था, वह देख कर वे बहुत प्रसन्न होते होंगे। हमें मिला ज्ञान व्यर्थ नहीं गया, बल्कि उस पर हम अच्छी तरह अमल करते हैं।

गुरुजी ने सच में बापा का तो सेवन किया ही था, पर काकाजी, पप्पाजी और बा का भी उतना ही सेवन किया। गुरुजी जब दिलीपभाई थे, तब बापा का एक बार म्वांझा से पत्र आया था। उसमें गुरुजी का नाम नहीं था। सो, पप्पाजी ने उसमें साईड में दिलीप नाम लिख दिया। गुरुजी खूब विचक्षण। शाम को चार बजे ऑफिस से आकर पत्र पढ़ कर पहचान गए कि 'दिलीप' शब्द के अक्षर अलग हैं। सो, तुरंत ही कहा – *बाबुकाका, आपने लिखा है न ?* उन्हें अंतर में चोट लगी कि ओहो, बापा की डायरी में मेरा नाम नहीं। घर जाकर परिताप करके खूब रोए। फिर बापा का टरोरो से पत्र आया। उसमें लिखा था – *दिलीप, तेरे आसूँ का रेला टरोरो तक पहुँचा।* इस बात से ख्याल पड़ता है कि **हम यदि सत्पुरुष को याद करें या प्रार्थना करें, तो वे जरूर सुनते हैं।** इस प्रकार **गुरुजी ने मन से जो - जो लड़ाई ली होगी, वह तो ख्याल नहीं। लेकिन, उन्होंने काकाजी और पप्पाजी को सच में ठंडक प्रदान की है।** और... उन्हें जो 'गुणातीत' की शकल मिली है, वो उन्होंने सच में सार्थक किया है। किसी ने उनसे एक बार पूछा भी – *गुरुजी, आपने अपनी मूर्ति यहाँ क्यों पधराई है ?* **गुरुजी एकदम गुणातीतानंदस्वामी जैसे दिखाई देते हैं न ! पर, अब ऐसा एहसास होता है कि कद से दिखने में नहीं, पर गुण भी प्राप्त कर लिए हैं और प्राप्त करके सारे समाज को दिया है।**

आज आनंदी, संतों पर 'थू' करने वाली कि संतों के दर्शन कौन करे ? उसने काकाजी को माना और काकाजी के वचन से गुरुजी में उसे दिव्यभाव हुआ और भीतर से लगाव हुआ। तो, आज सच में प्राप्ति को पा

गई। विचार करें कि साथ में रहना अलग बात है और गुणातीत का ज्ञान प्राप्त करना, गुणातीत होना वह बहुत मुश्किल बात है। आनंदी का विवेक, वाणी, विचार देखें, तो सच में समाज, संतों को पंसद आता है। उसने इस बार की पत्रिका में लिखा था कि हम सत्पुरुष के पास जाते हैं, तो हमारे भीतर मौजूद स्वभाव-प्रकृति को टालने के लिए जाते हैं। वह टालने में उनका जो वचन आए, वे जो कुछ कहें वह हम दिव्यभाव से स्वीकारें, जीएँ और ऐसे सत्पुरुष की प्रसन्नता प्राप्त करें।

अब ये पवई की बहनों की बात करती हूँ। सहज ही ऐसा हुआ कि ये बहनें ड्रेस पहनें तो अच्छा है। उसमें से मुझे याद आया कि बहनों के ड्रेस हेतु काकाजी और पप्पाजी अलग-अलग रंग लेकर गए थे, उसमें से बापा ने हमारा रंग उठा कर एकदम कहा था– *यह रंग रखना।* जो रंग बापा ने पसंद किया हुआ है और ये बहनें तो सफ़ेद पहन कर भगवान ही भजती हैं, उन्हें भगवा ही दे दें तो क्या गलत है? तो, भरतभाई से बात की कि ऐसा विचार आता है। उन्होंने तुरंत कहा–*हाँ, बहन।* मैंने कहा कि अपनी कमीटी में रखना। कमीटी तो वे खुद ही हैं, पर ये बहनों ने भी एक आवाज़ में 'हाँ' कहा, वह बहुत बड़ी बात है। किसी ने भी भरतभाई से यह नहीं कहा कि काकाजी द्वारा हमें दिया गया यह ड्रेस है, तो हम नहीं छोड़ेंगे। **जिस प्रत्यक्ष स्वरूप का हम सेवन करते हैं, उनका जो वचन आया वह इन बहनों ने तुरंत मान लिया**...

काकाजी और पप्पाजी एक कहे जाते हैं, पर दोनों की रीत-रसम अलग थी। लेकिन, उद्देश्य तो सभी को भगवान में जोड़ने का था।

गुरुजी जब यहाँ दिल्ली में रहने के लिए आए, तो कैसी परिस्थिति थी। किराए पर मकान लिया था, किसी के यहाँ से खाना आता था, वो वे खाते थे। और... ऐसी प्रतिकूलता में उन्होंने काकाजी का सच में सेवन किया। उनका सेवन करके उनके गुण प्राप्त कर लिए। काकाजी के गुण तो प्राप्त किए ही, पर 'गुणातीत के भी गुण' प्राप्त किए। तो, आज सारा योगी परिवार उन्हें अपना लगता है। **वे काकाजी से जुड़े हैं, तो उनके संबंध वाले तो अपने लगे।** पर, **सच में उन्होंने गुणातीत स्थिति प्राप्त कर ली। सो, योगी के संबंध वाले सभी मेरे-मेरा समाज, यह उन्होंने करके दिखाया। साझा दिल जिसे कहते हैं न, वह इन्होंने किया!**

गुरुजी से सच में प्रार्थना करनी है कि आपे शून्य-ज़ीरो, वराळ बन कर काकाजी-पप्पाजी की शोभा बढ़ाई है, बढ़ा रहे हो और बढ़ाने वाले हैं। हम सब में भी ऐसे गुण आ जाएं और रंचमात्र-लेशमात्र पराया न रहे। आप भी गुणातीत स्वरूप हैं, तो हमारे लिए प्रार्थना करना कि हम भी ऐसा स्वरहित जीवन जी सकें और योगीबापा, काकाजी, पप्पाजी और बा का वच. अत्यं 26 सिद्ध करने का जो मनोरथ है, ऐसे गुण हम सब में आ जाएँ–ऐसी प्रार्थना।

अभी कोई तूफान नहीं है, लेकिन आज ये तीन बहनों का जब सत्कार हो रहा था, तब इन्द्रदेव भी खूब उमंग से उनका स्वागत करने के लिए आए। देवताओं को भी ऐसा हुआ कि कैसे रह जाएँ? पलभर के लिए आ गए। यह उनकी हाज़िरी ही कही जाए न। अर्थात् **देवी-देवता भी ऐसे दर्शन के लिए इच्छुक होते**

हैं –ऐसे संप, सुहृद्भाव, एकता–स्वरहित जीवन जिया जाता हो, तो जय जयकार हो जाए। ऐसा जय जयकार सभी का हो जाए–ऐसी गुरुजी के प्राकट्य दिन की प्रार्थना।

प.पू. माधुरी बहन (पवई)

...गुरुजी का प्रागट्य दिन है, उन्होंने सत्पुरुष की ओर दृष्टि रख कर काकाजी और पप्पाजी को राजी किया। तो, सब सत्पुरुषों के चरणों में यही प्रार्थना करनी है कि अब तक जो कुछ कर पाए हैं, वो सब बड़े पुरुषों ने ही किया है। अभी भी जो कुछ किया है, वह ये सब बड़ी बहनों ने किया। ज्योतिबेन, हंसा दीदी की हाज़िरी में जो व्रत मिला, तो बस आगे भी वे ही करने वाले हैं और वे ही करेंगे। भरतभाई हमेशा तीन बातें हमें कहते हैं–

एक–सबके प्रति सद्भाव रखो।

दूसरी–आध्यात्मिक सरलता।

ऐसा नहीं कि कोई कहे कि चलो पिक्चर देखने जाएँगे, तो वहां सरल बनें।

तीसरी बात–प्रायश्चित रूप प्रार्थना।

सारे दिन में किसी के प्रति यदि कुछ भी नेगेटिवभाव आए, तो प्रायश्चित् रूप प्रार्थना–उसे टालने के लिए हमें काम आएगी।

ये तीन वाक्य हमें दिए हैं। ऐसे बड़े पुरुष की ओर दृष्टि रख कर हमेशा ये बात नज़र के समक्ष रखें–यही प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. गुरुजी के प्राकट्य पर्व की पूर्व संध्या – 12 मार्च, 2016

पू. गौरव गर्ग (दिल्ली)

...बहनों की सभा में अभी बात हुई थी कि गुरुजी के प्राकट्य दिन निमित्त हमारी दो बहनों को डांस करने का मन था। उनकी बात गुरुजी ने अंतर्यामी रूप से जानी और उनकी इच्छा पूरी करवाई। उसी तरह पिछले हफ़्ते से मेरे मन में था कि गुरुजी के जन्मदिन की सभा में मुझे कुछ बोलना है। बस, घर पर इतना ही सोच कर रह गया और आज मुझे अवसर मिला है कि मैं यहां आकर कुछ बात करूं। मैंने तो सिर्फ सोचा ही था, किसी से कोई बात नहीं की थी। यह भले छोटी-सी बात है, पर मेरे लिए काफी बड़ी है, क्योंकि आज पहली बार मैं अपने दिल की कुछ बातें आप लोगों से शेयर करूंगा। इसे आप इत्तेफाक या गुरुजी के प्रति हमारा विश्वास कह सकते हैं और गुरुजी का हमारे प्रति प्यार कह सकते हैं।

इस गुणातीत परिवार के साथ जुड़े मेरे परिवार को आज करीब साढ़े तीन साल हो गए हैं और वक्त कैसे निकल गया पता नहीं चला। ऐसा नहीं है कि यहां वक्त अच्छा ही गुज़रा है, बुरा वक्त भी आया, हंसी-मज़ाक भी हुआ, मायूस भी हुए। पर, **गुरुजी जिस तरीके से हर सिच्युएशन को हॅन्डल करते हैं, वह देख कर**

मुझे खूब तसल्ली होती है और सीखने को मिला। पहले के मुकाबले मेरे अंदर अब इतनी पेशंस आई है कि चाहे बहुत बड़ी खुशी हो या बहुत बड़ा गम हो, उसे बड़े धैर्य से संभलते-संभालते फेस करते हैं। मतलब एटलिस्ट आई ट्राई टु फेस धी चेलेंज ऑफ लाइफ वेरी नॉर्मली आफ्टर मिटिंग गुरुजी एण्ड ऑल धी मेम्बर्स ऑफ धिस गुणातीत परिवार। तो, एक ये बड़ा मेजर चेइन्ज मेरे अंदर आया है।

बिज़नेस के ज़रिए गुरुजी से मिलने के लिए हम यहां आए थे, जब हमें पता चला कि गुरुजी मंदिर के सदस्यों के साथ मसूरी जाना चाहते हैं। पहले मुझे यह पता नहीं था कि कौन जाना चाहता है ? हमें प्रमीतभाई के द्वारा यहां बुलाया गया और जब हम यहां आए, तो मेरी पहली मुलाकात गुरुजी से हुई। मैं उनके सामने बैठ कर होटल के रेट नेगोशिएट कर रहा था। उस समय यह एहसास नहीं था कि मैं किसके सामने बैठ कर होटल के रेट नेगोशिएट कर रहा हूँ। पर, जब मैंने यह मंदिर छोड़ा, तब तक में मेरी भावना बदल चुकी थी। मैं मंदिर से सीधा ऑफिस गया और वहाँ जाकर से यह सारा वाक्या अपने पिताजी को डिस्क्राइब करके डिस्कस किया। मैंने कहा कि आप एक बार मिलने चलो। तो, अगले दिन मेरे पिताजी के साथ मंदिर आया और गुरुजी के साथ बैठे। जब हम बाहर निकले, तो पिताजी ने बस एक ही बात कही थी–
बेटा, गुरुजी को होटल ले ही जाएँगे। चाहे वे पैसे दें, ना दें, कम दें-ज़्यादा दें। तूने उनके चरण होटल में डलवाने हैं।

बात वहाँ खत्म हो गई और मैंने कहा – *गुरुजी आपको चलना है।* मसूरी में 5 दिन गुरुजी के साथ रहने का अवसर मिला। यूज़्यली कोई ग्रुप जाता हो, तो उस ग्रुप के साथ हम मसूरी नहीं जाते। पर, क्योंकि इनीशियली एक लिंक हो गया था, तो हम गए। मैं, पिताजी और मेरे घर से काफी लोग गए। आज साढ़े तीन साल बाद गिनती के हम चार या पांच जने इस मंदिर के साथ जुड़े हुए हैं, उसमें से मैं एक हूँ।

मैं अपने आपको काफी खुशनसीब मानता हूँ। जब गुरुजी 5 दिन के बाद दिल्ली के लिए रवाना हो रहे थे, मैंने उस समय भी यही बात उनसे कही थी कि गुरुजी 5 दिन तो मैं आपके साथ यहां पर रहा, आपके साथ वक्त बिताया; अब आपका आशीर्वाद रहे, तो जिंदगीभर आगे मैं आपके दर्शन करता रहूं और आपका लाभ उठाता रहूं, आपसे मिलता रहूं।

इस गुणातीत परिवार के साथ जुड़े रहने में मेरे पिताजी, मेरी वाइफ और मेरे बच्चों ने मुझे बड़ा सहयोग दिया। बच्चों का स्कूल में नया एड्मिशन होता है, तो फाधर उसे स्कूल लेकर जाते हैं और प्रिंसिपल से मीटिंग होती है। टीचर्स से या स्टूडंट्स से मीटिंग नहीं होती, सिर्फ प्रिंसिपल से मीटिंग होती है। इसी तरह जिस दिन मेरे फाधर की यहां के प्रिंसिपल से मीटिंग हुई, वो उनके दिल में उतर गए और उसके बाद वे एक दिन, दो दिन, हफ्ते में दो दिन, महीने में चार दिन मेरे साथ आए, जैसे नए बच्चे को छोड़ने फाधर आते हैं, ताकि वह स्कूल में कर्म्फटेबल हो जाए। यूं तब तक वे रॅग्युलर आते रहे, जब तक कि मैं कर्म्फटेबल नहीं हो गया और फिर उन्होंने आना थोड़ा-सा कम कर दिया है। पर, आज यहां के प्रिंसिपल ने फोन करके मेरे फाधर से कहा – *क्या मैं तुम्हें इनवाइट करने के लिए घर पर आऊं ?* सो, उन्होंने कहा है – *नहीं गुरुजी, कल मैं पक्का*

यहां आऊंगा। पहले कई बार ऐसा भी हुआ है कि जब मैं यहां काफी आता था, तो पापा या सुचिका को भी बताया नहीं होता था कि मैं मंदिर जा रहा हूँ। धीरे-धीरे सुचिका की भी यहां इन्वॉल्मेंट हुई, उसने भी आना शुरू किया। उसे भी मन की काफी तसल्ली मिली। हर छोटी बात वो आनंदी दीदी से बड़े खुल कर डिस्कस कर लेती है। उसे रीलीफ भी मिलता है या कुछ रास्ता दिखता है, जिससे वो आगे बढ़ती है और अब तो ऐसा है कि मैं मंदिर कम आता हूँ और सुचिका मंदिर ज़्यादा आ जाती है।

...मैं यही कहना चाहता हूँ कि **प.पू. गुरुजी को मैं खूब मानता हूँ और उनके साथ बिताए हर पल को याद रखता हूँ और समझने की कोशिश करता हूँ। जिन तरीकों से वे इतने बड़े परिवार को एकत्र करके संभाल करके चला रहे हैं, उनके जो प्रिंसिपल्स हैं, उसमें से अगर मैं एक परसेंट या कुछ अपने अंदर डाल सकूं, तो एटलिस्ट आई कॅन मॅनेज माई ओन फॅमिली** और... धेट आई ट्राई टु डू। मेरे अंदर फॅमिली को लेकर, पैरेंट्स के साथ या बच्चों को लेकर काफी पोजेटिव चेइन्ज आया है। कई बार मसूरी 15-15 दिन रहता हूँ, तो गुरुजी से बात तक नहीं होती... पर गुरुजी का फोन आ जाता है कि आप इंडिया में हो या कहीं बाहर हो। मैं कहता हूँ– नहीं गुरुजी, इंडिया में ही-मसूरी में हैं और जैसे ही दिल्ली आएंगे आपसे मुलाकात करेंगे...

पू. अमृतभाई पटेल साहेब (अमदावाद)

...मैं 1979 में गुरुजी के संपर्क में आया था, जब ए-103 में मंदिर था। तब कई बार दर्शन करने के लिए आता था। तब मेरा परिचय ऐसा नहीं था कि मैं मेरी इस प्रकार कोई सेवा दे सकूं। फिर मैंने गुरुजी से बताया कि मैं ऐसा काम करता हूँ, तो कोई सेवा करने का मौका मुझे देना। उसके बाद तो फंक्शन्स में काम करने का गुरुजी ने मुझे मौका दिया और गुरुजी ने मुझ पर इतना विश्वास किया, जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। गुरुजी ने कह दिया– *पटेल तुम जो करोगे, वह मेरे लिए ठीक है।* उनका ऐसा विश्वास जीतना वो मेरे लिए बहुत बड़ी बात थी।

अभी अमदावाद में मेरी एक एग्ज़ीबीशन थी। इससे एक ही सप्ताह पहले गुरुजी अमदावाद आए हुए थे और मैं अपनी एग्ज़ीबीशन का कार्ड देने के लिए गया कि मुझे आशीर्वाद देना और फलां दिन उद्घाटन है। गुरुजी ने इन्वीटेशन पढ़ा और बोले– *मैं यह देखने के लिए आऊंगा।* यह सुन कर मेरी खुशी का कोई पार नहीं रहा। एग्ज़ीबीशन एक सप्ताह बाद ही था। पर, मेरे लिए बहुत बड़ी बात थी कि गुरुजी एग्ज़ीबीशन देखने के लिए आए और मैं उन्हें गॅलरी में ले गया। तब **गुरुजी** ने जो एक बात बोली, वो मेरे लिए बहुत मायने थी। वे बोले–

इसमें मुझे ज़्यादा कुछ समझ नहीं आता; पर, ये चित्र पटेल के बनाए हुए हैं और पटेल मेरा है, इसलिए मैं आज आया हूँ।

मैं इन शब्दों से इतना गद्‌गद् हो गया था कि बस इतना ही कहूँगा – मेरे पास शब्द नहीं... सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. दिनकर अंकल (शिकागो)

...आज गुरुजी के प्रागट्य पर्व की पूर्व संध्या पर सबके बहुत खूब दर्शन हो रहे हैं। आज हमने ऐसा सुना कि गुरुजी जब भी सब हरिभक्तों को देखते हैं, तो बहुत आनंद में लगते हैं। मगर हम जब भी इधर आते हैं, तब गुरुजी को आनंद में ही देखते हैं। तो, गुरुजी का आनंद तो हमेशा ही ऊंचा है। साथ में आज बहुत अच्छा प्रसंग भी हो गया। पवई से आईं भगवाधारी बहनों का सत्कार हुआ। हम तो शांति से हॉल में बैठे थे, लेकिन हमें कहा गया कि आप भी बाहर आइए। बाहर सीढ़ियों पर देखा तो फूल की पंखुड़ियों से स्वागत हो रहा था। इतने में तेज़ हवा के कारण वे पंखुड़ियाँ सीधी ऊपर आ रही थीं। वो भी एक बहुत अच्छी स्मृति हो गई।

आज अक्षरविहारीस्वामिजी संतमंडल के साथ पधारे, सब हरिभक्त और बहनें भी आई हैं। कल रात हम एक-डेढ़ बजे आए, तब भी गुरुजी ऐसे आनंद में और फ्रेश थे कि बस आनंद करो, भई आनंद करो। आज ऐसे मौके पर हम इस भावना से इकट्ठे हो रहे हैं कि गुणातीत समाज की हमारी यह पीढ़ी है–यह हमारा एक कुटुंब है।

काकाजी भी इस बात को बहुत बार समझाते थे कि व्यवहार में हमारे सगे-संबंधी हैं, उनसे हम बहुत अच्छी तरह से मिलते-जुलते हैं; शादी या कोई प्रसंग होता है, तो कितनी भी दूर–चाहे अमेरिका हो, तो भी दौड़ कर इंडिया तक आ जाते हैं या कहीं भी हों, तो दौड़ कर जाते हैं। 'पुरुषोत्तम बोल्या प्रीत्ये' पुस्तक में पढ़ा है कि भगवान स्वामिनारायण यही बात बहुत बार दोहराते– *माया के एटॅच्मेंट-बंधन से पर होने के लिए–जैसा जगत का संबंध है, वैसा या उससे भी ज़्यादा भगवान, उनके भक्तों व संतों से संबंध बनाओ।*

हमें ऐसा संबंध करने की जन्मों से आदत है, इसलिए वो सहज हो जाएगा। लेकिन, माया-जगत के संबंध की वो आदत हमें बंधनरूप है, जो हमें बार-बार जन्म-मरण के चक्कर में डालती है। वही की वही आदत यदि भगवान और उनके भक्तों व संतों के लिए प्रयोग में लें, तो हमारा टोटल परिवर्तन हो जाएगा। वो बात हमें अक्षरधाम का अधिकारी बनाएगी।

अक्षरधाम का अधिकारी बनना सामान्य चीज़ नहीं है। आज से लाखों-सालों जन्मों से हमारे ऋषि-मुनियों और सबने बहुत-बहुत प्रयास किए हैं, मगर सक्सेस नहीं मिली। क्योंकि उनमें अपना अहंकार-अपनापन रह जाता ही है और हम फंस जाते हैं। महाराज ने गुणातीतानंदस्वामी को साथ में लाकर गुणातीत सत्पुरुष द्वारा यह एक अनोखा रास्ता हमें दिया है।

काकाजी द्वारा 1979 में पंचगीनी शिविर में दिए आशीर्वाद में मैंने पढ़ा हैं कि स्वामिनारायण भगवान के समय में बड़े-बड़े संत थे। वे बहुत एडवांस-आगे बढ़े हुए थे, एलीवेटेड थे। पर, भगवान को जैसा चाहिए, वैसा संबंध वे नहीं कर सके थे। गुणातीतानंदस्वामी के साथ जो संबंध करना चाहिए, उसमें थोड़ी-सी, एकाध या पोईन्ट ज़ीरो-ज़ीरो-ज़ीरो वन परसेंट जितनी भी कमी रह जाती थी।

काकाजी ने एक बात बहुत अच्छी समझाई कि बहुत बड़े संत गुणातीतानंदस्वामी और गोपालानंदस्वामी में से गोपालानंदस्वामी को दोनों देश की गद्दी सौंपी थी। स्वामिनारायण भगवान ने उन्हें कहा – *आप दोनों देश के कॉन्टेक्ट में रहना और व्यवहार संभालना।* साथ में यह भी कहा था – *साल में एक महीना सब जूनागढ़*

जाना और... सब संत-हरिभक्त जाते भी थे। बड़े-बड़े संतों में गोपालानंदस्वामी इतने बड़े संत होते हुए भी वे सिंसियरली वहाँ जाते थे। एक साल वे नहीं जा पाए हों, तो अगले साल दो महीने जाकर रहते। कितनी सिंसियारिटी होगी! भगवान की आज्ञापालन का उनका निशान कितना पक्का होगा! फिर भी काकाजी बताते– *जब गोपालानंदस्वामी जूनागढ़ जाते थे, तब गुणातीतानंदस्वामी इतने 'दास के दास'-सेवक के सेवक बन जाते थे कि गोपालानंदस्वामी वहाँ कथावार्ता का लाभ देते थे!* काकाजी कहते – *लखपति, करोड़पति को समझाता है।* काकाजी ने यह बहुत बड़ी रहस्य की बात बताई है। महाराज जो करवाना चाहते थे, वह दासभाव से करना था। लेकिन, काकाजी ने यह बताया कि वे कर नहीं सके; पर, उनके दो शिष्य–भगतजी महाराज और जागास्वामी ने गुणातीतानंदस्वामी के मुताबिक वर्त कर उन्हें राज़ी कर लिया। यह बहुत रहस्य की बात है। काकाजी यह इसलिए समझाना चाहते हैं कि थोड़ा-सा भी हमारे अंदर 'अहं' का कुछ आयोटा रहेगा, तो यह बात नहीं बन पाएगी। इसके लिए तो– ***'मैं कुछ नहीं हूँ। मैं ज़ीरो-दास का दास, सेवक का सेवक हूँ'* –इस तरह से हमारी शुरूआत होगी, तभी हमारी फाउंडेशन अच्छी रहेगी। तभी हमारी इमारत मज़बूत बनेगी और गुरुजी आज यही सिखा रहे हैं।**

आज हमारी तीन बहनों ने यहाँ नृत्य द्वारा अपनी भावना प्रगट की। हमारी परछाईं दीदी, जो गुरुजी को राज़ी करने की भावना से अपना भाव दिखा रही थी, उसे देख कर मेरी आंख में तो आंसू भी आ गए कि महाराज हमसे जो करवाना चाहते हैं कि मैं कुछ नहीं हूँ - मैं दास का दास, सेवक का सेवक हूँ, उस भावना से वो कर रही थी। इस भाव में आकर मेरी आंखों में से भी रीयल आंसू आ गए कि यही हमें करना है, हमें ऐसा जीना है। मगर तकलीफ़ यह है कि हम मान लेते हैं कि 'मैं कुछ हूँ–भई, मैं कुछ हूँ' और यह 'कुछ हूँ' वही 'कुछ-कुछ' निकालना है।

तो गुरुजी, आपके चरणों में आज यही प्रार्थना कि हम सबके लिए आप फिर से दो मिनट धुन करें या और कुछ भी कराओ, मगर वो 'हूँ-हूँ' निकल जाए और 'दास के दास-सेवक के सेवक' बनें; जय स्वामिनारायण।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

... दिनकरभाई ने अभी-अभी बहुत गहन बात बता दी। मेरे ख्याल से तो हम सब लोगों को तो यह समझ में भी नहीं आई होगी। बहुत ऊंची बात उन्होंने कह दी, पर उसका निष्कर्ष उन्होंने जो बताया कि 'मैं कुछ नहीं हूँ, ज़ीरो हूँ'– यह बात हमें, साधकों को एडोप्ट करने जैसी है कि जितना हो सके इतना समझें कि हम, हम नहीं हैं, हम गुरुजी के हैं; गुरुजी की आज्ञा का पालन करना है। जैसे-जैसे हम उनकी आज्ञा का पालन करेंगे, वैसे-वैसे उनकी प्रसन्नता हम पर होगी और प्राप्ति सिर्फ प्रसन्नता से ही हो सकती है। **हम कुछ भी करें, पर खुद से तो नहीं होगा, उनकी कृपा चाहिए ही चाहिए।**

गुरुजी का जन्मदिन तो हमारे लिए बहुत आनंद, खुशी और गर्व की बात है। हमें गर्व इस बात का है कि सारी दुनिया में कितने लोग हैं या दिल्ली में भी कितने जने हैं, लेकिन सबको गुरुजी का दर्शन प्राप्त नहीं हैं। इस बारे में किसी को कुछ मालूम भी नहीं है। पर, हम सब जो यहां बैठे हैं, वे सब भाग्यशाली हैं कि हम गुरुजी

को जानते हैं। हमारा भाग्य-पुण्य बहुत है, तब उन्हें जानते हैं। पर, उससे भी आगे दूसरी बात यह है कि सिर्फ जानने से कुछ नहीं होता। आज मोदी साहब को हम सब लोग जानते हैं। छोटा लड़का भी कहेगा कि हाँ, मालूम है। लेकिन जब तक मोदी साहब हमें नहीं पहचानेंगे, तब तक कुछ नहीं होगा। इसी तरह, 'हम कुछ नहीं हैं - कुछ नहीं हैं', ऐसा दिल की सच्चाई से सोचते-सोचते जब गुरुजी की आज्ञा का पालन करते जाएँगे, तब गुरुजी मानेंगे कि हमने उन्हें पहचाना है। एक बार गुणातीतानंदस्वामी रात को बाथरूम जाने के लिए उठे, तब रात के अंधेरे में एक भक्त ने उनके पांव पकड़े। स्वामी ने पूछा– *कौन?* वो दिल की सच्चाई से बोला –*मैं आपका सेवक हूँ।* इतनी-सी बात पर स्वामी ने कह दिया– *तू मारो? जा हूँ तारो!*
हमें इतना ही करना है कि गुरुजी हमें कहें – *जा तू मेरा।* बस, अपना काम हो गया, सब कुछ हो गया।

तो, गुरुजी के जन्मदिन पर हमें यह बात पक्की करनी है कि गुरुजी हमें कहें– *जा तू मारो।* वैसे तो मैंने अभी कहा है, तो गुरुजी अभी सभा में कह ही देंगे कि तुम सब मेरे हो। फिर भी सोचने की बात यह है कि **हम सब उनके हैं फिर भी हम इनके नहीं हैं। हम हन्ड्रेड परसेन्ट उनके होते, तो जैसे कहते हैं कि पारस को छूने से लोहा पारस हो जाता है, ऐसे हम हो जाते।** ठीक है, हम लोग सब इनके हैं, इनकी आज्ञा का पालन-सब कुछ करते हैं, मगर उनके दिल से-अंतर से बोलने की यह बात है। गुरुजी तो बोलेंगे कि तुम हमारे हो। यदि सच में उनके होते तो जैसे स्नेहलस्वामी कहते हैं कि पन्ना फट् से पलट जाएगा। आज और तो कुछ कहना नहीं है... आज ज़्यादा कुछ कहना नहीं है।

आप सबके लिए हम अंतर से–हृदय से प्रार्थना करते हैं कि आप सब जल्द से जल्द गुरुजी की लिस्ट में आ जाएँ। काकाजी कहते थे कि एक लिस्ट बाहर की होती है और दूसरी जेब की लिस्ट होती है। **उनकी जेब की लिस्ट में हमारा नाम एन्टर हो जाए-दाख़िल हो जाए**, ऐसी हम आप सबके लिए प्रार्थना करते हैं...

प.पू. गुरुजी

...कल मुंबई से वशीभाई का पहले कुछ ऐसा मॅसेज आया कि अभी हम एयरक्राफ्ट में नहीं बैठे, फ्लाईट थोड़ी डिले है। लेकिन, बाद में मॅसेज आया कि दिनकरभाई और वशी प्लेन चूक गए। कई बार-कई चीज़ें थोड़े समय या घंटों पहले मुझे कही हो, तो वो मैं भूल जाता हूँ। सो मैंने माना कि दोनों कर्मयोगी हैं, तो ऑफिस से आते हुए ट्रॉफिक में फंस गए होंगे, इसलिए चूक गए होंगे। पर, मुझे याद आया कि अभी फोन पर तो ऐसा बताया था कि क्राफ्ट में बैठे नहीं हैं, मतलब एयरपोर्ट पर तो थे। एयरपोर्ट पर होते हुए ये कैसे चूक गए? फिर खूब पूछने-करने पर पता चला कि दिनकरभाई 'स्वामी की बातें' पढ़ रहे थे और वशी के साथ डिस्कस करते हुए दोनों उसमें इतने मगन हो गए कि इन्हें समय का ख्याल नहीं रहा। इस प्रसंग से मुझे बापा की एक बात एकदम याद आ गई; शायद महंतस्वामी ने की थी। बापा शास्त्रीजी महाराज के साथ ट्रेन से कहीं जा रहे थे, बराबर के कम्पार्टमेंट में बैठे कुछ मुसलमान ताश खेल रहे थे। थोड़ी देर के बाद शोर-शराबा हुआ। आसपास वालों से पूछा– *भई, क्या हो गया?* पता चला कि वे लोग ताश खेलने में इतने मशगूल थे कि जहां उतरना था, वो स्टेशन चूक गए।

सुन कर **बापा** एकदम बोले– ***ऐसा इश्क हमें भजन और कथावार्ता का होना चाहिए।***
प्लेन चूकने की यह बात से मुझे ऐसा हुआ कि बापा इन दोनों पर कितने ख़ुश हो गए होंगे कि ऐसा इश्क इन्हें हुआ है।

...सुबह सारी पंचगीनी की बातें चल रही थीं। वशी ने एक बात की कि काकाजी ने '**चाबी**' और '**कूंची**' का डिफरंस समझाया है। फिर हम किसी दूसरी डिस्कशन में चले गए और वो बात अधूरी-सी रह गई। मेरे दिमाग़ में वो बात बैठी नहीं थी कि 'चाबी' और 'कूंची' में क्या फर्क है? चाबी से भी ताला खुलेगा और कूंची से भी खुलेगा। और... मेरा आप जानते हो कि मैं आपके साथ बातचीत करता रहूंगा, पर मेरी एक थिंकिंग मोटर अंदर चलती ही रहती है। मैं वो कूंची और चाबी की उधेड़बुन में रहा कि 'चाबी' और 'कूंची' में फर्क क्या? तब मुझे टाइम नहीं मिला और वशी से मिलना नहीं हुआ। वे सोने चले गए और मैं भी सोने चला गया।

ऐसी कोई बात होती है तो अकसर काकाजी सपने में आकर समाधान दे जाते हैं। आज क्या हुआ कि पप्पाजी सपने में आए। ताड़देव में वही पुराने ढंग से धोती पहनी हुई और सफ़ेद झबला पहना था। मैं दाख़िल हो ही रहा था कि पप्पाजी टेलीफोन वाले रुम में जाने के लिए हॉल में से आ रहे थे।
मुझे बोले– *बोलो, जोनी?* वे कई बार 'जोनी' कहते थे।
मैंने कहा– *पप्पा, 'चाबी' और 'कूंची' में क्या फर्क?*
पप्पाजी ने कहा– *तू गणित पढ़ा था या नहीं?*
मैंने कहा– *हाँ।*
वे बोले– *तब तू कूंचीयाँ नहीं सीखा?*
फिर बोले– *तू ख़ुद भी कितनी बार कहता है–जितने रुपये का मन, उतने आने का ढाई सेर। यह कूंजी कहीं भी लगे। मास्टर की–सब्जी लेने जाओ, तब भी लगे और अनाज लेने जाओ तो भी लगे।*
'चाबी' किसी एक ताले के लिए होती है, वो हर एक ताले को नहीं लगती।
फिर बोले– *वैसे तो ऐसा मानते हो कि तू और तेरा काका बहुत बुद्धिशाली।* इतनी देर में आँख खुल गई।

...दिव्यांग भले माने कि अभी जो भजन गाया, वो उसने बनाया है; पर सच में महाराज ने बनवाया है। हमारी पसंद का राग और ज्ञान महाराज का। इतना सारा समन्वय कर दें। उसका साक्ष्य बताता हूँ। **बापा** ने एक बार मुझसे कहा था– ***हमें 'मगन' रहना।* इस भजन में 'मगन' शब्द है!**

...कथावार्ता की डिमांड– इच्छा सभी की होती है, स्वाभाविक है। लेकिन, अब कोई नया ज्ञान लेना बाकी नहीं है। **छोटे बच्चे को भी ख्याल पड़ने लगा है कि क्या करना है।** जितना ज्ञान हमने पाया है, **अब हम उन बातों पर चलें - बरतने ही लगें।** भले हम बोलते - करते हैं; लेकिन **हम हक़ीक़त में वर्तते नहीं हैं, इसलिए अनुभव होता नहीं।** हम भले नहीं वर्तेंगे, तो महाराज किसी भी तरह उनका अपना कार्य तो करते ही हैं। सो, जल्दी से हम ऐसे तैयार हो जाएँ कि महाराज को कोई शस्त्र उठाना ना पड़े या अन्य पात्र ढूंढने न पड़ें...

a a a

प.पू. गुरुजी के प्राकट्य पर्व की प्रातः सभा – 13 मार्च, 2016

पू. चिंतन अग्रवाल (दिल्ली)

...गुरुजी के साथ हम सभी के एक्सपीरियन्सिज़ हैं। सबके अलग-अलग हैं, क्लोज़ टु हार्ट हैं... जैसे राकेशभाई ने बताया, डॅडी ने मौके की सेवा लूटी। उस वक्त उन्होंने जो आशीर्वाद पाए, शायद उसी के कारण आज हम गुरुजी के साथ हैं, उन्होंने हमें अपने पास रखा है। गुरुजी थैंक यू सो मच। एक छोटी-सी कविता के थ्रू गुरुजी को अपनी भावना पहुंचाने की कोशिश कर रहा हूँ...

कहां से मैं करूं शुरु? वो भगवान नहीं, वो हैं **मेरे गुरु**।
प्यार की वर्षा करते, मुझ पर हर ऋतु, वो भगवान नहीं, वो हैं **मेरे गुरु।**
पकड़ा है मेरा हाथ, रखा है अपने साथ, सुनते हैं मेरी हर बात, चाहे दिन हो या रात।
शीघ्रता आपने हमेशा है दिखाई, मुझसे पहले आपको याद है मेरी आई।
इतनी कड़ी है आपके प्यार की चौकसाई, एक-एक बात आपने मुझे खोल-खोल कर बताई।
हूँ कितनी ही चीज़ों को अकसर मैं भूल जाता, धन्यवाद आपका, उन सबके लिए आपका मॅसेज है आता।
आपने मेरे हर दिन और हर स्वभाव पर किया है लगातार परिश्रम, टल जाएं प्रारब्ध मेरे और पा लूं प्रभु इसी जन्म में।
आपकी हर क्रिया में इतना है परफेक्शन, चाहता हूँ कि मुझे भी हो जाए आपका क्रॉनिक इन्फेक्शन।
मेरा भी परिवार है छोटा-सा, मगर कुटुंबभाव से कैसे जीना रहती आपको फ़िकर।
'एकता' में है शक्ति, आपने कितनी बार दर्शाया, पर अज्ञानता है मेरी, कभी समझा-कभी नहीं समझ पाया।
'सुहृद्भाव' से आपने है बहुत सशक्त जिया, पर मैंने अपने हिसाब से कभी किया-कभी नहीं किया।
आप रखते हो कुटुंब के हर सदस्य को संभाल के, क्यों नहीं हम आपको कर सकते दीर्घायु प्यार से।
मेरे साथ सबकी तीव्र इच्छा है यही, मैं हूँ न हूँ, आप रहो हमेशा यहीं।
मन ही मन मैं आप पर हूँ मरता, पर आज भी आपसे थोड़ा हूँ डरता।
करना चाहता हूँ आपसे बातें मैं कई, पर लगता है, ये बात या ये वक्त नहीं सही।
फिर भी मैं बहुत खुश हूँ कि मुझे आप हो मिले, कोटि धन्यवाद आपका कि आप मुझे अपने साथ लेकर चले।
जैसे काकाजी को याद कर रहते हो आप पल-पल, ध्यान रहे मुझे भी आपकी मूर्ति हर पल।
विनती करता हूँ मैं फिर से आज, कस कर पकड़े रखना मेरा हाथ।
गल्तियां मेरी हर पल करी हैं आपने माफ़, भगवान होते अगर, तो शायद छोड़ देते मेरा साथ।
आपकी आंख में देखा है मैंने मेरे लिए आंसू, प्यार की वर्षा मुझ पर करते हर ऋतु।
धन्यवाद आपको... आप भगवान नहीं, आप हो **मेरे गुरु**, आप भगवान नहीं, आप हो **मेरे गुरु**।
सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

पू. विपुल मामा (अमदावाद)

...26 जनवरी की ठंड में गुरुजी के न्यौते पर, शायद उनका दिल रखने के लिए आया था कि गुरुजी का दिल कौन तोड़े ? पर, इस बार बात अलग थी। उन्होंने न्यौता दिया, तो दिल उनके बिना रह नहीं पाया। तो, अब गुरुजी का दिल रखने के लिए नहीं आया। फॅमिली में कुछ वजह भी थी, जिसके कारण मैं न आ सकूं। इस बात का एक्सक्यूज़ नहीं, रीज़न हो सकता था। गुरुजी से कह सकता था कि ऐसा है तो शायद मैं न आऊं। पर, **वजह के सामने वजूद जीता। गुरुजी के प्रति हमारा जो प्यार है, वो वजूद जीता है।**

ज़्यादातर लोग फिलोसॉफी अधिक करते हैं... यहाँ सत्संग की जो प्रणाली है, उसमें मैंने देखा है कि **गुरुजी फिलोसॉफी से ज़्यादा फिलोसॉफी विथ फिलींग करते हैं। यह कॉम्बीनेशन बहुत रेयर होता है। और... मेरे हिसाब से इंसान को फिलींग की ही जरूरत है।** ज्ञान से क्या ले पाएगा ? ज्ञान तो शायद किताबों में मिल जाता, लेकिन **यह कौटुम्बिक भावना जो गुरुजी ने परोसी है, वह अमूल्य है। मेरे हिसाब से कोहिनूर हीरा है।**

दूसरी बात, मैंने यह एक्सीपीरियेन्स किया कि **फलों में** देखो तो **आम राजा** है। आप सेब दो या तीन खा लोगे, फिर रुक जाओगे। केले पाँच तक खाकर आप रुक जाओगे, आम एक ऐसा फल है कि आप शायद नहीं रोक पाओगे। आपको ब्रेक मारनी पड़ेगी। **गुरुजी का प्यार बिल्कुल 'आम' की तरह है। उनकी हमारे प्रति मोहब्बत आम की तरह है।** और... एक ऐसी चीज़ परमात्मा ने बनाई है शहद। शहद आपके मुंह में हो, उस वक्त आप सोचना कि इससे ज़्यादा मीठा क्या हो सकता है ? शायद आपको कोई विकल्प नहीं मिलेगा। **'दीदी' का वात्सल्य 'शहद' की तरह है। उनका सान्निध्य-उनका हमारे प्रति का प्यार शहद की मिठास की तरह है...**

पहली बार 26 तारीख को काकाजी के हुकुम से मैं आ पाया था। तब 'सनेड़ा' निमित्त उन्होंने जो प्यार दिया, उसका नशा अभी तक चढ़ा हुआ है। होश में हूँ, लेकिन अभी भी ऐसा ही होता है कि पिया करो। गुरुजी उसे रोकें नहीं, पूरा जम के पीना है। भांग नहीं पी, लेकिन ये पीएँगे...

पू. स्नेहलस्वामिजी (सांकरदा)

...कल अक्षरविहारीस्वामिजी ने कहा था कि हम स्वरूप को ढूंढने के लिए नहीं निकले थे, लेकिन कृपा से मिल गए हैं। इसी तरह **जो भी होगा उनकी कृपा से ही होगा...**

मेरे जीवन में गुरुजी ने खूब काम किया है। 55 वर्ष पहले की बात करता हूँ। काकाजी-पप्पाजी के जोग से मैंने ठान लिया था कि मुझे साधु बनना है। घर से निकल कर नौ मई को मैं गढ्डा पहुँचा था। दस की सुबह 5 बजे मैं, धीरूभाई और विपिनभाई घेला नदी में स्नान करने के लिए जा रहे थे। वहाँ उन्हें सफेद वस्त्रधारी दो पार्षद मिले। उनके मुखारविंद पर इतना तेज था कि मैं भूल नहीं सकता। धीरूभाई ने उनसे पूछा– *योगीजी महाराज ने कितनों को साधु बनाया है ?* उनमें से एक पार्षद ने कहा– *48 बनाए हैं, 49 और 50 बाकी है।* ऐसा कह कर उन्होंने मेरी ओर देखा। मुझे अंतर में एहसास हुआ कि मेरा नंबर यदि 49 में लग जाए ?

...मैंने धीरुभाई से तुरंत कहा– *मुझे बापा के पास ले चलो।* धीरुभाई मुझे बापा के पास ले गए। मैंने बापा से कहा – *मुझे सब कुछ मंजूर है, पर मुझे 49वां नंबर लगाना है।* बापा ने कहा– *जाओ, बाबुभाई साहेब के पास और उनसे कहना कि योगीजी महाराज ने मुझे मंजूरी दी है।* मैं पप्पाजी के पास गया, तो उनके मुख पर इतना आनंद - इतना आनंद था कि आज भी मैं भुला नहीं पाया हूँ। पप्पाजी ने कंकु का टीका करके कहा– *पड़यो रहजे, कपड़ा उतारिश नहीं। एकांतिक धर्म तने हुं सिद्ध करावीश।* मुंडन करा कर बापा के पास गया, तो मेरा नंबर 49 था।

गुरुजी ने मेरे जीवन में इतना बड़ा काम किया है कि वो मैं कभी भूल नहीं सकता। उन्होंने 49 की बात की थी... योगीजी महाराज ने गुरुजी में प्रवेश करके, मेरे सामने ऐसे देखा कि ये छोकरा (लड़का) साधु बने ऐसा है। गुरुजी को याद हो या नहीं, लेकिन मुझे उनकी मूर्ति याद है...

प.पू. गुरुजी का 79वाँ प्राकट्योत्सव – 13 मार्च, 2016

पू. वैभव गोयल (पानीपत)

...मेरी सोच ने मुझे इतना रियलाइज़ कराया है कि जो कुछ भी मैं हूँ–आइ ओ एवरीथिंग टु धिस मंदिर, गुरुजी एन्ड दीदी। जो चीज़ मुझे डिफाइन करती है, वो है इस मंदिर और गुरुजी से जुड़े होना।

...हर इन्डिवीड्युअल के लिए गॉड की एक अपनी डेफीनेशन है, एक परसेप्शन है। किसी के लिए कुछ है, तो किसी के लिए कुछ है। वैसे मैं सोचता हूँ कि मेरे लिए वॉट इज़ गॉड टू मी? हमारी लाइफ में बहुत सारे रिलेशन्स हैं–बीइंग सन, बीइंग पॅरन्ट, बीइंस ब्रधर-सिस्टर। हम वो सारे रिलेशनशिप्स अच्छे से नहीं निभा पाते हैं। मैं जितनी मरजी कोशिश करूं, कहीं न कहीं कुछ चूक हो जाती है, कहीं न कहीं कुछ फॉल्ट हो जाता है। अगर मैं उस टमर्स से सोचूं, तो गुरुजी तो कितने सारे रिलेशनशिप्स निभाते हैं। मतलब मैं तो अकेला एक इंडीविड्युअल हूँ, पर यहां पर कितनी सारी फॅमिलीज़, कितने सारे लोग जुड़े हुए हैं। किसी के लिए वे फाधर फिगर हैं, किसी के लिए ग्रान्ड फाधर फिगर हैं, किसी के लिए वे बेटे भी बन जाते हैं, ये सारे रिलेशनशिप को एकदम परफेक्ट तरीके से निभाते हैं और हरेक को उतनी ही इम्पॉर्टन्स फील कराते हैं, जितनी शायद हम या आप किसी को नहीं करा सकते।

रिलेशनशिप से हट कर बात उनकी क्वालिटीज़ की करें, तो डिक्शनरी में इतने एड्जेक्टीव्ज़ शायद है ही नहीं। मतलब **वे एक साइक्याट्रिक हैं, ही इज़ लीडर, ही इज़ हीलर, ही इज़ एवरीथिंग फॉर मी।** मैं अपनी बात करूं तो अगर वे गॉड नहीं हैं, तो क्या हैं? **ही इज़ धी क्लोज़ेस्ट थिंग टु गॉड फॉर मी।**

अगर मंदिर की बात करूं – मंदिर इज़ धी प्लेस ऑफ गॉड। हमारी कन्ट्री–इंडिया डायवर्सिटी के लिए जानी जाती है। यहां बहुत सारी कम्युनिटी, बहुत सारे रिलिज्यन, हर तरह के लोग हैं। सिक्खों के लिए गुरुद्वारा, मुस्लिम के लिए मस्जिद होती है। पर, अपने मंदिर की बात करूँ तो आई थिंक ऐसा शायद ही मंदिर होगा, जहां पर सिक्ख, पंजाबी –किसी भी कम्युनिटी, किसी भी रिलिज्यन के लोग एक साथ ह्यूमेनिटी

और ब्रधरहुड से जीते हैं। यहाँ इवन एक मुस्लिम ने एक भजन भी गाया है। मतलब युनिटी इन डायर्वसिटी की और क्या परिभाषा होगी ? गुरुजी की बात करूं तो वे ऐसे पेट्रीओटिक पर्सन हैं, जो इंडिया से खूब प्यार करते हैं।

हम उनकी लाइफ देखें और मंदिर के कन्सेप्ट के बारे में बात करें, तो आप सबको तो पता ही है कि उन्होंने जो फॅमिली कन्सेप्ट यहां पर बिल्डअप किया है, धेट इज़ एक्स्ट्राऑर्डिनरी। फॉर एग्ज़ाम्पल, अभी पीछे शादियों का सीज़न था। जैसे चेतन, मोहित, राहुल इत्यादि सबकी शादी थी। तकरीबन रोज़ शादियों में जाता देख मेरे फ्रेंड्स पूछते– *किसकी शादी है ?* मैं कहता– *मेरे भाई की शादी है।* वे दोबारा पूछते– *किसकी शादी है?* मैं कहता– *मेरे भाई की शादी है।* ऐसा लगातार सुन कर वे बोलते– *यार, तेरे कितने भाई हैं। मतलब तुम्हारी फॅमिली कितनी बड़ी है ?* उन्हें कैसे बताऊं कि यहां मेरे कितने भाई हैं? यूं एक फॅमिली कन्सेप्ट आ जाता है, धेट इज़ अमेजिंग। और... ऐसा नहीं कि कहने के लिए या दिखाने के लिए यह है, हम सब वाकई महसूस करते हैं। मेरे साथ अगर कुछ अच्छा हुआ है, तो मेरे फ्रेंड्स वगैरह शायद इतने खुश नहीं होंगे, जितनी ख़ुशी यहां पर सब में दिखती है। चाहे मेरी हर एक से कभी बात हुई हो या नहीं हुई हो, पर सब दिल से ख़ुश होते हैं और यदि कुछ तकलीफ आए तो दिल से दुःखी होते हैं। आपको ऐसा कहीं भी नहीं मिलेगा।

अगर मैं दीदी की बात करूं, तो **दीदी** इज़ एवर स्माईलिंग, एवर एनर्जेटिक। शी **इज़ ए डिवाईन स्पीरीट।** हम आज कह सकते हैं कि **गुरुजी ने जैसे काकाजी को अपनाया हुआ है, तो वैसे ही दीदी ने गुरुजी को अपनाया हुआ है।** वे आपको हर चीज़ का इतना इज़ी व सिम्पल इंटरप्रिटीशन दे देती हैं कि आपको ज़्यादा डेप्थ में या ज़्यादा स्क्रीप्चर्स पढ़ने की या दिमाग़ लगाने की जरूरत ही नहीं है। शी मेक्स थिंग्स वेरी-वेरी सिम्पल। उनके पास हर चीज़ का एक इज़ी ऑल्टरनेटिव है। गुरुजी जो हमसे चाहते हैं, वे हमें इंटरप्रिट करके बताती हैं।

...एक्सपीरियंसिस की बात करूं, तो मेरे साथ बहुत-बहुत स्पेश्यल एक्सपीरियंस हुए हैं, जिनके लिए शायद मैं डिज़र्व भी करता था या नहीं... जब मेरा दिल्ली के कॉलेज में एड्मिशन हुआ, तो बाहर की सीटी से आए स्टुडन्ट्स पीजी या फ्लैट में रहते हैं। मेरे दोस्तों को मैंने देखा है कि वे किस हालत में रहते थे। पर, गुरुजी ने मुझे इतना अच्छा मौका दिया कि मुझे विजयपाल अंकल-शशि आंटी के घर रुकने के लिए कहा। सो, आई वॉन्ट टु थैंक धॅम–विजयपाल अंकल, शशि आंटी एन्ड विपीन-नितिन कि उन्होंने मुझे इतना स्पेश्यल फील कराया। मेरे लिए शायद इससे अच्छा अरेंजमेंट हो ही नहीं सकता था। **एक्च्युअली आई वॉज़ धी पार्ट ऑफ धेर फॅमिली।** बाद में कॉलेज और जॉब के लिए लगभग 8-9 महीने मंदिर में भी रहा। गुरुजी ने मेरे रुम में स्पेश्यल एक स्टडी टेबल लगवाई। हर रोज़ नित्या बुआ मेरे लिए लंच पैक करके देती थी। मुझे जब मंदिर और विजयपाल अंकल के घर पर रुकने का मौका मिला, तब टु बी वेरी ऑनेस्ट कि–स्टार्टिंग में मैं बहुत सोच-विचार में पड़ गया था कि मैं ऐसे कैसे रहूँगा? शायद मुझे मेरी फ्रीडम हो या न हो? मेरे साथ पता नहीं

क्या होगा? मैं बहुत-बहुत पॅरनाइड था, बट मैं रुका। उस टाइम मन से नहीं रुका था, आज कहता हूँ कि उससे अच्छी चीज़ मेरे लिए कुछ हो ही नहीं सकती थी। नथिंग, नथिंग, नथिंग वुड बी बेटर।

इससे मैं कन्क्लूज़न पर आना चाहूँगा कि हमें कोई प्रश्न नहीं करना चाहिए, सत्संग में दिमाग़ बंद रखने की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है। पप्पाजी कहते थे– *स्टॉप धी इंजन, लॅट हिम वर्क।* वो शायद एक्सपीरियंस से होता है। अब मैं समझता हूँ कि मेरे लिए उस टाइम इससे अच्छा और कुछ नहीं हो सकता था। इंगलिश में कहावत है– *ग्रास इज़ ग्रीनर ऑन धी अधर साईड।* बट, मैं बहुत प्राउड्ली कह सकता हूँ कि मेरे लिए ग्रास इज़ नॉट ग्रीनर ऑन धी अधर साईड; ऑन माई साईड धी ग्रास इज़ वेरी थिक एण्ड ग्रीन। मुझे नहीं लगता कि सामने वाले के लिए माहौल मुझसे ज़्यादा अच्छा है।

ऑल क्रेडिट गोज़ टु गुरुजी व मंदिर से जुड़े होने के लिए। जब मंदिर से जुड़े होने की बात करूं, तो वैसे मैं बहुत इंट्रोवर्टी हूँ, इतनी जल्दी एक्सप्रेस नहीं कर सकता। बट **आई रियली वॉन्ट् टु थैंक माई पेरन्ट्स। एक्च्युअली मैं आज यहां पर इस मंदिर से जुड़ा हूँ, तो इट इज़ ओन्ली बीकॉज़ ऑफ धॅम। वे इतने डेडीकेटेडली गुरुजी से जुड़े हुए हैं।** बचपन में मैं तो इतना इन्वॉल्व नहीं था, इसलिए उन्हें थैंक्स बोलना चाहूँगा कि उनकी वजह से आज हम यहां सत्संग में हैं और हमें इतनी बड़ी फॅमिली मिली है।

अंत में मैं एक प्रार्थना रखना चाहूंगा कि जब मंदिर आए मुझे एक हफ़्ता हो जाए या फिर मैं घर या ऑफिस में होता हूँ, तो किसी न किसी चीज़ की टेंशन रहती है। इनर पीस नहीं होती, बट जब मंदिर आ कर गुरुजी के हॉल में एन्टर करते हैं, तो वो सारी टेंशन चली जाती है और इनर पीस आ जाती है। तो, गुरुजी से यही प्रार्थना रखनी है कि हमें ऐसा आशीर्वाद दो कि हम आपके इतने अच्छे डिवोटी बन पाएँ कि वो इनर पीस मंदिर के बाहर अपने साथ लेकर जा पाएँ। वो कमी हमारी है; वह पूरी करने के लिए आपसे आशीर्वाद चाहिए। हम जब भी कहीं पर हों, हमें पता है कि आप हमारे साथ हैं; बट हम वो निभा नहीं पाते। गुरुजी से यही आशीर्वाद मांगना है कि हम अपने एक्शन्स से आपको थैंक यू कर पाएँ और आप हमसे जो चाहते हैं वो हम करें और आपका नाम रौशन करें।

प.पू. हिम्मतस्वामिजी (लंडन)

...गुरुवर्य साहेबदादा का अमृत महोत्सव मनाने के लिए सभी आए थे और साहेब के साथ छपैया धाम के दर्शन के लिए आना हुआ। तभी उन्होंने कह दिया था कि 13 मार्च को गुरुजी का प्राकट्य पर्व मनाने के लिए दिल्ली जाना है। इस निमित्त हमें गुरुजी से आशीर्वाद लेने का सद्भाग्य प्राप्त हुआ।

1981 में इंग्लैंड-ब्रह्मज्योति की ज़मीन, काकाजी के पुनीत चरण और आशीर्वचन से प्राप्त हुई थी और उसी स्थल पर मंदिर का निर्माण करने का निर्णय हुआ था। दो-तीन साल पहले गुरुजी पेरिस में काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी मनाने के दौरान पहली बार लंडन-ब्रह्मज्योति में पधारे थे। उस समय प्लानिंग की दुविधा थी। साहेबजी ने तुरंत कहा था कि गुरुजी के वरद् हस्तों पुष्प छंटवाना और आशीर्वाद लेना, प्रार्थना करना। सच में, काकाजी ने जैसे आदेश दिया था, वैसे ही आदेश रूप गुरुजी ने धुन, प्रार्थना और संकल्प किया।

आनंदी दीदी और सभी साथ में थे। मंदिर निर्माण के प्लानिंग में जो अड़चन थी, वह सरलता और सुगमता से पार हो गई और तुरंत काम शुरू हो गया। पिछले वर्ष तो हमने मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा भी की।

आज गुरुजी से उनके प्राकट्य पर्व पर ख़ास प्रार्थना करनी है कि **आप सभी स्वरूपों के आशीर्वाद से ही मंदिर का निर्माण हुआ, लेकिन हमारा हृदय भी मंदिर बनाना।** काकाजी की जो सर्वदेशीयता थी, वे जब लंदन आते तो कहते– *यहाँ इन्टर्नेशनल मंदिर का निर्माण करना है।* उनके आशीर्वाद से ही मंदिर का निर्माण हुआ। ब्रह्मस्वरूप योगीबापा का संप, सुहृद्भाव, एकता का जो आदेश था, वैसा हम सब साधक भाई-हरिभक्त मिलजुल कर उठाव लें, उसके लिए बल, बुद्धि और प्रेरणा देना–यही प्रार्थना है।

प.पू. वशीभाई (पवई)

...गुणातीतानंदस्वामी ने अपनी बातों में बताया –*आज तो सुखपाल में बैठ कर भजन करना है।* आज गुरुजी ने वैसा दर्शन करा दिया– वडापाव खाओ, दूध पीओ और भगवान भजो। ऐसा यहां लाइवली कर दिया है। दो दिन से ऐसा माहौल है कि जैसे सब अक्षरधाम में हैं। हमारे साथ एक नए महाराष्ट्रीयन भक्त आए हैं–मोहनभाई लबड़े। उन्होंने अपनी फ्लाइट केंसल कर दी और कहा–***मुझे यहां स्वर्ग जैसा लगता है। आई डोन्ट वोन्ट टु गो बैक।*** तो, **यहां योगीजी महाराज के आशीर्वाद, काकाजी का सालों का परिश्रम और गुरुजी की अद्भुत तपस्या के फलस्वरूप आज हम यह दर्शन कर रहे हैं।** साहेबजी का तो उनका सेवन्टी फिफ्थ बर्थडॅ दिनाँक 19 से 23 तक मनाने वाले हैं। फिर भी इन सबको लेकर छपैया-हरिद्वार होकर आज हमें दर्शन देने के लिए आ गए। साहेब को भी खूब-खूब धन्यवाद। अवर स्वरुप्स आर बियॉन्ड टाईम एन्ड बियॉन्ड एईज। अवर स्वरुप्स आर एवरेज्ली ऑफ एईटी। बट स्टील वे हमसे ज़्यादा काम करते हैं, हमसे ज़्यादा फ्रेश रहते हैं, हमसे ज़्यादा आशीर्वाद देते हैं, हमसे ज़्यादा आनंद कराते हैं। उसका राज़ यही है कि धे लिव इन टोटल ब्राह्मी कॉन्सियसनेस– डिवाईन कॉन्सियसनेस और हमें ऐसे जोड़ने के लिए ऐसे फंक्शन-माहौल बनाते करते हैं।

गुरुजी का स्टाईल ऐसा है कि दूसरे को मान दो, दूसरे को आगे करो। कल पहले बहनों का फंक्शन किया। तब महाराज का एक प्रसंग याद आ गया। कल भगवान भजती एक बहन ने डांस किया। उसका हमने लाइव दर्शन किया... नॉर्मली **दिनकरभाई इज़ ए बॅलन्स्ड पर्सन।** उन्हें कोई जल्दी हंसा नहीं सकता है और जल्दी रुला भी नहीं सकता। हंस तो जाते हैं, लेकिन रुला नहीं सकता है। **बट, परछाईं का डांस देख कर उनकी आंख में आंसू आ गए।** हम उनके पीछे ही बैठे थे। इवन **हंसा दीदी को भी उठ कर नृत्य करने का भाव आ गया।** हमारे **अश्विनभाई** को ऐसा इनट्रेस्ट नहीं, पर वे **भी बोले कि शी इज़ लाइक मीरां।** डांस करते-करते भी शी वॉज़ इन समाधि। तो सबको ऐसा लगा कि **कोई डांस नहीं, लेकिन भगवान और भक्त का एक दिव्य दर्शन है। परछाईं ऐसी है, तो फिर उसके क्रियेटर दीदी और गुरुजी कैसे होंगे?**

...वी आर लीवींग इन धी वर्ल्ड ऑफ प्रॉब्लेम। और कुछ नहीं तो स्पीड का प्रॉब्लेम है। लाइफ की इतनी स्पीड है कि कॅन नॉट कोपअप। हम यहाँ आने वाले थे, तो हमारी फ्लाइट छूट गई! इंडिगो के काउंटर पर बता रहे थे कि

सुबह से शाम तक सिर्फ बॉम्बे - दिल्ली की 23 फ्लाइट है। इतनी स्पीड को मॅनेज करना, इट्स वेरी डिफिकल्ट। बट, **गुरुजी मॅनेजमेन्ट भी सिखाते हैं, हाउ टु मॅनेज विथ धी स्पीड... एम.बी.ए में जाने का जरूरत नहीं, लड़कों को इधर बैठे-बैठे एम.बी.ए बनाते हैं।** 2014 में गुजरात के सापूतारा में शिविर की थी, तो यहां से कंटेनर भर कर सामान लेकर गए थे। फ्रॉम पीन टू प्लेन, एवरीथिंग वॉज़ धॅर वॉट यू नीड धॅर। वे तो करते नहीं, लेकिन सेवकों को ऐसा ट्रेइन कर दिया है। धॅ मॅनेज इट विथ स्पीरीच्युआलिटी–रीमेइनिंग बॅलेन्स्ड।

दूसरा–इस ज़माने में एक प्रॉब्लेम है, कन्टीन्युअस्ली चेन्जिंग टेक्नोलॉजी। आज एक फोन आया और 10 दिन में आउट डेटेड! पहले फॅक्स आया, ई-मेल आया, व्हाट्सएप आया, अब व्हॉट्सएप से आगे कुछ न कुछ चालू ही है। इस चेंजिंग टेक्नॉलोजी में गुरुजी का सेवेन्टीनाइन्थ बर्थडॅ है, बट् ही इज़ अहेड ऑफ टेक्नॉलोजी ऑलसो। मोबाईल उन्हें अच्छा नहीं लगता, नॉर्मली वे लेन्डलाईन युज़ करते हैं। यूं, टेक्नॉलोजी से वे भली-भाँति माहिर हैं। टेक्नॉलोजी में वे खूब एड्वान्स्ड हैं।

...बट ही इज़ ओन्ली कन्सर्न्ड विथ रिलवेन्ट इन्फोर्मेशन्स। ही कीप्स हीमसॅल्फ वॅल इन्फोर्म्ड। कोई भी नई घटना घटती होगी, कुछ भी नया होता होगा, ही इज़ अवेर। इर्रिलेवंट डेटा को बाजू में करते हुए वे रिलेवन्ट देते हैं। आपके काम का है, वो मायने रख कर सिखाते हैं। जैसे नित्या को वे बोले कि चाइना जाकर आर्टिफिशियल फ्लावर्स लेकर आओ। यहां हर उत्सव में ताज़े फूल की डॅकोरेशन करें, तो वेस्टेज़ ऑफ मनी कहा जाए। लेकिन, अलग-अलग वेरायटी के फूलों से डेकोरेशन और उसकी मेन्टेनन्स करने के लिए भी कहते हैं... साहेबजी भी बताते हैं कि स्पीरीच्युआलिटी में भी सायंस इज़ टु गो टुगेधर, बट यू हॅव टु बैलँस धॅम। बैलँस करके गुरुजी सेवकों में उसे इम्बाईब करके भक्ति के रूप में ढालते हैं... अभी अच्छा भजन गाया– *'छोड़ों पुराना ढांचा, नए ढांचे में ढल जाओ...'* यु कॅन नॉट फाईट टुडेज़ वॉर विथ यस्टरडॅज़ वेपन्स। यूं भगवान स्वामिनारायण, योगीजी महाराज का जो प्रिंसिपल है, वो गुरुजी ने आज के यूथ को बताया है।

आज जब इतना बड़ा समाज है ; ये गर्ग साहेब से लेकर हमारे ओ.पी. अग्रवाल के बेटे का बेटा आत्मन् तक को साथ में लेकर चलते हैं...

टेक्नोलॉजी एक प्रॉब्लेम है, बट् कन्वर्ट प्रॉब्लेम इनटु ऑपोर्च्युनिटी। आजकल की प्रॉब्लेम है स्ट्रेस। हर व्यक्ति कहता है कि मैं स्ट्रेस में जीता हूँ। कुछ चेईन्ज हुआ तो स्ट्रेस हो गया। बट, **गुरुजी इज़ ऑलवेज़ फ्रेश।** कल रात को हम ढाई बजे आए, तो हमसे आधा पौना घंटा बात की, आनंद किया। ही इज़ ऑलवेज़ फ्रेश, **उसका कारण क्या है? नॉर्मली ह्यूमन बीइंग 'मी और माईसेल्फ–मैं और मेरा' में जीता है। पर, गुरुजी लीव्ज़ इन 'तू और तेरा मुक्त'।** उसकी प्रेक्टीकल बात कहता हूँ–

परसों हमारी फ्लाइट मिस हो गई थी। तो, जब से फ्लाइट मिस की, तब से गुरुजी का बार-बार फोन आ रहा था–*अभी तुम कहां पहुंचे हो? तुमने खाना खाया है? दिनकरभाई ने क्या पीया? क्या लिया?* फिर बोले– *एक घंटे के बाद फिर फोन करूंगा।* हमने तुरंत फ्रेश टिकिट बुक की, तो पूछने के लिए फोन आया – *कौन सी मिली? कहां मिली?* सी धी कन्सर्न एबाउट अधर्स। वी लीव इन अवरसेल्फ–हम अपने में

ही जीते हैं। साहेबजी भी किसी छोटे से छोटे भक्त से पूछेंगे– *बेटा तुमने नाश्ता किया ? तूने चाय पी ?* धे लीव इन अधर्स... गुरुजी को इतनी चिंता थी ; क्योंकि–'तू और तेरा।' और यह वहां तक कि विश्वास से उन्होंने कह रखा था– *ये लोग 8 घंटे बैठ कर आ रहे हैं, कंटाल गए होंगे। तू जागना और वशीभाई के पांव दबा देना, वो थक गए होंगे।* तो, **स्ट्रेस जीतने का उपाय यह कि तुम मुक्तों की चिंता करो।** योगीजी महाराज ने जो सिखाया, गुरुजी प्रेक्टीकल रूप में वो अपने भक्तों–सेवकों को करामत सिखा रहे हैं कि हाउ टू लीव बियॉन्ड स्ट्रेस। जैसे वैभव गोयल ने बताया अनधर प्रॉब्लेम टूडे इस मॅनेजिंग रिलेशन। ब्रधर टु ब्रधर, ब्रधर टु सिस्टर और हसबंड एण्ड वाईफ, इट्स डिफिकल्ट टु मॅनेज रिलेशन। बट **गुरुजी इज़ डॉक्टरेट टु मॅनेज रिलेशनशिप।** किसी को भी देखो, भले वो फिर ये फोटोग्राफी वाला पुनीत मल्होत्रा हो या चिंतन अग्रवाल हो। चिंतन के फाधर एक्सपायर हो गए तो गुरुजी ने उसका ध्यान रख कर, उसकी एक छोटी-छोटी चीज़ का ख्याल रखा। नॉर्मली बड़ी फॅमिली में सबके नाम भी याद नहीं रहते। पर, **गुरुजी तो लगभग 500 से 600 नाम याद रखते हैं। उम्र बढ़ती है, तो भूल जाते हैं। बट, गुरुजी इतने फ्रेश! क्यों ? क्योंकि संबंध वाले में वे व्यक्ति नहीं देखते, वे महाराज का स्वरूप देखते हैं कि यह मेरे लिए काकाजी ने भेजा है।** काकाजी समझ कर उसकी सेवा करनी है। फिर वो पंजाब से हो या गुजरात-अमदावाद से हो या बॉम्बे का हो, कोई भी हो। बट उनका रीलेशन मॅनेजिंग एक्सलेंट है।

बहनें भी भगवान भजती हैं; इमीडियेटली तो सब कुछ हो नहीं जाता। यंग उम्र में तुम भगवान भजने के लिए आ जाते हो, बट उसकी साईकोलॉजी समझ कर उसे सेवा देते हैं। **रिलेशन मॅनेजिंग में उनकी यह विशेषता है कि राइट आदमी को राइट काम देते हैं।** हमारे मैत्रीस्वामी जब आए, तो उन्हें ठाकुरजी की सेवा अच्छी लगती है; सो उन्हें ठाकुरजी की सेवा दी। वे ठाकुरजी का इतना अच्छा थाल करते हैं, मानो भगवान अभी खाना खाएँगे। महापूजा भी खूब अच्छी तरह भक्तिभाव से करते हैं। गुरुजी को मालूम है कि कौन से आदमी को कौन-सा काम देना है, किस आदमी को क्या पसंद है ? जैसे कल किसी ने बताया था कि उसे कुछ पसंद आया, तो पैक करके उसके घर भिजवा दिया। ही हॅज़ धेट इंडीविज्युअल डायरी – हु लाइक्स वॉट ? किसी का बर्थडॅ, मैरेज डॅ कब है ? व्यक्ति को खुद याद नहीं होगा कि आज मेरा मैरेज डॅ है, लेकिन गुरुजी का फोन जाता है कि हैप्पी मैरिज एनीवर्सरी। ये सब गुरुजी जैसा शिल्पकार करता है।

एक क्रियेटर अद्भुत क्रियेशन करता है... गुरुजी ने काकाजी की सेवा के रूप में यह किया है। ऐसा नहीं कि यह सेवा करके सबको दिखा दूँ। पर, काकाजी ने मुझे ऐसा एक सेंटर दिया है-ये सेवा दी है, तो वो सेवा करके अलग-अलग चैतन्य को ऐसा तैयार करते हैं। उसके पीछे उनका एक एटीट्यूड -भावना है। क्या है भावना कि मुझे काकाजी को राज़ी कर लेना है।

आज गुरुजी के चरणों में प्रार्थना है कि इस उम्र में आपकी ऐसी हेल्थ... बट, **गुरुजी लुक्स ऑलवेज़ यंग एन्ड कीप्स पीपल एराउन्ड हीम यंग।** जल्दी उठना मुश्किल है, लेकिन सुबह 6.40 से 7.00 बजे तक सबसे धुन कराते हैं। सो, ऑटोमेटिक 6.30 को आ जाना ही पड़ेगा। आज की मांग भी एजीलिटी है। यु हॅव टु

बी एजाइल। गुरुजी खुद एजाइल रहते हैं, भगवान में रहते हैं, भगवान के लिए काम करते हैं और सबको एजाइल रखते हैं।

तो, ऐसे गुरुजी के चरणों में प्रार्थना है कि आज आपका प्राकट्य दिन है, आपका स्वास्थ्य खूब-खूब अच्छा रहे, आप सबका स्वास्थ्य अच्छा रखो–सबको ऐसा आशीर्वाद दो। आप क्रियेटिविटी के भी मास्टर हो, आप यहां नया क्रियेशन करते रहते हो, तो काकाजी और पप्पाजी की इस शताब्दी में भी नए-नए आइडिया, नए-नए क्रियेशन्स के आइडियाज़ देना।

दूसरा–आज स्पीड के माहौल में क्या हुआ है कि पहले क़े जमाने में एक या दो उत्सव होते थे। उत्सव नहीं हो, तो हमें बुखार आ जाता है... अभी अमेरिका का उत्सव होगा, तो 108 जनों का वीज़ा। जो वीज़ा के लिए जाते हैं, उन्हें मालूम है कि कितनी दिक्कत होती है। पर ये सब में बॅलन्स्ड माइंड रख कर गुरुजी जो काम करते हैं, सचमुच धन्यवाद है। पुराने-नए, छोटे-बड़े सबको साथ में लेते हैं। और... सब स्वरूपों के साथ भी उनका ऐसा विशिष्ट संबंध रहा है। साहेब, गुरुजी को देख कर खुश होते हैं; गुरुजी, साहेब को देख कर खुश होते हैं। प्रेमस्वामी, गुरुजी को देख कर खुश होते हैं; तो गुरुजी, प्रेमस्वामी को देख कर खुश होते हैं। आज वो सब दर्शन करके हमें आनंद हो गया। गुरुजी, अक्षरविहारीस्वामी से कहते हैं कि आप यहां बैठो, अक्षरविहारीस्वामी कहते हैं नहीं, गुरुजी आप बैठो। योगीजी महाराज की भावना थी–'संप, सुहृदभाव, एकता'। तो हम सब मिलजुल कर जी पाएँ, ऐसी इनके चरणों में प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. प्रेमस्वामिजी (सोखड़ा)

...मेरा तो बहुत सद्‌भाग्य है कि मैंने गुरुजी के बहुत स्वरूप का दर्शन किया है। शुरुआत से ही काकाजी और स्वामिजी ने मुझे गुरुजी की सेवा में रखा था। वशीभाई ने गुरुजी का अद्‌भुत वर्णन किया। सच, उन्हें पोज़िटिव दृष्टि से हम देखा करें, निहारें तो हमारे जीवन में वह सहज साकार होता है। **उनका पर्फेक्शन और चौकसाई, वह हमें बहुत सामान्य बात लगती है; लेकिन, वह भक्ति और पराभक्ति में हमें खूब काम लगती है।** वशीभाई ने बताया कि गुरुजी ने पूछा– *दिनकरभाई को क्या पिलाया?* वह उनकी कैसी पराभक्ति है! उसका कारण यही है कि वे हमेशा योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी के जीवन में सहज डूबे रहे हैं। उनके जीवन में संपूर्ण रूप से डूबे रह कर जी रहे हैं और हमें वैसा जीवाना चाहते हैं।

दिल्ली के लिए काकाजी ने कैसे विचारपूर्वक उनका ही सिलेक्शन किया है। हम कई संत थे। पर, **उनका सिलेक्शन क्यों हुआ?** उन्हें ही दिल्ली सबसे पहले क्यों भेजा? **सच खूब विचार करने की बात है।**

आज गुरुजी का जीवन देखें, तो एक अद्‌भुत संबंध वाली दृष्टि के जीवन का दर्शन होता है। सहज दासत्व छलकता है। वैसे दासत्व लगता नहीं, लेकिन नज़दीक जाकर देखें तो सच में दासत्व और सुहृद्‌भाव बहता हो, ऐसा दर्शन होता है। बाकी,

गुरुजी के लिए क्या कहना? **'गुरुजी-गुरुजी हैं'... इतनी बात में सब कुछ आ जाता है।**

...आज सभी के चरणों में एक प्रार्थना करनी है... वर्षों पहले (सोखड़ा के) पुराने मंदिर में काकाजी ने एक नियम दिया था कि पाँच वचनामृत प्र. 24, 58, मध्य 25, अंत्य. 11 व 26 के आख़िरी पॅरेग्राफ तुम अखंड अपनी नज़रसमक्ष रखना। इन्हें लिखने का काकाजी ने हमें नियम दिया था, तो रोज़ लिखते थे। सच, आज गुरुजी के जीवन में इसका सहज दर्शन होता है। **उन्हें भक्तों के समक्ष पिघलना नहीं पड़ता, वे सहज पिघल जाते हैं। भक्तों के समक्ष वे ख़ुद को 'कुछ नहीं'–बराबर मान कर जी सकते हैं, ऐसा सहज दर्शन होता है।** तो, आज प्राकट्य दिन पर इतनी प्रार्थना करनी है कि काकाजी ने जो नियम दिया था और स्वामिजी को जो कराना है–उन्हें हमें संबंध वाली दृष्टि से जीते करना है, दास के दास होकर जीते करना है, 'संप, सुहृद्भाव और एकता' में डूबोना है। सुहृद्भाव तभी दृढ़ होगा, जब संबंध वाली दृष्टि होगी। सुहृद्भाव तभी दृढ़ होगा जब सहज सरलता होगी। ये बातें हमें काकाजी हमेशा कहते। तो, आज के मंगलकारी दिन पर इतनी ही प्रार्थना करनी है कि बस वह सुहृद्भाव हम में दृढ़ हो... गुरुजी ने अद्भुत-अद्भुत डॅकोरेशन करवाया है। जो योगीबापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी का जीवन है, वह सर्वदेशीयता और सुहृद्भाव लेकर हम सब ऐसा जीते हो जाएँ और आपके अंतर में ठंडक करें, ऐसी कृपा बरसाना। ऐसा बुद्धियोग देना, ऐसी आपके पुनीत चरणों में प्रार्थना के साथ जय स्वामिनारायण।

प.पू. भरतभाई (पवई)

...बहुत ही आनंद का दिन है। गुरुजी के सान्निध्य में -संतों के सान्निध्य में जब से दिल्ली आए हैं, खूब-खूब आनंद कर रहे हैं। गुरुजी का प्राकट्य दिन 13 मार्च होता है–तो करीब-करीब 2 महीने पहले से ही बुकिंग हो जाती है कि हमें जाना है और काफी लोग तैयार हो जाते हैं कि हमें जाना है। इस बार भी बहुत सारे भक्तों, बहनों और हमारा सचिनभाई तो मंडल के साथ आए हैं। वशीभाई ने बताया कि उनके ऑफिस में काम करने वाला भगवान जो उनका सेवक है, वो तो यहां आ कर बोला कि मैं मेरी टिकिट केंसल करा देता हूँ, यहीं रहता हूँ। जिसे कुछ मालूम नहीं है, उसे भी आनंद आता है। तो, हमें तो आनंद आना ही आना है, उसमें कोई डाउट नहीं है।

स्वामिनारायण भगवान जब इस पृथ्वी पर आए और चार वरदान दिए–दो अपने गुरुजी से मांगे और दो खुद दिए।

पहले अपने गुरु से उन्होंने यह मांगा– *हे गुरु! आपके जो आश्रित हैं, वे कभी अन्न-वस्त्र से दुःखी न हों।* आज हम देखते हैं कि स्वामिनारायण के किसी भक्त को कभी भीख मांगनी नहीं पड़ती कि मेरे पास खाना नहीं या फिर यह नहीं है। क्योंकि भगवान का वरदान है, वो आज भी इतना जीवंत है।

दूसरा वरदान गुरु से ये मांगा – *आपके भक्त-आश्रित को यदि एक बिच्छू के काटने का दुःख हो, तो मेरे एक-एक रोम में करोड़ बिच्छू के काटने जितना दुःख हो या उसके नसीब में रामपत्तर हो, तो वो मुझे देना; पर, आपके आश्रित को न हो।*

ऐसा कौन मांग सकता है कि दुःख मुझे दो ?

और... दो वरदान खुद दिए। उसमें एक वरदान यह दिया – *अंत समय में मेरे भक्त को लेने को मैं जाऊंगा।* ऐसे बहुत सारे एग्ज़ाम्पल्स हैं कि किसी भी ऐसे भक्त को लेने के लिए भगवान जाते हैं, उसे दर्शन होता है कि मुझे भगवान स्वामिनारायण और उनके संत लेने के लिए आए हैं।

दूसरा – *ऐसे संतों के द्वारा इस पृथ्वी पर मेरा प्रगटीकरण अखंड रहेगा।*

ऐसे संत की हमें प्राप्ति हुई है, वो हमारा सबसे बड़ा भाग्य है और ऐसे संत गुरुजी का आज हम प्राकट्य दिन मना रहे हैं। उनका जो क्रियेशन है, उसका हम सब दर्शन कर रहे हैं। हम कितने भाग्यशाली!

आज दोपहर को अक्षरविहारीस्वामिजी और गुरुजी के बीच में बातें हो रही थीं। गुरुजी ने अक्षरविहारीस्वामिजी से कहा – *आपको मेरे स्थान पर बैठना है।* अक्षरविहारीस्वामी ने कहा – *नहीं, आपको आपका जो स्थान है उसी पर बैठना ही है।* गुरुजी ने कहा – *नहीं-नहीं, मैं सेवक हूँ।* अक्षरविहारीस्वामिजी ने कहा – *आप मानते हो, वो आपके लिए ठीक है, मगर हम आपके प्रति ऐसी भावना रखते हैं, दिल से मानते हैं कि आप भगवान स्वामिनारायण, योगीजी महाराज और काकाजी के स्वरूप हैं। तो, मेरी भावना आपको स्वीकारनी है।*

काकाजी भी बहुत बार यह बात बताते थे कि ऐसे संत में भगवान साक्षात् विराजमान हैं। वो भगवान को अखंड धारण किए हुए हैं और यह बात हम मानते हैं। इसलिए हमारी सब भावना उनके द्वारा भगवान को पहुंचती है।

...हम ऐसे संतों के संबंध में हैं, वो सामान्य बात नहीं है। हमारे बहुत-बहुत भाग्य और नसीब की बात है। गुरुजी का बहुत ही अच्छा दर्शन प्रेमस्वामी, वशीभाई ने–सबने कराया। दो दिन से बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुनने में आई हैं। मगर मैं गुरुजी के बारे में यह कहना चाहता हूँ कि **उनकी बात बहुत रीज़निंग वाली होती है। गुरुजी के आशीर्वचनों की दसवीं मार्गदर्शिका की जो सी.डी. निकाली है, वो आप सुनना। आपको कहीं न कहीं उससे तसल्ली हो जाएगी कि यह बहुत अच्छी बात है और मुझे अपने जीवन में लानी है। गुरुजी की बातें बहुत गहन होती हैं और वे इतनी अच्छी तरह से समझाते हैं कि हमारे दिमाग़ में तुरंत बैठे।**

मुझे याद है कि मैं पूर्वाश्रम में जब कांदीवली रहता था, तो गुरुजी हमारे घर पधरामनी करने आए थे। करीब 1971 की बात होगी और उस समय वे आने में लेट हो गए थे, रात को करीब सात-साढ़े सात बज गए थे। तब तो गुरुजी की हेल्थ बहुत अच्छी थी, सो एकदम दौड़-दौड़ कर आए और बैठे। उस समय उन्होंने मेरे फाधर को जो बातें की, वो मेरे दिल में अभी भी याद हैं। हमें रोज 15 मिनिट सुबह और शाम को क्यों भजन करना है? यह बात खूब अच्छी तरह से बताई और वचनामृत पढ़कर सारी बातें की। गुरुजी को याद नहीं होगी, मगर मुझे याद है। बाद में काकाजी के मुख से भी मैंने वे सब बातें सुनी, मगर गुरुजी ने पहले बताई थी। कभी-कभी हम उभराट शिविर वगैरह में जाते थे, तब भी गुरुजी बहुत अच्छी बात करते थे। **उनका प्रवचन सुनने के लिए सब आतुर रहते थे कि गुरुजी कब बात करेंगे?** एक प्रवचन में गुरुजी ने बहुत अच्छा बताया था–हम क्यों चेंज नहीं होते? तो, उन्होंने दृष्टांत दिया–

एक सेठ ने घर में तोता पाल रखा था। सेठ हर रोज़ तोते को बोलना सिखाता था– *'जय स्वामिनारायण, जय श्रीराम, जय श्रीकृष्ण, आओ-आओ, पधारो'* वो तोता भी *'जय श्रीराम, जय स्वामिनारायण'*–सिखाया हुआ सब बोलता था। पर, शाम को जब सेठ लौटते, तो तोता बोलता– *'नालायक, हरामखोर'*–ऐसी गालियां देता था। सेठ को लगता कि यह क्या होता है ? मैं उसे सब अच्छी तरह से सिखाता हूँ और शाम को बदल जाता है। फिर उसने एक आदमी को घर में खोजने के लिए रखा कि ये ऐसा क्यों करता है ? तब मालूम पड़ा कि तोता पिंजरे से आज़ाद हो जाए, इस हेतु दोपहर में घर के भीतर का एक जना ही उसे गालियाँ सिखाता है – *नालायक, हरामखोर...* ऐसी - वैसी।

इस दृष्टांत से गुरुजी का यह कहना था कि संत हमें कितना भी सिखाते हैं, मगर बाद में गलत संग में रहते हैं, सो वापिस वहीं के वहीं हो जाते हैं। तो, आप निरंतर अच्छे के संग में रहो और मन के ऐसे गलत संग में नहीं रहना, जो हमें नेगेटिविटी में लेकर जाए।

...गुरुजी के बहुत से गुण हैं, वे भजनीक भी हैं।

जब गुरुजी ताड़देव आते थे, तो हमें हमेशा रहते पूछते थे– *काकाजी मुझे याद करते हैं ? काकाजी ने मुझे कब याद किया ?* तब मुझे लगता था कि गुरुजी बार-बार ऐसा क्यों पूछते हैं ? मैंने एक बार बताया– *हाँ, याद तो करते हैं।* उन्होंने पूछा– *कब और क्यों याद किया ? क्या बात थी ?* हमें इतना तो तब याद रहता नहीं था कि काकाजी ने क्यों या कैसे याद किया ? पर, बाद में मैंने जब गुणातीतानंदस्वामी का प्रसंग पढ़ा, तो मुझे समझ आया कि गुरुजी ऐसा क्यों पूछते हैं ? गुणातीतानंदस्वामी को तो भीतर में महाराज का अखंड दर्शन था, वे हमेशा अखंड धारण किए हुए थे। तब भी महाराज के दर्शन के लिए वे हमेशा तत्पर रहते थे। काकाजी के हृदय में गुरुजी का स्थान परफेक्ट था। गुरुजी की बात आए तो काकाजी एकदम आनंद में आ जाते थे और कहते – गुरुजी बड़े 'घावेडी'–चतुर हैं–ऐसे हैं, वैसे हैं। यूं बहुत बातें करते थे। गुरुजी की भी काकाजी के साथ वननेस थी। पर, वे यह बताना चाहते थे कि हम कितना भी उनके साथ एक हो जाएँ, तो भी हमें यह भावना रखनी है कि हमें उनके दर्शन और सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहना है। गुरुजी ऐसे सेवकभाव का दर्शन हमें कराना चाहते हैं। ऐसे और भी प्रसंग है। गुरुजी की लास्ट बात करता हूँ और बाद में आशीर्वाद मांगता हूँ।

काकाजी का सूत्र है 'फ्रेंडलीनेस–मैत्रीभाव' और... मैत्रीभाव के बारे में बहुत सारी बातें काकाजी ने भी बताई हैं। मैत्रीभाव का अर्थ क्या ? मैत्रीभाव मीन्स क्या ? काकाजी कहते थे – *दिव्य एकता।* हम सब भी 'स्वरूपलक्षी सुहृद्भाव'–ये सब वर्ड बोलते हैं। मगर **गुरुजी के जीवन में वो मैत्रीभाव इम्बाईब हो गया है।** आज उसका दर्शन हम इन सब भक्तों में कर रहे हैं। मैत्री के बारे में मैंने दो-तीन वाक्य पढ़े थे; बहुत अच्छे थे –

धी डेप्थ ऑफ लव इज़ मेज़र्ड बाय इट्स एक्स्टेन्सिवनेस। धे गो हेन्ड इन हेन्ड, धी लव धेट इज़ नॉट बाउंड टु वन एन्ड फ्लोज़ टुवर्ड्स ऑल, बीकम्स फ्रेंडलीनेस।

गुरुजी का प्यार ऐसा है। वो सबकी ओर बह रहा है और उसमें सब स्नान कर रहे हैं, उसका लाभ ले रहे हैं। इसलिए काकाजी का मैत्रीभाव उनमें दिखाई पड़ता है। और एक बात हैं–सच लव हेज़ नॉन एटॅचमेन्ट। गुरुजी किसी से एटॅच नहीं हैं। दिखता है कि ये इससे बहुत एटॅच्ड हैं। मगर वे नहीं हैं, वे केवल प्रभु से ही एटॅच

हैं। हम्बलनेस, ओपन माइंडेडनेस–गुरुजी खूब ओपन- खुल्ले हैं। हमारे ताड़देव में एक भाई रहते हैं। वे कहते हैं कि गुरुजी का प्रवचन मैंने सुना तो मुझे लगा कि ये इतने बड़े हैं और वो ज़ाहिर में कहते हैं कि मैं भगवान को खाने के टाइम में भूल जाता हूँ। इतनी ओपन बात कौन कर सकते हैं? यूं गुरुजी हमेशा ऐसे ओपन हैं। वे कोई भी बात खुल्ली कह देते हैं। ओपन माइंडेडनेस एन्ड नो रिजर्वेशन; वे कोई रिज़र्वेशन नहीं रखते हैं। आज आपको डांटेंगे, मगर कल आपको प्रेम वे ही करेंगे और आपके लिए वे ही प्रार्थना करेंगे।

उससे आगे–धी इमोशन धेट एराईज़िज़ इन धी हार्ट इज़ लव एन्ड धेट फ्लोज़ अनकन्डीशनली टुवडर्स ऑल बीकम्स फ्रेंडलीनेस। ऐसी फ्रेंडलीनेस का गुरुजी हमेशा हमें दर्शन कराते हैं। कोई भी छोटा भक्त भी उन्हें कहे कि मुझे यह बहुत पसंद आया, तो गुरुजी वो याद रखते हैं और वो जब यहां से जाएगा, तो उसे थैली में देंगे। उनका ऐसा देने का नेचर है और काकाजी को यह बहुत पसंद था। तो, काकाजी के ऐसे बहुत सारे गुण गुरुजी में दिखाई पड़ते हैं।

भगवान स्वामिनारायण, गुणातीतानंदस्वामी–अक्षरपुरुषोत्तम को धारण किए हुए ये संत हैं। हम उनमें जुड़ेंगे, तो हमारा बेड़ा पार हो ही गया है, उसमें कोई डाउट नहीं है। तो, उनके चरणों में यही प्रार्थना करनी है कि हमारा हमेशा आपके प्रति अखंड सद्‌भाव बना रहे, आपके पास हम हमेशा सरल रहें और हमेशा प्रायश्चितरूप प्रार्थना में डूबे रहें–यही प्रार्थना।

प.पू. दिनकर अंकल (शिकागो)

...आज बहुत आनंद का दिन। पिछले दो-तीन दिन से गुरुजी के सान्निध्य-आश्रय में हम सब बहुत आनंद कर रहे हैं... जब प्रेमस्वामी आशीर्वाद देने को जा रहे थे, तो साहेबदादा ने खुद आशीर्वाद दिया कि प्रेमवर्षा बहाओ। आज गुरुजी और प्रेमस्वामी का पुराना सखाभाव, स्वामी सेवकभाव और स्नेहलभाव का दर्शन प्रेमस्वामी ने खूब करवाया। हमारे डॉ. दिव्यांगजी ने साहेब को एकदम राज़ी कर लिया। डॉ. दिव्यांग दो साल पढ़ाई के लिए अमेरिका भी आए थे। उधर गुजराती भजन बहुत अच्छा गाते थे। यहां भी गुरुजी को उसके मुख से गुजराती भजन सुनना बहुत अच्छा लगता है। गुजराती भाषा में उसका बहुत प्रभाव है...

आज धुन की बात चली है... काकाजी भी बहुत-बहुत धुन करवाते थे और जो सब कुछ काम होता है, वो धुन से होता है। धुन हमारी 'मास्टर की' है। हम पिछले दो-तीन दिन से काकाजी के एक प्रवचन में से वॉट इज़ धी डिफरन्स बिट्‌वीन 'चाबी एण्ड कूंची' की बात कर रहे थे। योगीजी महाराज 'कूंची' शब्द का इस्तेमाल करते थे। काकाजी के प्रवचन में से हम ये बातें कर रहे थे कि यदि खोलना है तो **चाबी से अपना ही ताला खुलेगा, मगर कूंची से कोई भी ताला खुल जाता है। वो 'मास्टर की' है। तो 'धुन' कूंची है।** इतना तो मानो चाबी है भाई, हमारा तो खुल जाए। अब मैं एक प्रार्थना प्रस्तुत कर रहा हूँ–

साहेब दादा, काकाजी और हर्षदभाई भट्‌ट 1973 में अमेरिका पधारे थे। तब से हमारी प्रार्थना-भावना थी ही कि गुरुजी और उनका मंडल और समाज अमेरिका पधारे। मुझे पता है कि 1998 में जब अमेरिका में काकाजी का 80वां बर्थडॅ मना रहे थे, तब भी हमारी सबकी भावना बनी थी कि गुरुजी आएंगे।

1973 से आज–43 वर्ष हो गए हैं, 43 वरस थया छे। इस वर्ष हम सबके सद्भाग्य से गुरुजी और उनका 100 से भी ऊपर का भक्त मंडल और पवई से भी करीब 100 हरिभक्तों का मंडल वहाँ आने के लिए तैयार है... तो, दो मिनिट प्रार्थना करें कि सबको वीज़ा मिल जाए।

यह धुन इस तरह से करनी है कि जैसी महाराज, काकाजी और सभी गुणातीत स्वरूपों की मरजी हो, हमारा कोई आग्रह नहीं है। लेकिन हमारी प्रार्थना तो है। **43 साल के बाद गुरुजी पहली बार वहाँ आने वाले हैं, तो क्यों ना आजमाएँ...**

आज गुरुजी ने हमारे वैभवभाई का एक दर्शन करवाया। वो अपने पेरन्ट्स के कहने पर पढ़ाई करने के लिए यहाँ ठहरने के लिए आए थे। लेकिन ओपन दिल से उन्होंने कहा कि अंदर से खींचतान हो रही थी। माया का यही चक्कर है। पर, माँ-बाप, संबंधियों और सत्संगियों का सुना और गुरुजी का सुना। तो, आज वो हीरा बन कर हमें अपना अनुभव बता रहे हैं। यह चीज़ सामान्य नहीं है। हमारी यंग लाईफ में बहुत खींचतान होती ही रहती है। जगत का प्रभाव हमें जरूर खींचता ही रहता है। लेकिन, जब उन्होंने कहा कि हमारे एक्शन से आपको हम ख़ुश कर पाएँ। यहाँ उनकी भावना की पराकाष्ठा दिखाई देती है। उसके अंदर एक चीज़ बैठ गई है कि मैं जो कुछ करूँ, वो पहले गुरुजी को पसंद है या नहीं, वो अंदर से पक्का करके ही करूँ। पप्पाजी वही बताते थे–*लॅट यॉर एक्शन्स स्पीक।* तो, आज उनको भी हम प्रणाम करते हैं और आप गुरुजी की ज़्यादा से ज़्यादा सेवा कर पाएँ, गुरुजी की माला के मनके में आपका नाम तो है ही और वह जारी ही रहे। हमारे अन्य संतों ने भी बहुत बड़े आशीर्वाद दिए हैं।

काकाजी जब पहली बार 1973 में आए थे, तो न्यूयॉर्क से फोन आया था और कहा–*मैं शिकागो आ रहा हूँ।* वे वहाँ आए, तो वह दिन था 7 जुलाई 1973, शनिवार–वशीभाई का बर्थडॅ। उससे अच्छा दिन कौन-सा हो सकता है। तो, वहाँ से काकाजी ने कांतिकाका इत्यादि को पत्र लिखा था, वो पत्र संजीवनी में पत्र नंबर 50 है। उसमें से दो-तीन लाईन मैं इसलिए पढ़ रहा हूँ कि **काकाजी जो कहना चाहते थे, वो गुरुजी अब वहाँ आकर एक्स्टॅन्ड करें। आपने इधर कितना अच्छा माहौल बनाया है, तो वह भी काकाजी का ही स्थान है, तो वहाँ भी आप खुले दिल से हमें सपोर्ट देना, हमें गाईडेन्स देना, आशीर्वाद देना...**

प.पू. गुरुजी

...करीब दो-तीन साल पहले की बात है। हमने नक्षु का बर्थडॅ मंदिर में थोड़ा एग्ज़ागरेटेड वे में मनाया था। वो भी खूब एक्साइटेड हो गया था। दूसरे दिन सुबह आकर मुझसे पूछा– *गुरुजी, अब मेरा जन्मदिन फिर कब आएगा?* उस समय उसे पता नहीं था कि एक साल कितना गॅप होता है। नक्षु की बात अलग ढंग से है, पर मुझे भी अब रहता है कि अगला साल कब आएगा। वो इसलिए नहीं कि इतने सारे आते हैं, पर ये सब आते हैं इसलिए–हक़ीक़त में।

जब पहली बार मैंने सुना कि हंसा दीदी आ रही हैं, तो मैं बहुत खुश हो गया। मुझे हुआ कि पप्पाजी आ गए... मेरे मन में थोड़ा ऐसा भी था कि ज्योति बहन आते, पर मैंने ही ज्योति बहन से कहलवाया था कि आप

नहीं आओगे। एईज फैक्टर के कारण हेल्थ भी देखनी होती है। जैसे कि जनवरी या फरवरी में सोखड़ा गया था, मैंने स्वामिजी से भी कहा है– *स्वामी, मैं आपको मना करने आया हूँ। अब आप नहीं आना, मैं हर साल आपके दर्शन करने हरिधाम आ जाऊंगा।*

पर, तब भी किसी भी कारण, जो भी ज़रीया हो–थैंक्स टु मल्कानी अंकल, इन्होंने ज्योति बहन को बुला ही लिया। तो, मेरे ये फंक्शन में काकाजी-पप्पाजी दोनों और ज्योत की बहनें आ गईं। साहेब भी कल से दिल्ली आए हैं, तो बार-बार इनका मॅसेज आता ही रहा कि कब आऊँ? मुझे भी पता है कि साहेब इतनी टूर करके आए हैं, सो मैं कहलवाता रहा कि साहेब को आराम करने देना, आराम से कल शाम को आएँ। तब भी साहेब चाढ़े चार-पौने पांच के करीब आ ही गए। हमारे संत लोग किसी भी तरह मार्च में आ ही जाते हैं... कल मैंने दासस्वामी को सहज ही फोन किया– *दासस्वामी, आप नहीं आ रहे?* दासस्वामी ने कहा– *प्रेमस्वरूप आ रहे हैं न?* मैंने कहा– *यट आई मिस यू।* वे बोले– *यह तो मुझे पता ही है कि मेरे या प्रेमस्वामी में से कोई न हो, तो यू आर ऑल्वेज़ मिसिंग अस।* बात ऐसी है कि यह 'योगी परिवार' है, जो हम साल में इकट्ठे होते हैं। यूं आप हर साल आया करना।

...मैं क्या समझता हूँ कि मेरी घड़ाई में मेईन फेक्टर काकाजी रहे हैं। वो मुझ पर भगवान की बड़ी कृपा कही जाए कि इनमें ऐसी एक 'लव इंटीमसी' कराई। साहेब कई बार कहते हैं–
बापा ने हमें काकाजी और पप्पाजी का संबंध दे करके आपस में एक ऐसे तंतु से जोड़ दिया है कि एक-दूसरों को मिलते हैं, तो एक अलग-सा आनंद प्रगट हो ही जाता है। पर, यह महिमा हम नहीं समझते होंगे, सो एक लेटर में काकाजी ने मुझे खुद स्पष्ट शब्दों में लिखा है–

आज पप्पाजी और लिखने वाले महानुभाव खुद सर्वोच्च ब्राह्मीस्थिति में प्रवेश कर चुके हैं और तुम्हें उनका संपूर्ण जोग दिया है।

आप मेरी बात को अधरवाइज़ मत लेना। बापा का जोग तो संस्था में भी सबको था, पर यहां जो आपसी इंटीमसी नज़र आती है, वह वहां नज़र नहीं आएगी–हक़ीक़त में नहीं आएगी और यह मैं नहीं कहता। मुझे याद है हम छोटे युवक थे, तब भट्ट साहेब के भाई बलवंतभाई भट्ट मुंबई में युवक मंडल के प्रमुख थे और अब बेप्स में ऊंचे दर्जे पर कार्यकर्ता हैं। पर, भट्ट साहेब के आख़िरी दिनों में जब वे अपने यहाँ आए, तो थोड़े दिन ठहरे भी। और... वे बोल कर गए कि तुम्हारे यहां आपस में जो भाव है, वह हमारे यहां नहीं है। इससे भी ज़्यादा, हमारे यहां अनुभाई को तो सब जानते हैं। उनके बड़े बेटे विजय की लड़की की शादी बड़ौदा में हुई है। वो फॅमिली एंटायर्ली प्रमुखस्वामिजी से एटॅच है। यहां सगाई के लिए या ऐसे दिल्ली आए थे, तो स्वाभाविक ही मंदिर आए और यहां का माहौल देखा। उन्होंने भी कहा कि हमारे यहां भी सत्संग तो है, लेकिन तुम लोगों की बात कुछ अलग है। यह साफ़ बताता है कि अगर **हमें सिर्फ बापा का ही संबंध रहता और काकाजी-पप्पाजी का जोग नहीं होता, तो आज हम यह महकमा-आपस का एटॅचमेन्ट देख रहे हैं वो नहीं बनता।**

पर, एक्च्युअली यही सत्संग है।

हमारे कार्ड या कॉम्प्लेक्स में स्लोगन्स भी देखोगे तो लिखा होगा– ***'भगवान के भक्तों में आत्मबुद्धि यही सत्संग है।'*** जैसे यहां काकाजी के कथन में लिखा है–*महाराज के साधु अलग, गुणातीत का साधु अलग* – वैसी यह बात है। उसमें महाराज को हम गौण नहीं करते। इसी तरह मैं कहता हूँ कि सिर्फ बापा का संबंध रहता, तो यह डॅवलपमेंट नहीं होती। **काकाजी और पप्पाजी के ज़रिए, उनकी बदौलत आज हमारे अंदर आपस में एक चिकनाहट है।**

...मैं समझता हूँ कि भगवान की-बापा की मानो मुझ पर कृपा थी। मेरे बारे तो आप जानते हो कि कोई चीज़ पसंद आई, तो लाइफ टाइम आई। एट फर्स्ट साईट मेरे दिमाग़ में यदि कुछ गलत घुस गया, तो उसे सुधारना बड़ा मुश्किल हो जाता है। अभी दिनकरभाई ने जैसे बात की कि गुरुजी विदेश आते ही नहीं हैं। मैं लंडन गया भी था, तो वो पॅरिस का फंक्शन था इसलिए गया था। उसकी वजह यह है कि 1950-आज़ादी के बाद की बात है, जब मैं एस.एस.सी. में था। तब अंग्रेजों के बारे में खुल्ली बात कर सकते थे, मीन्स तब कोई डर नहीं था। हमारे हिस्ट्री के टीचर ने क्लास में अंग्रेजों की जो बातें की थी, उससे प्रेरित होकर मैं सुंदरलाल जैन की 'ब्रिटिश रुल इन इंडिया' किताब लेकर आया था। वह मैंने शायद इंटर में पढ़ी। वो किताब पढ़ कर मेरे दिमाग़ में ऐसा हो गया कि हिंद छोड़ कर कहीं जाना ही नहीं चाहिए। और... मैं तो कहता हूँ कि अपने हिन्दुस्तान जैसा कोई देश नहीं। तब से मेरे में मन में ऐसा कि मुझे भारत छोड़ कर कहीं नहीं जाना है। अजीब बात यह है कि जो जाकर आते हैं, वे यही बोलते हैं–वहाँ जाने जैसा नहीं है...

सच में प्रभु और बापा की कृपा कि उन्होंने काकाजी का जोग दे दिया। डोंगरे महाराज की एक टेप में सुना था, उसमें उन्होंने एक अच्छी बात कही है– *संत ढूँढने से नहीं मिलते, भगवान की कृपा से मिल जाते हैं।* ऐसे ही **हमारे जीवन में काकाजी या पप्पाजी आए, वो जोगीबापा की कृपा से आए हैं।** पूर्व का कोई संस्कार-संबंध होगा, एलिवेटिड चैतन्य होंगे या कुछ भी सोच लें। आगे पूरा करना बाकी होगा, तो हमें जोड़ दिया। तो, इस संबंध को हम समझें कि ओहो, योगीबापा ने हमें काकाजी-पप्पाजी का संबंध दिया है!

मैं बात करता था कि आत्मबुद्धि और प्रीति वही सत्संग है। हमारे यहां नया-नया देवेश आता है। दो साल से जुड़ा है, लेकिन बड़ा होशियार, इंटेलिजेंट है। शुरुआत में वो रोज़ आता-करता रहा, फिर एज़ युज़्युअल–जैसे अपने यहां एक ट्रेडिशन है कि कहीं जाते तो नया है, तो कहते कि चलो हमारे साथ। मैं उसे हर जगह जहां-जहां पधरामनी पर जाता तो ले जाता। वो भी पहले कहीं जाते-आते होंगे या किसी के परिचय में होंगे। पर, अपने यहाँ सबको देख कर वे बोले –

गुरुजी के साथ एटॅच्ड फॅमिलीज़ मिडिल क्लास हैं, ऐसा नहीं कि खूब श्रीमंत लोग हैं। लेकिन उनका आनंद और संतों के प्रति जो एटॅचमेन्ट है, वो कोई अलग-सी चीज़ है।

महाराज ने अक्लमंद की प्रशंसा की है। उनके ग्रुप में कभी कोई छत्तरपुर या कहीं जाने के लिए कहता होगा, तो वो कहता है–*नहीं, हमारा 'परिवार' ठीक है।* इसे सत्संग में 'आत्मबुद्धि और प्रीति' कही जाए।

अभी सब जो बातें करते थे, तो मैं सोच में पड़ गया था कि ये इतनी तारीफ़ कर रहे हैं और दूसरी तरफ मैं अपने आप में देखूं, तो ऐसी कोई बात मेरे अंदर कभी नज़र नहीं आती। पर, सच कहता हूँ कि यह भी काकाजी का एक आशीर्वाद है। काकाजी ने मुझे कहा था– ***'निष्ठा वाले मुक्त तुम्हें मिल जाएँगे।'*** आप लोग भी जानते हो कि मैं कहीं बाहर ज़्यादा घूमता नहीं। पर, हमारा सत्संग-परिवार कैसे बढ़ता है, वह बताता हूँ। मानो मैं एक फॅमिली में गया, उसने अपने रिश्तेदार या फ्रेंड सर्कल वालों को बुलाया हो, तो सत्संग का-अपनेपन का इन्फेक्शन उसे लग जाता है और वो धीरे-धीरे मंदिर से एटॅच हो जाता है।

...अगर मैं खूब ही चाहूँ कि ये सारी सेटिंग ऐसे हो, पर यदि सेवक उसे फॉलो ना करें तो...? मैं सच कहता हूँ, आप लोग देखना – मैं हॉल में ही बैठा रहता हूँ। काग़ज़ वगैरह आते हैं - देखता हूँ, सेवक कुछ पूछ कर जाते हैं तो जवाब देता हूँ। पर, एक निश्चिंतता बन गई है कि अब ये सेवक मैं जैसा चाहता हूँ वैसा ही सब सेटिंग करते हैं। छोटी-सी बात है, मैं दोपहर को सोच भी रहा था कि स्वामिजी नहीं हैं, तो उनकी एबसेन्स में स्टेज पर उनकी मूर्ति कहीं रखी हो, तो अच्छा है। मैं तो स्टेज के पर्दे पर लगाने की सोच कर आया था, पर यहां आकर मैंने देखा तो स्वामिजी जैसे बीच में बैठे हों, वैसी मूर्ति लगा कर रखी है। आप जरूर सोचेंगे कि ओहो, गुरुजी ने कैसा रखा है! पर, वो सेवक फॉलो करते हैं तब हुआ है...

शुरुआत में मैं जब कोठारीस्वामी, शास्त्रीस्वामी, प्रेमस्वामी और दासस्वामी को देखता, तो ऐसा होता कि ये जैसे भगवान साधने की कॉन्सियसनेस में प्रगति करते रहते हैं, मुझे तो इस बारे में कुछ समझ ही नहीं आता। एक बार काकाजी से मेरी बातचीत हुई–

काकाजी ने कहा– *देख, बापा ने तुम्हें साधु बनाया है। तू क्यों सोचता है कि मुझे ऐसा बनना है, उन्हें तुझे जैसा बनाना होगा बना देंगे।*

मैंने उनसे कहा– *यह आज आप कहते हो, फिर बाद में जब कभी मैं अपनी कोई शॉर्टकमिंग्स बताऊंगा तो आप मुझे जरूर कहोगे कि तूने कुछ किया? उन लोगों की तरह तेरी प्रगति कैसे होगी? तब आपका जवाब यह आएगा।*

वे बोले– *एक बात सुन, तुझे कुछ करना ही है न?*

मैंने कहा– *हाँ, पर कठिन मैं नहीं कर पाऊंगा।*

वे बोले– *तू डेइली सुबह बापा को याद करके उठ और सोते समय बापा को याद करके सोना। बस इतना ही तुझे करना है।*

मैंने पूछा– *इससे क्या होगा?*

उन्होंने कहा – ***तुझे पता नहीं है, तेरा सारे दिन और रात का कंट्रोल बापा का हो जाएगा।***

उस समय उन्होंने एक बात बताई थी– *रात को जो भजन करते हैं, वो कैसा है कि रुई की एक गठरी के अंदर जलती दियासलाई डाल दी हो, तो पता नहीं लगेगा और सुलगते हुए गठरी ख़ाक हो जाएगी। इसी तरह रात को भजन करते-करते सो जाओगे, तो जो कन्टीन्युअस 6, 5 या 4 घंटे आप सोओगे, तब तुम्हारे अनकॉन्सियस*

माइंड में भजन ज़ारी ही रहेगा। भले तुम्हें होश नहीं होगा, पर वो चलता रहेगा और वो भीतर की सारी वृत्तियों को धीरे-धीरे ख़ाक कर देगा। यह सायन्स है, तुझे नहीं पता है।

यह बात मेरे दिमाग़ में बैठ गई। तो हरेक देखते हैं कि सुबह हम रॅग्युलर भजन करेंगे और रात को सोते समय भी आप देखोगे कि मैं सो जाऊं, फिर कोई बात नहीं करता। क्योंकि काकाजी ने कहा था – *भजन के बाद कोई बात नहीं करना।* सबको होता होगा कि गुरुजी सो गए। बेशक, मैं सो भी जाता हूँ, पर भजन करते-करते सो जाता हूँ।

तो, मेरा कहना एक ही है कि ऐसे **संत** के साथ अपना निजी संबंध बनाना। वे हमें **हमेशा भगवान की प्रायोरिटी ही बताएँगे।** हम मानते हैं कि हम ये करें या वो करें। जब हमें ऐसे समर्थ मिले हैं, तो भले हमें कुछ भी करना हो, उन्हें पूछ कर करें।

एक छोटी-सी बात करता हूँ। एस.एस.सी. पास करके हमें कॉलेज में जाना था। स्कूल में मैं खूब छोटा लगता था-पतला टोटिया जैसा। मुझे ऐसा विचार आया कि कॉलेज में ज़रा रौब पड़ना चाहिए। सो, मैंने सोचा कि कुछ बॉडी बने तो अच्छा है। मुबंई के मरीनड्राइव पर 'कैवल्यधाम' जोईन करने की इच्छा हुई ताकि थोड़ी बॉडी बन जाए। उन दिनों बापा कपोलवाड़ी में आए थे। मैंने सोचा कि बापा से पूछूं तो सही।

मैंने बापा से बात की, तो वे पूछने लगे – *वो क्या होता है?*

मैंने उन्हें सारा समझाया।

वे बोले– *अच्छा, शरीर बढ़िया करना है...*

मैंने कहा– *हाँ।*

वे बोले– *वहां पैसे देने पड़ेंगे?*

मैंने कहा– *हाँ।*

वे बोले– *एक काम करो, भोयवाडा में अपना मंदिर है। वहाँ जाकर सौ दंडवत् करना; क़वायत भी हो जाएगी और क़ौवत आएगा।*

तरीके बदले-भाषा बदली है, बाकी बात वही की वही आती है कि कोई भी काम करो पहले प्रभु को याद करो। बापा को याद किया, तो सही गाइडन्स मिली।

काकाजी यही बात अलग तरीके से कहते थे– ***कोई भी काम करने से पहले भगवान के नाम का 'नमक' डालो।***

नमक यानि थोड़ा ही। इतना भजन भी हम नहीं करते।

पप्पाजी इसे और ढंग से कहते थे– ***'पहले प्रभु, फिर कदम।'***

पर कई चीज़ें ऐसी होंगी कि हम यह भूल ही जाएंगे। जैसे अभी किसी ने बात की, वो गलत बात नहीं की है। अभी भी मेरे सामने काजू रखो, तो बातें करते-करते मुंह में कब चला जाएगा पता नहीं लगेगा। तो, भगवान भूल कर काम करते हैं न ?

हमें कोई नई चीज़ें समझनी नहीं। आत्मबुद्धि-प्रीति वगैरह की हम बात करते हैं, पर **हमारी जो आत्मबुद्धि और प्रीति है, इससे कई गुना आत्मबुद्धि और प्रीति भगवान और ऐसे संत को हमारे साथ होती है। हमारे लिए उन्हें किसी चीज़ की परवाह नहीं होती।** मैं कल-परसों ही बात कर रहा था कि महाराज का कहना पड़े। आज यह सभा चल रही है; हमारी तो मानो मर्यादा है, तो लेड़िज से बात नहीं कर पाएँगे। पर, साहेबजी तो कर सकते हैं। वे यदि यहां से उठ कर किसी लड़की के साथ खड़े रहकर आधे घंटे बात करते ही रहेंगे, तो हमें मन को कितना दबा कर रखना पड़ेगा कि–'दिव्यभाव रखो।' आप समझते होंगे कि मैं क्या कह रहा हूँ। पर, आज से ढाई सौ साल पहले महाराज बिंदास होकर जेतलपुर की वेश्या के घर गए, पधरामनी की; और तो और संतों को साथ में लेकर गए ! मुक्तानंदस्वामी ने पूछा भी–*महाराज, हमें वहाँ जाना है?* पर, **महाराज ने समाज की कोई परवाह नहीं की थी, वो उनकी भक्त के प्रति आत्मबुद्धि थी।** उसका नाम 'नाथी' था; वो भगवान की होकर जीने के लिए तैयार हो गई थी। आत्मबुद्धि और प्रीति का तो वो दर्शन था। हम क्या आपस में आत्मबुद्धि रखते हैं? **भागवत** भी बताता है कि श्रीकृष्ण भगवान देवकी की कोख से पैदा हुए, लेकिन भगवान देवकी की कोख में गए नहीं थे, उसे सिर्फ भ्रमणा कराई थी। जबकि **परीक्षित की रक्षा करने के लिए भगवान उत्तरा के गर्भ के अंदर गए।** देखो, वो आत्मबुद्धि कैसी थी! सोचें तो–हमारे लिए काकाजी, पप्पाजी वगैरह ने क्या-क्या नहीं किया? तो, आत्मबुद्धि और प्रीति की गहराई को खूब समझें। मुद्दे की बात कि आत्मबुद्धि-प्रीति स्वरूपलक्षी होनी चाहिए। कइयों का नेचर ही चिपकने का होगा, तो सहज ही जगत की भाँति भक्तों के साथ आत्मबुद्धि हो ही जाएगी।

अभी दिनकरभाई की ही बात की कि बैलेंस माइंड... ऐसा 'समता' का नेचर भी होता है... *'मेरे लिए जो कुछ कर रहे हैं, मेरे प्रभु कर रहे हैं या होने देते हैं, जिसका मुझे संबंध है'*– इस समझदारी से जो समता रखे, वो **'स्वरूपलक्षी समता'** है। नेचर से हमारी समता रहे, वो कभी न कभी हिल जाएगी। जैसे पप्पाजी ने एक बात की थी कि–नेचर के अधीन रह कर कह दो या अपने स्व प्रयत्न के फलस्वरूप जैसे मीरां को लगा–*'मोहे जग खारो लाग्यो रे।'* पर, यदि भीतर में कोई बड़ा बवंडर आ जाए, तो सारा खारापन ऊपर आ जाए। 'स्वरूपलक्षी' समता ऐसी है कि कुछ बिगड़ नहीं सकता। 'स्वरूपलक्षी समता' रखने के लिए हमने प्रभु का सर्वोपरि कर्ताहर्तापन माना–वह बोलने के लिए नहीं, बट टाइम पर हम कैसे बीहेव कर जाते हैं या कैसे रियेक्ट कर जाते हैं, तब पता चलता है। मैंने तो यह कई बार आजमाया है। मानो, कोई अपनी पसंद की बात न बनती हों, तो मेरे नेचर के मुताबिक मैं फट् कह देता कि ऐसा नहीं, ऐसा करो। पर, जब से ऐसा रखा कि छोड़ो, काकाजी को जो करना होगा वे करेंगे। तो, मैंने तो यह देखा है कि हमने जो सोचा हो, उससे कई गुना अच्छा एन्ड इन ए वेरी इज़ी वे ये चीज़ बनती ही बनती है और वो भी–सामने वाले से विलिंगली। मेरा कहना यही है कि सारा काम प्रभु करते हैं, हमें तो सिर्फ प्रभु को याद करना है।

एक छोटी बात करता हूँ–कल यहां बाजरे की रोटी का प्रोग्राम बना था। यहां बाजरे की रोटी मिलती नहीं है। पिछले तीन साल से अक्षरविहारीस्वामिजी सबको आनंद कराते हैं और इस बार तो मैंने कह भी दिया–*भई,*

आप हर साल करा ही देना। कल क्या हुआ कि संत जो हर बार आते हैं, उससे थोड़े कम आए, तो रोटी बनाने वाला कोई था ही नहीं। सुहृद्स्वामी ने कहा कि मशीन से फटाफट हो जाएगा। पर, बापूस्वामी ने कहा–*नहीं, हाथ से ही बना कर खिलानी है।* इस बार राजकोट से छः-सात नई लेडीज़ आई हैं। उन्हें पता लगा कि संतों को रोटी बनानी है और वो पहुंच नहीं पाते हैं। वहां परदे वगैरह लगा कर उन्होंने रोटी बना-बना कर दी और सब लोगों ने आनंद किया। ऐसे, काम भगवान ने किया। बहुत छोटी चीज़ है, पर हम समता रखें तो महाराज हमें आनंद कराएँगे ही। हम जो चाहेंगे ऐसा महाराज कर ही देंगे।

अपने यहाँ कहते हैं न ब्रह्मज्ञान कि इन डे टू डे लाइफ! तो, इसे एक्सपीरियन्स करें–यही प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के आशीर्वचन के बाद पुनः प.पू. गुरुजी...

अभी मैंने समता की बात की थी। कइयों का नेचर होता है कि वे समत्व में सहज रहते हैं। वो डिस्टर्ब नहीं होंगे, कुछ भी बन जाए पर वे हिलेंगे ही नहीं। दूसरे डिस्टर्ब या एक्साईट हो जाएँ। मैंने उसका डिफरन्स समझाया कि नेचर से रखी 'समता' अलग और भगवान को राज़ी करने के लिए, उन्हें सर्वोपरि कर्ताहर्ता स्वीकार कर, समता रखने के लिए हम उनसे बल मांगें और जो 'समता' रहे वो अलग।

अभी एक पर्ची आई कि–'समता' तो रही न, भगवान ने दी या हमने खुद रखी। उसमें क्या फर्क पड़ता है?

...गुणातीतानंदस्वामी की एक बात है कि भगवान का बल लेकर काम करना और अपने प्रयत्न के बल से काम करना, उसमें इतना फर्क है, जितना स्त्री को अपने पति का गर्भ और परपुरुष के गर्भ का होता है। तो, वो 'व्यभिचारिणी समता' कही जाएगी और भगवान से प्रार्थना करके, बल लेकर जो समता रखोगे तो वो अपने पति के गर्भ के बराबर, पतिव्रता स्त्री की गिनती में हम रहेंगे।

आख़िर में फिर से, मेरे मन में कुछ ऐसा रह गया है कि नक्षु की तरह मैंने आप सबको आग्रहपूर्वक नहीं कहा है। **अगले साल मेरे 80वें बर्थडॅ पर आप सब, सारा योगी परिवार, योगी परिवार, योगी परिवार–जरूर आना, जरूर आना, जरूर आना।** चाहे वो हमारे संत हों, युवक हों या हमारी प्यारी, प्यारी, प्यारी बहनें हों, सब भाई–भाभियाँ मेरे बर्थ डे पर जरूर आते ही रहना।

संतभगवंत साहेबजी

...भगवान स्वामिनारायण के चार वरदान में से एक वरदान था–*इस ब्रह्मांड में आया हूँ, तो इस ब्रह्मांड में मैं दस-बीस पीढ़ी रहूंगा।* योगीजी महाराज से किसी ने प्रश्न किया–*बापा, आपकी पांचवीं पीढ़ी चलती है न?* योगीजी महाराज बोले–*नहीं, यह पहली पीढ़ी है।* विचार करो, बापा ने कन्टीन्यूएशन की यह कितनी बड़ी बात बताई। मतलब, पूरा ब्रह्मांड डूब जाए और फिर शुरू हो, तब वह दूसरी पीढ़ी मानी जाए, लेकिन यह पहली पीढ़ी है!

प्रभु कहां प्रगट हैं? ऐसे गुणातीत साधु में।

उनका दर्शन क्या है? भगवान स्वामिनारायण ने खुद अपनी हयाती में परब्रह्म तत्त्व का दर्शन करवाया। मुक्तानंदस्वामी जैसे सात्त्विकभाव वाले हज़ारों संत थे; उन्हें सात्त्विकभाव से निकाल कर गुणातीतभाव में रहता कर दिया। सब काठी लोग–सुराखाचर इत्यादि तमोगुणी थे, उन्हें संतों के साथ जोड़कर तमोगुण से बाहर निकाल कर, अक्षरधाम में जीना सिखाया। ब्रह्मानंदस्वामी जैसे पूरे राजसीभाव में फिरते रहते थे। भगवान स्वामिनारायण ने उन्हें राजसीभाव में से निकालकर प्रभु के भाव में रहना सिखाया। वो परब्रह्म तत्त्व का कार्य हम देखते हैं-सुनते हैं।

भगवान स्वामिनारायण ने 49 साल में अपने भौतिक देह का त्याग किया। फिर गुणातीतानंदस्वामी के द्वारा प्रगट रहे। तो, क्या प्रगट हैं? वह यह कि महाराज ने जिस सत्संग की शुरुआत की थी, वह बढ़ता गया। संख्या तो बढ़ती जाती है, लेकिन हठ, मान, ईर्ष्या मेरे-तेरे के भाव में से निकल कर, मिलजुलकर रहो तो जीवन का पूरा आनंद मिलेगा। **गुणातीत संत हठ, मान, ईर्ष्या, तमोगुण, रजोगुण में से हमें बाहर निकालते हैं।** गुणातीतानंदस्वामी ने अपने आश्रितों में यह कराया और महाराज ने खुद उनकी पहचान दी कि ऐसे साधु के द्वारा मैं प्रगट रहूंगा। उन गुणातीतानंदस्वामी के प्रसन्नता के पात्र बने भगतजी महाराज, जागास्वामी, कृष्णजी अदा, शास्त्रीजी महाराज और हम सबने जिनके दर्शन किए, जिसके पास हम बड़े हुए ऐसे योगीजी महाराज थे।

योगीबापा ने भी कैसे हज़ारों लोगों के जीवन का परिवर्तन किया। गुरुजी ने अपने कॉलेज की बात बताई, हम सब एक ही समय के युवक थे। युवान जो भी हरकत करते हैं, उसकी उनसे पहले की पीढ़ी टीका-टिप्पणी ही करती है। कॉलेज में फॅशन शुरु होता है, नॅरो पँट पहनते तो बोलते–*आप लोग यह क्या पहन कर निकले हैं?* थोड़े लम्बे-चौड़े पैंट का फैशन आए, तो कहेंगे– *ये क्या घाघरे जैसी पैंट पहन कर निकलते हो ?* लम्बे बाल रखें तो भी टीका करते हैं और छोटे रखें तो भी टीका करते हैं। समाज युवानों को उनकी हरकतों से डांटता ही रहता था, टीका-टिप्पणी करता रहता था। युगपुरुष योगीजी महाराज आए, उन्होंने युवानों को वे जैसे थे वैसा स्वीकारा। 'एज़ इट इज़'–युवान जैसे थे वैसे हरेक का स्वीकार किया। उन्हें अपने प्रेम से तरबतर कर दिया। अभी हमने प्ले द्वारा गुरुजी के जीवन का दर्शन किया। वीनुभगत यानि महंतस्वामी, प्रभुदास यानि हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी यानि रमेशभाई, गुरुजी यानि दिलीप, प्रेमस्वामी यानि प्रफुल्ल–इन सबको हमने देखा है। प्ले में गुरुजी ने जैसे योगीजी महाराज से कहा–*मैं साधु में नहीं रह पाऊंगा।* पर, बापा ने क्या कहा ? तप करो, व्रत करो, ये करो वो करो, नहीं आप साधु बनने के लिए 'हां' करो, फिर प्रभु सब कुछ करेंगे। गुरुजी को प्रेम में इतना तरबतर किया। बापा के संकल्प से और काकाजी-बा के साथ उन्हें इतना लगाव हो गया कि गुरुजी खुद साधु बन गए, हरिप्रसादस्वामी साधु बन गए। ये प्रेमस्वामी का भी जीवन ऐसा है–प्रफुल्ल में से साधु बन गए, अक्षरविहारीस्वामी साधु बन गए... यह परब्रह्म तत्त्व का दर्शन कराता है कि भिन्न-भिन्न प्रकृति, भिन्न-भिन्न स्वभाव, भिन्न-भिन्न हरकत करने वाले कैसे-कैसे युवान थे।

आपने गुरुजी की यह बात सुनी होगी, फिर भी मैं बताता हूँ। सेवेन्टी के आसपास शुरुआत में ज्योत में 51 बहनें थीं, सोखड़ा में स्वामी के साथ 40 संतों थे, हम 15-20 भाई लोग पप्पाजी के साथ थे। इस तरफ

माणावदर और उस तरफ बॉम्बे–इतना ही अपना 'गुणातीत समाज' था। तब हम मिलते तो कई घंटे तक गोष्ठी होती रहती थी। श्रीजी कॉलोनी में गुरुजी आए थे। उन्होंने खुद यह बात बताई थी कि बापा के कहने पर दादर-मुंबई में संतों ने एक कोठी में रह कर संस्कृत पढ़ना शुरू किया था। तब एक साधु को कॉफी की बहुत आदत थी। किसी हरिभक्त ने नेस्केफ कॉफी का डिब्बा उसे दिया होगा। वो साधु उसे अपने खाने में ताला लगा कर रख देता था। जब कॉफी पीनी हो, तो दूध गरम करके 2 चम्मच कॉफी डालकर पी लेता और फिर उसे ताले में बंद कर देता था। गुरुजी को हुआ कि यह साधु कैसा जो अकेले-अकेले कॉफी पीता है। **इसलिए गुरुजी आज हम सबको कॉफी पिलाते हैं।** तब, एक संत शांतिप्रियस्वामी लॉक खोलने में वेरी एक्सपर्ट थे। जैसे काकाजी कहते थे–'मास्टर की'! उन्हें यदि लोहे की एक तार मिल जाए, उससे कोई भी ताला वे खोल देते थे। रात को दो बजे गुरुजी ने कहा – *शांतिप्रिय ताला खोलना है।* उन्होंने फट् खोल दिया। फिर कॉफी के डिब्बे में से कॉफी निकाल कर उसमें मिट्टी भर कर लॉक कर दिया। वो कॉफी जैसी ही दिखाई देती है। अगले दिन उस संत ने अपनी आदत के मुताबिक सुबह 6 बजे दूध में उसे डालकर गटगटाया, तो वो सोच में पड़ गया। उसे समझ ही नहीं आया कि क्या हो गया? यूं साधु बन कर भी गुरुजी कितना तूफान-मस्ती करते रहते थे। किसी को कहें कि यह साधु ऐसा कर रहा है, तो सब कहेंगे न कि यह साधु है? लेकिन, योगीजी महाराज की आज्ञा से और काका, पप्पा व बा के प्रेम से उन्होंने भगवा वस्त्र छोड़े नहीं, भगवा कपड़े में रहे। काकाजी की जो आज्ञा आई वही किया। मुझे भी मालूम है कि 1969-70 में दिल्ली आने की गुरुजी की खुद की इच्छा नहीं थी। लेकिन, काकाजी ने कहा कि आपको दिल्ली जाना, जाना, जाना ही है। तो, काकाजी के प्रेम और उनकी आज्ञा से यहाँ आए। शुरुआत के समय में यहाँ कोई भक्त नहीं थे, इतना कोई आता-जाता नहीं था। उस समय हमारे अरुणभाई, वल्लभदास, बॅरिस्टर, वी.एस. जैसे और साथ में प्रेमस्वामी जैसे साधु सेवा में आते थे। वर्षों तक ऐसा रहा कि कोई नहीं था, लेकिन **गुरुजी की धीरज, तपस्या और प्रेम से आज हम देखते हैं नॉर्थ इंडिया में कितना अद्भुत समाज हो गया!**

यह गुणातीतभाव में रहे साधु की – परब्रह्म की शक्ति का दर्शन है। योगीजी महाराज, काकाजी और पप्पाजी इनके द्वारा प्रगट हैं। मीन्स महाराज, गुणातीत, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी सबको जीवन जीने की कला सीखाने का जो कार्य करते थे कि हिलमिल कर रहो, आपस-आपस में प्रेम से रहो, एक-दूसरे का माहात्म्य समझो; वो बात ऐसे साधु के प्रेम से जीवन में - ऐक्शन में आती है। गुरुजी के साथ इधर रहते ओ.पी. अग्रवाल, मल्कानी अंकल, विजयपालजी ये–सब गृहस्थों को देखते हैं। सेवक अभिषेक, चिंतन, वैभव, दिव्यांग इन सब लड़कों को देखते हैं। ऐसे सब संतों का फॅन्टास्टिक जीवन देखते हैं। हमारे डॉक्टर कैलाशजी के जीवन में जो परिवर्तन आया, वो ही परब्रह्म तत्त्व का दर्शन है।

ऐसे संत हमारे जैसे दिखाई पड़ते हैं, लेकिन **परब्रह्म शक्ति का धारक साधु जहां भी हो, उनके साथ जुड़ जाने से-उनकी आज्ञा का पालन करने से, उनकी सेवा करने से प्रभु की प्रसन्नता हम पर ढलती है और हमारा जीवन चेइन्ज होता है।** वो चेइन्ज क्या कि हम प्रेम से-हिलमिल कर रहते हैं, निश्चिंत

बन कर रहते हैं। दिव्यांग ने जो स्वामिनारायण मंत्र पर भजन गाया कि कोई भी मुश्किल में, दफ्तर में, कॉलेज, ऑफिस, घर या बाहर कहीं भी कोई प्रॉब्लेम आए, तो प्रभु की मूर्ति की स्मृति–गुरु की मूर्ति की स्मृति करके एक ही मंत्र 'स्वामिनारायण' जपते रहो, सब प्रॉब्लेम सॉल्व हो जाएगी। क्या होगा? कैसे होगा? पर मालूम नहीं। भीतर में इतनी निश्चिंतता, इतनी शांति और इतना आनंद आएगा कि प्रॉब्लेम, प्रॉब्लेम नहीं रहेगी। वो भजन इसलिए इसने बनाया है। गुरुजी के साथ रहने से, गुरुजी की कृपा से जीवन में यह हुआ होगा, तभी यह भजन भीतर से निकलता है न? तो ऐसे युवानों का जीवन चेइन्ज होता हम देखते हैं। गुरुजी यहां सच में बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। जिस तरह समाज का माहौल है, ऐसे समाज में योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी की कृपा से आनंदी दीदी और सब बहनों, गृहस्थों, युवानों और संतों का एक अद्‌भुत समाज खड़ा हो गया, जिसे हम कहते हैं–**'गुणातीतभावना वाला समाज।'** इधर देखो तो आत्मबुद्धि, प्रीति और प्रेम का इतना माहौल है, ऐसा कहीं हुआ नहीं है।

हम दो दिन 'पतंजलि योग' में रामदेवजी महाराज और आचार्यजी के साथ रहे। वो एक अलग समाज है, लेकिन स्वामिनारायण संप्रदाय के बारे में उनसे बात सुन कर खुश हो गए। उन्होंने बताया–
हम, हरिद्वार के संन्यासी, हमसे छोटों को कभी 'पूज्य' लिखते या बोलते नहीं हैं। अपने से बड़े के ही पैर छूते हैं, छोटे के पैर छूते ही नहीं हैं। पर, ***मैंने स्वामिनारायण संप्रदाय के आप जैसे संतों के साथ रहने से सीखा, तो मुझे छोटे बच्चे को परम पूज्य कहने में और सबके पांव छूने में आनंद आता है।***

वैष्णव संप्रदाय के एक आचार्य गोस्वामिजी मुझे मिलते रहते हैं। गुजरात के एक बहुत बड़े गोस्वामी जो वल्लभपुर के माने जाते हैं, उनसे हम इंग्लँण्ड में मिलते रहते हैं। गोस्वामी भक्तों के साथ बहुत मिलते-जुलते नहीं हैं। युवानों के साथ दूर से कथा या बात करते हैं और आशीर्वाद देते हैं। पर, उन गोस्वामी को युवानों को प्रेम करते देखकर और सबसे प्रेम से मिलते-जुलते देख कर मैंने सहज ही कहा– *आप वैष्णव वल्लभपुर में अलग से धर्माचार्य हो, पर इतनी सहजता से भक्तों के साथ जाकर बैठते हो! उसके कंधे पर हाथ लगा कर बातचीत करते हो, युवानों को पूछते हो। आपके प्रेम से मुझे बहुत खुशी हुई है।* वे बोले– ***सच बात बताऊं तो प्रेम करना, मिलजुल कर रहना मैं आपके 'स्वामिनारायण संप्रदाय' से सीखा हूँ।*** देखो, अपने स्वामिनारायण भगवान ने कैसा किया।

ये गुरुजी को देखो। जैसे दिनकरभाई, भरतभाई व सबने बताया कि वे हॉल में बैठते हैं। वही उनका शयन है, बेडरूम है लेकिन वहां सोते नहीं हैं, हॉल में ही सो जाते हैं, वहीं पर खाना, वहीं कॉफी पीना, जो भी आए, उन्हें मिल सकता है। जो भी आए उसके साथ बातचीत कर सकते हैं। सुबह से शाम तक कई लोग आते रहते हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें करते रहते हैं। कैसी भी बात हो – पॉलिटिक्स की हो या धर्म की हो, कोई भी बात प्रेम व सहजता से हर कोई करता है। **वे इतने सरल है कि उनके साथ अपनापन लगता है... लेकिन, फिर भी वे किसी बात से एटॅच नहीं होते, वे प्रभु के साथ एटॅच्ड हैं... यह गुणातीत अवस्था के साधु का दर्शन है।**

ऐसे साधु प्रभु का स्वरूप हैं, उनसे लगाव - प्रेम हो जाए। उनकी बात हम श्रद्धा और विश्वास से मान लें, तो हमारा जीवन धन्य बन जाएगा।

सच, गुरुजी जब दिल्ली आए, तब कोई नहीं था। लेकिन, ये सब मुक्त तो थे ही, इसलिए योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी ने गुरुजी को यहाँ सबके लिए भेजा। तो, आप सबको धन्यवाद व कॉंग्रेच्युलेशन्स कि गुरुजी को सही रूप में पहचान कर, उनकी बात मान कर जो प्रेम से जीवन जीते हैं; तो गुरुजी को कहना पड़ा कि वे निश्चिंत हैं, उससे गुरुजी को तुरंत नींद आ जाती है–ऐसा गुरुजी ने कहा। सच में ऐसे भक्तों को धन्यवाद-वंदन। **ऐसे समाज की रचना करना ही गुणातीत साधु का दर्शन है।** वैसे भी गुरुजी 'गुणातीत' जैसे ही लगते हैं। किसी ने बताया कि एक बार कोई नया व्यक्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की मूर्ति के दर्शन करके आया और गुरुजी से कहा– *आपने खुद अपनी मूर्ति रख दी है...* गुणातीत जैसा दिखाई देना सिर्फ वो बात नहीं है, लेकिन गुणातीतभाव में रहते हैं, उसका भी दर्शन करना वो सही रीत है।

तो, ऐसे गुणातीत साधु के प्राकट्यपर्व पर प्रार्थना करते हैं कि उनकी तबियत अच्छी रहे। अभी इस युग में संप्रदाय-धर्म में झगड़ा क्यों होता है? सब भगवान के लिए-भगवान की प्रसन्नता प्राप्त करने और सुख, शांति व आनंद के लिए तो निकले हैं। फिर भी ऐसा क्यों होता है? उसका कारण पर्सनालिटी क्लॅशिस हैं। यदि अध्यात्म में या इक्वल कॅटेगरी के व्यक्ति इकट्ठे होकर काम करें, तो मानना कि वहाँ भगवान की शक्ति काम कर रही है। आप यहाँ देखो तो अक्षरविहारीस्वामिजी को गुरुजी की कितनी महिमा है! हरिप्रसादस्वामिजी की कितनी महिमा है! दिनकरभाई-भरतभाई की कितनी महिमा है! अश्विनभाई-शांतिभाई की कितनी महिमा है! ये संत बहनों की कितनी महिमा है! बोलने में नहीं है बल्कि रीयल-भीतर में माहात्म्य है। अभी हम सब 'टमटम' में बैठ रहे थे, तो अक्षरविहारीस्वामिजी बोले– *चलो, मैं ड्राईविंग सीट पर बैठ जाता हूँ।* और... हम सबको बिठा कर वे खुद गाड़ी ड्राईव करके लाए। **स्वामी, सबके जीवन को आप ऐसे ही ड्राईव करते रहना।** किसी ने कहा–*स्वामिजी, बापा की गाड़ी चलाते थे।* तो, अक्षरविहारीस्वामिजी बोले–*योगीजी महाराज की गाड़ी मैं चलाता था और वही योगीजी महाराज के स्वरूप इसमें बैठे हैं, उनकी ड्राईविंग की सेवा भी मुझे मिल गई।* हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी खुद योगीरूप हैं, तो भी उन्हें ऐसा माहात्म्य है कि गुरुजी को योगीरूप-काकाजीरूप-प्रभुरूप मानते हैं। हरिप्रसादस्वामी भी गुरुजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, दिनकरभाई, भरतभाई, आश्विनभाई, शांतिभाई सबका माहात्म्य समझते हैं। तो, एक-दूसरे का इतना माहात्म्य केवल प्रभु की कृपा है और उनके गुणातीतभाव का यह दर्शन है।

गुणातीतभाव का यह दर्शन किसने सिखाया? हम साधक थे, तब से **दादुकाका व पप्पाजी** ने महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी, गुरुजी–इन सबका माहात्म्य सिंचन करके हमारे भीतर में इनका इतना माहात्म्य डाला कि योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी ने भले अपने भौतिक देह का त्याग किया, लेकिन हम ब्लँक नहीं हुए, हम कोई विह्वल नहीं हुए कि क्या होगा? क्या करेंगे? कहां जाएँगे? बल्कि वही योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी इन संतों के द्वारा हमारे साथ प्रगट हैं, ऐसा भीतर में क्लीक होता ही है और हो गया। सब निश्चिंत बन गए, किसी को ऐसा नहीं हुआ कि हम अनाथ हो गए।

काकाजी, पप्पाजी, बा, बेन के प्रेम और कृपा की बदौलत ऐसे संतों की हमें प्राप्ति हुई है, तो उनका जतन करना चाहिए। **जतन करना मीन्स–निर्दोषभाव रखना, उनकी आज्ञा में रहना, मिलजुल कर रहना, एक-दूसरे का माहात्म्य समझ कर सेवा करना**–वही उनका जतन किया माना जाता है; तो ऐसा जतन करें।

गुरुजी की तबियत बहुत अच्छी रहे, हमारे साथ लंबे समय तक निरामय रूप में रहें–यही प्रभु चरणों-गुरु चरणों में उनके प्राकट्य पर हम सबकी प्रार्थना। सबको जय स्वामिनारायण।

मुझे बताया गया कि अमेरिका-इंग्लैंण्ड से सब भक्त लोग आये हैं, वे सब छपैया के टूर पर जा रहे थे। तो, मैंने पंकज और अरुण को बताया कि 13 मार्च को गुरुजी का प्रागट्य पर्व है। सो, प्रोग्राम ऐसा रखना कि हम सब 13 मार्च को गुरुजी का प्रागट्य पर्व एटेंड कर सकें। उन दोनों ने ऐसा ही किया, उसके लिए उनके भी आभारी हैं। सबको गुरुजी के माहात्म्य का दर्शन हुआ। **इस मंदिर और ठाकुरजी का दर्शन हुआ, सब संतों, बहनों का दर्शन हुआ, वही यात्रा का विशेष रूप से फल है।**

तो, हम सब मिल कर ऐसे संतों के माहात्म्य में रहकर प्रभुभक्ति का आनंद करें और स्वामिनारायण भगवान ने मिलजुल कर रहने की जीवन की यह जो कला सिखाई है, वह ऐसे संतों द्वारा हमारे ऐक्शन में आए और पूरा आनंदमय-भक्तिमय जीवन बना रहे–ऐसी प्रभु चरणों में, गुरु चरणों में, गुरुजी और अक्षरविहारीस्वामिजी के चरणों में प्रार्थना।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

...आज आप सबने बताया कि गुरुजी का जन्मदिन है, मगर मेरी सोच के मुताबिक आज साहेबजी और मेरा भी जन्मदिन है। आप लोगों को ख्याल पड़ा? क्योंकि–गुरुजी, मैं, हरिप्रसादस्वामिजी, संतभगवंत साहेबजी हम सब एक ही हैं। अलग दिखाई पड़ता है, वो है। मगर जो **'गुणातीतभाव'** है, वो **सब मैं एक ही है।** तो, **आज वो गुणातीतभाव का जन्मदिन है,** वो हम सबका एक ही है। इसलिए मैं यह कहता हूँ।

आज मैं ज़्यादा कुछ नहीं कहना चाहता हूँ, सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूँ कि जो कुछ भी अभी गुरुजी ने हमें समझाया, साहेबजी ने भी हमें जो बताया, वो बात हमारी समझ में आ जाए। और दूसरी बात–जो मैं तो हर बार बोलता हूँ–कल भी मैंने बताया था कि दूसरा कुछ हमारी समझ में आए या न आए, मगर **हमें गुरुजी के साथ इतना लगाव हो कि उनकी कोई बात हम टाल नहीं सकते।** ये हमारी बड़े से बड़ी एचीवमेन्ट है, तो ये एचीवमेन्ट आगे बढ़े और गुरुजी की कृपा हम पर बरसे, तो हमारी साधना सरल हो जाएगी। हमारे काम-काज भी सरल हो जाएँगे। धुन की तीव्रता जो भजन में बताई, वह भी बढ़ती जाएगी और उसका परिणाम अच्छा आएगा। शुरुआत में तो कुछ मुश्किलें या तकलीफें रहती हैं, मगर बाद में सब ठीक हो जाता है। तो यह श्रद्धा और धीरज का विषय है, उसे रखने के लिए गुरुजी बहुत परिश्रम करते हैं। सबके साथ बहुत प्रेम करते हैं। सो, हम सब काकाजी-पप्पाजी के बहुत कृपापात्र हैं।

ज़्यादा हमें कुछ कहना नहीं, हम तो सिर्फ सेवा करने के लिए आए हैं। गुरुजी की ये स्पेश्यल महिमा है, जो हमें यहां बिठा देते हैं...

❀❀❀

संतभगवंत साहेबजी के अमृतपर्व के अंतर्गत 'उपासनाधाम-वेमार' में धाम, धामी, मुक्त की मूर्तिप्रतिष्ठा...

अकसर यही कहा जाता है – *'माया परम दुःखदायी...'* परंतु, **भगवान स्वामिनारायण** ने तो अपने आश्रितों के लिए अद्‌भुत आशीर्वाद दिए –

'भगवान के भक्त के लिए तो माया दुःखदायी नहीं, अतिशय सुखदायी है। भगवान का भक्त जो-जो करता है, वह तो केवल भगवान और भगवान के भक्त की सेवा के लिए करता है।'

वाकई, वेमार गाँव में 'उपासना मंदिर' बनाने हेतु, पू. चंद्रकांतभाई-सौ. शीला बहन एवं परिवार द्वारा सेवा में दी गई भूमि भगवान स्वामिनारायण के उपरोक्त आशीर्वाद को सार्थक करती है।

और... मूर्तिप्रतिष्ठा के साथ-साथ, **संतभगवंत साहेबजी** की **प्राकट्य तिथि – धुलेन्डी** एवं **दिनाँक 23** दोनों के समन्वय के पवित्र दिन उनका **'अमृत महोत्सव'** मनाया गया। इसी निमित्त 19 से 23 मार्च वेमार गाँव में एकत्रित होकर बृहद् गुणातीत समाज के मुक्तों ने आनंदकिल्लोल-भक्ति अदा की।

19 की सायं संतभगवंत साहेबजी द्वारा अमृतद्वार के उद्‌घाटन उपरांत श्री ठाकुरजी की आरती करके, पू. अश्विनभाई ने संतभगवंत साहेबजी अमृत महापर्व एवं श्री मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम महाराज की मूर्तिप्रतिष्ठा के मंगल महोत्सव के शुभारंभ की घोषणा की। अनुपम मिशन-संतभगवंत साहेबजी से घनिष्टता से जुड़े अलग-अलग प्रदेश-विदेश के मुक्तों ने भक्तिनृत्य द्वारा भावना व्यक्त की। मुक्तों ने **75 फुट लंबा** विशिष्ट **'अमृत हार'** संतभगवंत साहेबजी, प.पू. अश्विनभाई, प.पू. शांतिभाई एवं प.पू. पूनमभाई को उनके अमृतवर्ष निमित्त एक साथ अर्पण किया। जसदण मंडल के पू. हिम्मतभाई एवं पू. अश्विनभाई द्वारा **सात हज़ार पाँच सौ मनकों** से बनाई **संतभगवंत साहेबजी की मूर्ति** का दिव्य दर्शन हुआ। अनुपम मिशन की प्रथम **'एनरॉयड एप्लीकेशन'**, **दिव्यदर्शनम्** सी.डी. व एलबम का मुक्तार्पण हुआ। **प.पू. भागवत ऋषिजी** के आशिष के बाद अंत में **प.पू. साहेबजी** ने आशीर्वाद दिया–

...अमृतपर्व तो इस वर्ष सच में अश्विनभाई, शांतिभाई और पूनमभाई का है। *इनके अमृतपर्व पर मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा हुई है, उसका मुझे खूब आनंद है। 75 वर्ष की आयु में भी ये तीनों 20-25 वर्ष के युवा की भाँति उत्साह व उमंग से भागदौड़ करते हैं... इन्होंने ही सभी में उत्साह-उमंग जगाया है...*

अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने हमें दी। महाराज गुणातीत को साथ में लेकर आए, पर यदि उन्हें पहचाना न होता – समझा न होता तो क्या होता? भगवान कृष्ण, भगवान राम जब प्रगट थे, तो उन्हें कोई पहचान न सका। इसी प्रकार महाराज गुणातीत को लेकर आए और हमें कृपा से शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज द्वारा अक्षरपुरुषोत्तम का ज्ञान और उपासना की बातें मिली। मध्यमंदिर में उनकी मूर्ति प्रतिष्ठित हुई। ऐसे संतों के द्वारा तत्कालीन मुक्तों की पहचान हुई और... योगी बापा ने काकाजी, पप्पाजी, प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी जैसे गुणातीत स्वरूपों की भेंट दी। उनका प्रेम पाया, लगाव के कारण उनकी बातें स्वीकार की। अश्विनभाई, शांतिभाई, गुरुजी जैसे संत, ज्योति बहन, देवी बहन, प्रेम बहन, सुमन बहन, आनंदी दीदी प्राप्त हुए। ***ऐसे संत हमारे साथ हैं, वही हमारे लिए उत्सव है।***

ऐसे संतों की हाज़िरी हमारे भीतर निष्काम भक्ति प्रर्वताती है। ***ऐसे संतों के कारण ऐसे कार्य संभव होते हैं। व्यक्ति कितना ही परिश्रम-पुरुषार्थ करे, लेकिन भगवान की कृपा के सिवा दिव्यता प्रगटती नहीं।*** *ऐसे संतों के द्वारा भगवान प्रगट हैं... वेमार गाँव का एक-एक व्यक्ति अभिनंदन योग्य है... सबके परिश्रम से खूब सुंदर मंदिर बना है। इसकी मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा दिव्य योगीबापा के कृपापात्र हरिप्रसादस्वामी के हाथों होगी... जो युवाओं, बालकों, गृहस्थों या जो-जो सहभागी बने हैं, उन सभी को प्रभु तन, मन, धन और आत्मा से खूब-खूब सुखी रखें... सभी मिलजुल कर एक होकर पाँच दिन भक्ति का आनंद प्राप्त करे, इस हेतु प्रभु बल, बुद्धि, प्रेरणा, जाग्रतता दें – ऐसी प्रार्थना।*

20 की सुबह **'युवा अधिवेशन'** में **प.पू. अश्विनभाई, गोस्वामी श्री द्वारकेशलालजी महाराज** ने आशीर्वाद दिया। कई साधक एवं गृहस्थ भाइयों-बहनों ने आशिष याचना की। पुष्प हार अर्पण द्वारा कई मुक्तों ने प.पू. साहेबजी के प्रति भक्ति अदा की। **'आराधना'** कीर्तन संग्रह पुस्तक का विमोचन हुआ और इस सत्र के अंत में **प.पू. साहेबजी** ने आशिष वर्षा की –

...सच में स्वामिनारायण भगवान, गुणातीतानंदस्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, प्रमुखस्वामिजी, महंतस्वामिजी, हरिप्रसादस्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, बा, बेन की अपरंपार कृपा से हमें ऐसे कार्यक्रम में संतों का लाभ मिल गया... प्रार्थना करते हैं कि जिन्होंने सेवा-भक्ति अदा की है, सभी को प्रभु सुखी करें... बस ***भगवान को यही कराना है कि मिलजुल कर, एक-दूजे के पूरक बन कर भक्ति करें...*** *प्रगट सत्पुरुष-सभी संतों– प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, अश्विनभाई, शांतिभाई, गुरुजी, दिनकरभाई, ज्योति बहन, देवी बहन, दीदी, प्रेम बहन व संत बहनें, आनंदी दीदी–इन संतों के साथ आत्मबुद्धि और प्रीति हो। उन्हें राज़ी करने यदि भाव प्रकटे तो सब संभव है। हमारे जीवन में बदलाव आता है।* ***शुद्ध उपासना के सिवा संपूर्ण रूपांतर संभव ही नहीं है...*** *मूल बात तो एक ही है कि किसी का भी स्वभाव-प्रकृति को देखे-गिने बिना, निर्दोषभाव से मिलजुल कर सत्पुरुष की आज्ञा से भक्ति करें, तो जरूर ये सभी बातें एक्शन में आएँगी – ऐसा हम सभी का जीवन बने, यही साक्षात् प्रभु के चरणों में प्रार्थना।*

सायं **'शालीन मानवरत्न एवॉर्ड'** सभा में समाज के विविध क्षेत्रों में अमूल्य कार्य-सेवा करने वाले महानुभावों को **'अनुपम मिशन'** की ओर से पुरस्कृत किया गया। **संतभगवंत साहेबजी** ने आशीर्दान देते हुए कहा –

...योगीजी महाराज अद्‌भुत साधु के स्वरूप थे, बहुत छुपे रहे... *पर उन्होंने युवकों के लिए श्रेष्ठ शस्त्र 'प्रेम' का उपयोग किया।* ***उन्होंने युवकों की शक्ति को चॅनलाईज़ करके मानव उत्थान के कार्य में जिस प्रकार से ओतप्रोत किया है,*** *उसका शब्दों में वर्णन नहीं हो सकता। उन्होंने इतना कुछ सिखाया है-दिया है... उनका प्रेम ऐसा था कि उसमें खींचे चले जाते थे... भगवान स्वामिनारायण ने चालीस साल की उम्र के बाद तो मंदिर बनाए। उन्होंने भी सर्वप्रथम तो मानव उत्थान का ही कार्य किया... लोगों के साथ उनके घर पर रहे, उनके जैसा भोजन किया, उनके जैसी बोली सीखी, उनके जैसे कपड़े पहने। जड़-पशु जैसा जीवन जीते मानव को प्रेम देकर शुद्ध-पवित्र जीवन जीता किया। अहिंसक बनाया, प्रेम देकर एक-दूजे में भाईचारा कराया। स्वच्छता का महत्त्व बताया।*

*'**मानव को बदल देना यही सच्चा धर्म है।**' ऐसे परिवर्तन को देख कर इसलिए सर जॉन माल्कम राजकोट में उनके दर्शन करने के लिए आए थे। सच में उन्होंने समाज का उत्थान किया... 1964 तक बोचासण संस्था में मंदिर बनाने पर ज़ोर था, लेकिन शिक्षण या हेल्थ की कोई बात नहीं थी। बापा सच में आर्षदृष्टा पुरुष थे। किन शब्दों में उनकी बात करें ? उन्होंने जो कहा वो आश्चर्यकारक कहा जाए। 1958 में हमने विद्यानगर में बापा की पधरामनी कराई। बापा ने बोचासण कमीटी से कहा कि छात्रालय बनाएँ। ट्रस्टीयों ने मना की कि बापा मंदिर एवं भक्तों की ही इतनी समस्या है। ये जवान लड़कों के पीछे क्यों नई समस्या झेलनी ? फिर बापा ने मुझे पत्र लिखा कि आठ वर्ष से मैं छात्रालय के बारे में बात करता हूँ, लेकिन गाड़ी पटरी पर नहीं आती। तुम सब युवक अब तैयार हो जाओ। बापा ने ऐसा उमंग-उत्साह से भरा काग़ज़ भेजा... भगवान ने जो सर्जन किया है, उसमें श्रेष्ठ सर्जन 'मानव' है। सो, बापा ने कहा **भगवान के श्रेष्ठ सर्जन मानव के लड़के-लड़कियों को अच्छा बनाने-एज्युकेट करने जैसी कोई भक्ति नहीं है।** इस हेतु जितना करो वही मेवा है। तब सभी माने और 1965 में सबसे पहला 'अक्षरपुरुषोत्तम छात्रालय' बना। अब तो शिक्षा के क्षेत्र में कितना कार्य हो रहा है, पर बापा ने यह शुरुआत की... हम योगीजी महाराज के वचन से, काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामिजी के मार्गदर्शन से इस मार्ग पर निकले हैं और देश-विदेश में सबका साथ-सहकार मिला है, तो दासत्वभक्ति करने में कदम पीछे न करें – ऐसे बलवान बनें...*

21 की सुबह **'माहात्म्य दर्शन'** सभा के लिए सभी एकत्रित हुए। **प.पू. शांतिभाई साहेब** एवं **प.पू. ज्योति बहन** ने आशीर्वाद दिया। कई महानुभावों ने हृदयोद्गार कहे, तो कइयों ने कलात्मक हार से भावना व्यक्त की। **'साहेबजी शरणम्'**, **'शाश्वत् प्रार्थनामत'** ऑडियो सी.डी., **'परामृत'** वीडियो डी.वी.डी. एवं **'छे माहात्म्यसभर वाणी सदा भाग-6'** पुस्तक का विमोचन हुआ। **संतभगवंत साहेबजी** ने आशिष वर्षा की –

...योगीबापा कहते कि तुम्हारा हृदय भगवा करना है। बड़े पुरुष के हेत और आज्ञा से जीवन जीते हुए साधुता के गुण आ जाते हैं। ये संतों ने गाँव घूम-घूम कर कैसा अद्भुत समाज तैयार किया ? यही उनकी साधुता का दर्शन है...

सायं – **भगतजी महाराज** के **प्राकट्योत्सव** की सभा में कई मुक्तों ने संतभगवंत साहेबजी का माहात्म्य दर्शन कराया और कइयों ने कलात्मक हार अर्पण करके भक्ति अदा की। **संतभगवंत साहेबजी** ने आशिष देते हुए कहा –

*...होली के दिन भगतजी महाराज ने प्रगट होकर साकार ब्रह्म गुणातीतानंदस्वामी की सच्ची पहचान हम सबको कराई... **आत्मा में विराजमान परमात्मा के अंश को प्रकाशित करने के लिए साकार भगवान के स्वरूप की जरूरत पड़ती है।** गुणातीतानंदस्वामी ने सरल तरीके से समझाते हुए कहा कि काष्ट में अग्नि है, लेकिन प्रज्वलित अग्नि के संपर्क में आए तो ही लकड़ी से अग्नि प्रकटती है। इसी प्रकार आत्मा में परमात्मा है, पर उन्हें प्रकाशित करने के लिए मानवरूप धारी परमात्मा का संपर्क, उनका आसरा और कृपा अवश्य चाहिए, चाहिए और चाहिए ही। इसलिए सहजानंदस्वामी ने क़ौल दिया कि गुणातीत संत द्वारा वे हमेशा प्रगट रहेंगे। पर, हम मायिक हैं... प्रभु की अनुभूति करने के लिए, संत और मुक्तों की माहात्म्ययुक्त सेवा करने में बुद्धि श्रेष्ठ साधन है। लेकिन, यदि उसमें नकारात्मक भाव उत्पन्न हो, तो वही बुद्धि मानव का भयंकर अहित करती है।*

मानवस्वरूप में प्रभु को देखने के लिए बुद्धि आड़े आती है। यदि ऐसे सत्पुरुष के प्रति आत्मबुद्धि और प्रीति हो और उनकी बात मानें तो यह मर्म पकड़ा जाए। भगतजी महाराज को गोपाळानंदस्वामी से असाधारण लगाव था और गोपाळानंदस्वामी के 12 साल समागम के बाद उन्होंने ही भगतजी महाराज से कहा– प्रागजी, तुझे जो क़ौल दे रहा हूँ, वो जूनागढ़ के जोगी पूरा करेंगे... गुणातीतानंदस्वामी का समागम करके जब भगतजी महाराज की मायूसी दूर हुई, तब उन्हें एहसास हुआ कि महाराज ने जो वरदान दिया था कि अपने साधु द्वारा प्रगट रहूँगा, वो यहाँ प्रतीत होता है... हम पर भगतजी महाराज ने सच में खूब कृपा की। खुद कितने अपमान सहे, तकलीफ सहन की... ऐसे गुणातीत साधु की पहचान करवा कर भगतजी महाराज और शास्त्रीजी महाराज ने हम पर बहुत कृपा की... 'अक्षरपुरुषोत्तम' के सिद्धांत का प्रवर्तन कराया। ऐसे साधु के प्रति हेत हो, तो उनकी बात-आज्ञा मानी जाए। जिसके प्रति लगाव हो, उन्हें राज़ी करने भावना प्रगटती है। 'प्रेम' श्रेष्ठ शस्त्र है। ***साधु से प्रेम हो तो बेड़ा पार हो जाए और जगत में प्रेम हो तो जन्म-मरण के चक्कर में घूमते रहेंगे।*** *जिसके प्रति प्रेम हो, उसके प्रति समर्पणभाव अपनेआप प्रगट होता है, प्रगटाना नहीं पड़ता... सच, भगतजी महाराज हमारे लिए पूज्यनीय-वंदनीय हैं। उनका प्राकट्य दिन हमारे लिए बहुत बड़ा दिन कहा जाए। ऐसे दिव्य पुरुष हमें मिले। जो जीवन जीकर प्रेरणा रूप बने। शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी-पप्पाजी, बा-बेन का जीवन देखें। अभी प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, अश्विनभाई, शांतिभाई, रतिभाई, दिनकरभाई, भरतभाई और ऐसी संत बहनों का जीवन देखें... उपासना की शुद्धि हो तो कभी भावफेर न हो। हर एक परिस्थिति में हम पास हो जाएँ और अंतर में टंडक रहे। भगतजी महाराज के प्रागट्य पर्व पर शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी व प्रत्यक्ष स्वरूपों द्वारा शुद्ध उपासना समझ कर,* ***आपस-आपस में सुहृद्भाव से मिलजुल कर निर्दोषभाव से भक्ति करेंगे, तो 'अक्षरधाम' यहीं है...***

संतभगवंत साहेबजी के दिव्य प्रेम के वश देश-विदेश की सत्संगी लड़कियों ने **'पॉकेट मनी'** से बचाई राशि एकत्रित करके, पूरे दिन में संतभगवंत साहेबजी जिन वस्तुओं का प्रयोग करते हैं वह अर्पण की। ***'साहेब हे दुलारा'*** ऑडियो सी.डी. अनावरण के बाद अंत में **प.पू. अध्यात्मानंदस्वामिजी** एवं **महामंडलेश्वर प.पू. नित्यानंदबाबा** ने आशीर्वाद दिया।

22 मार्च की सुबह **श्रीजी मुक्ताक्षरपुरुषोत्तम की मूर्ति** की प्राणप्रतिष्ठा निमित्त देश-विदेश से आए 500 से भी अधिक युगल यजमानों ने **महायज्ञ** का अमूल्य लाभ लिया। ऋषिकुमार एवं ऋषिकन्या के रूप में स्वयंसेवकों ने मुक्तों की हर सुविधा का खूब ध्यान रखा। **प.पू. शांतिभाई** के नेतृत्व में **'अनुपम सूरवृंद'** के भाइयों ने मंत्रोचार से वातावरण दिव्यता से भर दिया। यज्ञ की फलश्रुति रूप आशीर्वाद बरसाते हुए **संतभगवंत साहेबजी** ने कहा–

हे प्रभु आप विराज रहे हो, तो वेमार मंदिर के कार्य में जिस-जिसने तन, मन, धन और आत्मा से सेवा की, इन सभी की भक्ति स्वीकार कर सबको देहभाव से परे करके अक्षरधाम के सुख से सुखी करना। इस लोक और परलोक में कुटुंबसहित सुखी रखना।

सायं **नगरयात्रा** द्वारा प्रतिष्ठित होने वाली मूर्तियों के दर्शन से अपरिचित मुक्तों का भी कल्याण हुआ। शोभायात्रा करके मंदिर के प्रांगण में बिराजते श्रीठाकुरजी का स्वागत करते हुए, अनुपम मिशन से संलग्न अलग-अलग प्रदेश की बालिकाओं ने **'ऋतुवंदना'** अर्थात् ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु, शरद ऋतु, शिशिर ऋतु एवं वसंत ऋतु के प्रतीक रूप गुरुवंदना करके भक्ति अदा की। अंत में **संतभगवंत साहेबजी** ने सब की भक्ति से राज़ी होते हुए आशीर्वाद दिया –

...स्वामिनारायण भगवान अपने धाम और मुक्तसहित वेमार के नवनिर्मित मंदिर में बिराज रहे हैं, तब उसकी पूर्व संध्या पर नगरयात्रा में सबको दर्शन देकर मंदिर के प्रांगण में बिराज गए। देश-विदेश के युवानों ने उनका अद्भुत स्वागत किया... छोटी बच्ची से लेकर युवतियों तक ने सभी को खुश कर दिया। भजन के साथ उनका तालमेल खूब अच्छा था। योगीजी महाराज को यह कराना था। ***ध्यान, माला, तप के पीछे भगवान को राज़ी करने का भाव होना चाहिए। तप किसलिए करते हैं? भगवान को राज़ी करने के लिए... कोई साधन या किसी चीज़ से राज़ी नहीं होते, उन्हें राज़ी करने की भावना से जो करो, उससे वे राज़ी होते हैं... भगवान को राज़ी करने भाव अर्पण करें, वह भी तप है...***

सच में स्वामिनारायण भगवान ने संप्रदाय में अद्भुतता प्रगटाई। वर्ना धर्म-नियम में रह कर, साधुता के मार्ग पर चलो, धीर-गंभीर रहो – उसके बजाय सभी हँसें-खेलें-कूदें! क्योंकि कैसी अद्भुत प्राप्ति हुई है... योगीजी महाराज ने तो अपरंपार कृपा की कि काकाजी, पप्पाजी, प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी, गुरुजी, बा-बेन जैसे दिव्य स्वरूपों की भेंट दी। इन स्वरूपों की कृपा से अश्विनभाई, शांतिभाई, रतिकाका, दिनकरभाई, भरतभाई, संतों व संत बहनों के सान्निध्य में उत्सव मनाने का मौका मिला है... छः ऋतुओं में स्वर्ण की डोर एक समान रहती है। इस प्रकार हर संजोगों में हम सब संप, सुहृद्भाव व एकता से मिलजुल कर जिस भी स्वरूप से हेत हुआ हो, उनकी आज्ञा में रह कर सभी में निर्दोषभाव रख कर प्रभुभक्ति करें और प्रभु प्रसन्नता के पात्र बनें...

तत्पश्चात्, प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरुपों के वरद् हस्तों **श्री नीलकंठ वर्णी** की **मूर्ति प्राणप्रतिष्ठा** होने के बाद कीर्तन संध्या का लाभ लिया।

23 मार्च की सुबह **संतभगवंत साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. कोठारीस्वामिजी, प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. अश्विनभाई, प.पू. दिनकरभाई, पू. प्रेमस्वरूपस्वामी, पू. रतिकाका, पू. भरतभाई एवं पू. हिमंतस्वामी** के वरद् हस्तों मूर्तिप्रतिष्ठा विधिवत् संपन्न हुई। **पू. मनोजभाई सोनी** ने वैदिक मंत्रोच्चार से वातावरण में दिव्यता भर दी। प.पू. दिनकरभाई, प.पू. शांतिभाई, प.पू. अश्विनभाई ने आशीर्वाद दिया। गुणातीत समाज के सिरछत्र **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** के आगमन के बाद, अति सुंदर श्रृंगारित श्री ठाकुरजी की आरती की गई।

दिल्ली एवं **पवई** के मुक्तों की ओर से प.पू. गुरुजी **स्वर्णरसित रजत हार** एवं **पाघ** संतभगवंत साहेबजी को अर्पित करने के लिए ले गए थे। इस सांकेतिक हार में गुणातीत समाज, काकाजी-पप्पाजी और अनुपम मिशन के लोगो के साथ प्रथम आठ भाइयों की मूर्ति अंकित थी। संतभगवंत साहेबजी गुरुहरि योगीजी महाराज का स्वरूप हैं, उसके प्रतीक रूप पाघ में गुरुहरि योगीजी

महाराज की मूर्ति अंकित थी। हार व पाघ अर्पण करने से पूर्व **प.पू. वशीभाई** ने **प.पू. गुरुजी** की ओर से निम्न हृदयभावना पढ़ी–

*1965-66 में **गुरुवर्य योगीबापा** ने इन भाइयों को गेरूए वस्त्र देकर साधु बनाने की बात की थी,*

*परंतु इसी दौरान वे बार-बार कहते, अक्षरभुवन में भी कई बार बोले–**'नया उठाव लेना है...'***

*इस बात को मानो चरितार्थ करते हुए चार पंखुड़ी वाले **'गुणातीत समाज'** का गठन करने,*
*'स्वामिनारायण संप्रदाय' में नई ही छाप छोड़ते, **'कर्मयोगी साधु'** हमें दिए और तब उन्होंने कहा था–*
तुम्हें भगवा कपड़े नहीं देने, अंतर भगवा करना है। तुम जगत में नहीं जाओगे।
*इन आशीर्वाद के साथ गुरुवर्य योगीबापा ने उन्हें विद्यानगर भेजा और संतभगवंत साहेब के नेतृत्व में आठ भाइयों ने **गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी और प.पू. सोनाबा की निश्रा में** जो साधना की वह सच में अनोखी और अद्‌भुत है।*
***पू. अश्विनभाई-शांतिभाई** जैसे वडील संतों के मुखारविंद से भी कई बार सुना है–*
***काकाजी** ने हमें कहा था–**'तुम आठ एक होकर रहना।'** हमारी यह एकता रंग लाई है।*
रुढ़िगत ज्ञान की परिभाषा में कहा जाता है–धर्म, ज्ञान, वैराग्ययुक्त भक्ति जिसमें हो वह **'एकांतिक'**।
*लेकिन, **गुरुहरि काकाजी** कहते–**'प्रगट के संबंध से सत्संग की बारहखड़ी ही बदल जाती है।'***
*और... **'एकता ही एकांतिकभाव'** – गुरुवर्य बापा के दिए इस सूत्र का उन्होंने रहस्य समझाया।*
दादुभाई का (प.पू. काकाजी का) ज्ञान–'अद्यतन ज्ञान' कह कर, भले कोई इस रहस्य को झुठलाए।
लेकिन, प.पू. योगीबापा तो 'अध्यात्म' के सर्वोच्च शिखर पर विराजती विभूति!
उनके द्वारा दिया गया यह रहस्य है।
इन भाइयों को गुरुहरि काकाजी का जोग और उनके प्रति लगाव था, सो उन्होंने यह रहस्य को पकड़ा और उस वचन से... संतभगवंत साहेब के नेतृत्व में आठों भाई एकत्व से रहे।
तो, आज सत्संग में उनकी एकांतिकी स्थिति की सभी प्रशंसा करते हैं।
*उसी के प्रतीकरूप **अमृतपर्व पर संतभगवंत साहेब** को यह हार और पाघ अर्पण करके सम्मानित करते हैं।*

संतभगवंत साहेबजी को हार व पाघ अर्पण करते कि स्वामीसेवकभाव से संतभगवंत साहेबजी ने वह हार एवं पाघ प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को पहले अर्पण की। तदोपरांत प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई एवं पू. आशिष ने संतभगवंत साहेबजी को अर्पण की।

मूर्तिप्रतिष्ठा का कार्यक्रम संपन्न होने के बाद संतभगवंत साहेबजी के अमृतपर्व की सभा के लिए सभामंडप की ओर सभी ने प्रस्थान किया।

अमृतपर्व की इस दिव्य सभा में संतभगवंत साहेबजी के लिए निष्काम धर्म के प्रतीक मोर का आसन बनाया था। प.पू. अश्विनभाई एवं प.पू. शांतिभाई ने मंचस्थ स्वरुपों का पुष्पहार अर्पण करके स्वागत किया। महंतश्री देवप्रसादजी महाराजश्री ने संतभगवंत साहेबजी की अनोखी प्रतिभा पर प्रकाश ड़ालते हुए आशीर्वाद

दिया। केन्द्रों के मुक्तों ने कलात्मक हार एवं स्मृति भेंट संतभगवंत साहेबजी को अर्पण करके भक्ति अदा की। प्रत्यक्ष स्वरूपों के आशीर्वाद हेतु **प.पू. अश्विनभाई** ने प्रार्थना करते हुए कहा –

...आज संतभगवंत जो हमें दर्शन दे रहे हैं, उनके आशीर्वाद लेकर धन्य होने का अवसर है... ***हम भले अलग-अलग प्रदेश और संस्थाओं के माध्यम से सत्पुरुष के साथ जुड़े हुए हैं, लेकिन हम सभी की प्रार्थना एक ही है और आपके आशीर्वाद सभी के लिए समान हैं।*** *आपके मन में कोई बड़ा-छोटा, अपना-पराया नहीं है। ऐसा कोई भाव आपके हृदय में नहीं। लेकिन, कभी हमारे मन में आपके प्रति ऐसा मनुष्यभाव आया होगा। जब भगवान विराजे हैं और आप मयूर आसन पर बिराजे हो, तो सभी गुनाह माफ़ करके, हमारा अंतर साफ़ करके, हमारे हृदय में श्री ठाकुरजी को पधराओ और हमारा जीवन भगवान, उनके संतों और भक्तों की सेवा में धन्य बनाएँ – ऐसी मंगल प्रार्थना...*

प.पू. अश्विनभाई की प्रार्थना के उपरांत एक साधक की अदा से **संतभगवंत साहेबजी** ने आशीर्वाद देते हुए कहा –

...क्या कहूँ यह उलझन है। जिसने कुछ किया न हो और बोलना पड़े तो उसे कैसा फील होता हो, ऐसी मेरी हालत है। स्वामिनारायण भगवान की कृपा या शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज की कृपा से उनके प्रति निष्ठा वाले कुटुंब में जन्म मिला। सो, दिव्य पुरुषों का संबंध मिला।

उनकी कृपादृष्टि हो तो उनकी इच्छा के विरुद्ध भले कितना करने की इच्छा हो, पर हम नहीं कर सकते... बापा की कृपादृष्टि हुई, उन्होंने अपने प्रेम में भिगोया। शुरुआत से ही प्रभुदासभाई यानि प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के योग में रखा। स्वामिजी सच में योगीजी महाराज का कार्य करने के लिए आए हैं – ऐसे साधु हैं। कॉलेज में पढ़ता था, तब इलेक्शन लड़ना हो या फंक्शन करने हों तब ***स्वामिजी ने मुझे प्रेम से डाँट-डाँट कर, बापा राज़ी हों ऐसा जीने के लिए मेरा सतत-सतत जतन किया है।*** *उनके प्रति प्रेम के कारण उनकी बातें मानते, ताकि बापा राज़ी हों। वाकई,* ***बापा राज़ी भी हुए, तो फिर दादुकाका का जोग दिया। काकाजी के साथ रहना हुआ, सब कुछ उन्होंने किया।*** *भले सब कहते हैं कि साहेब ने छात्रालय का निर्माण करवाया, पर मैंने कुछ नहीं किया।* ***काकाजी जैसे दिव्य पुरुष के सान्निध्य में रहना मिला। उन्होंने अपनी परावाणी, हेत में भिगो कर बापा को राज़ी करने के लिए भीतर में भाव प्रगटाया, तो जगत के जो शौक़ थे – इलेक्शन लड़ो, फंक्शन करो, यह करो-वो करो, वह अपनेआप छूटता गया।*** *जहाँ वह छूटा कि बापा ने युवक प्रवृत्ति-छात्रालय द्वारा अपने कार्य में शांतिभाई, अश्विनभाई, रतिभाई, वी.एस. को भी ओतप्रोत किया।*

विशेष प्रसन्नता के फलस्वरूप 1966 में पप्पाजी और बा के सान्निध्य में रखा।

हममें से किसी को भी भगवा कपड़े नहीं पहनने थे। हम सभी की इंगलैंड-अमेरिका की ओर दृष्टि थी, क्योंकि एक प्रवाह के कारण हमारे सभी मित्र भी उसी ओर थे। पर, बापा ने जाने नहीं दिया और अपने अद्भुत योग में रखा। सच में महिमा तो बापा के कारण है...

जैसे देवीप्रसाद बापुजी ने कहा – भारत की परंपरा, भारत की संस्कृति और संतों की रीति प्रकाश फैलाती है... ***आत्मा में रहे परमात्मा का प्रकाश जैसे-जैसे फैलता जाए, वैसे-वैसे अपनेआप देह के भाव पिघलते जाते हैं-देहभाव छूटता जाता है।*** *अंदर रहे परमात्मा प्रकाशित होते जाते हैं। लाईट का रॅग्युलेटर घुमाते जाओ, तो धीरे-धीरे लाईट बढ़ती जाती है, इसी प्रकार महाराज सब में*

विराजमान हैं, लेकिन देहभाव और अहं-ममता के कारण या आत्मा पर चिपकी किसी वासना के कारण प्रकाश ज़्यादा प्रकाशित नहीं होता। **काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामी, बा-बेन जैसे संतों के योग में रहना मिला। उन्होंने हमारा टॅलेन्ट, गुण, होशियारी का प्रभु के कार्य में उपयोग किया, जिसका हमें भी पता नहीं चला।** और... यही कारण था कि प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त होते-होते देहभाव पिघलने लगा और प्रभु विशेष प्रकाशित होते गए। उससे हृदय में विशेष शांति और आनंद उत्पन्न हो गया। सच में आज जो कुछ दिखाई देता है – सुनाई देता है उसका सबसे बड़ा यश कहें तो **योगीजी महाराज की दृष्टि, उनका सान्निध्य और प्रेम तथा साथ ही साथ काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, बा-बेन व अश्विनभाई, शांतिभाई, रतिभाई, सनंदभाई, वी.एस. एवं व्रतधारी भाई दिए इसी कारण है...** इन **भाइयों ने कभी कोई फरियाद या किसी चीज़ की मांग नहीं की। आज्ञा आई और बस लग पड़े... साधुता के मार्ग पर हम चले नहीं, हमें चलाया गया है।** अब जब गुणगान होता है, तो सोचो मुझे कैसा स्पंदन होता होगा। हमें जाना तो उस ओर था। कई बार एक उदाहरण देता हूँ– आणंद स्टेशन पर खंभात, अमदावाद, वडोदरा और डाकोर जाने वाली चार ट्रेइन्स एक साथ खड़ी होती हैं। खंभात और वडोदरा जाने वाली ट्रेन एक ही दिशा में जाती हैं, लेकिन आगे जाकर खंभात वाली ट्रेन 90 डिग्री पर मुड़ जाती है। वह इतनी स्मूधली मुड़ती है कि गाड़ी में बैठे लोगों को पता नहीं चलता कि सीधी जाती ट्रेन मुड़ गई है। इस सारे पंडाल में जो बैठे हैं, यदि वे सारे के सारे ट्रेन को 90 डिग्री पर घुमाने जाएं तो भी घूम नहीं पाएगी। लेकिन, कॅबिन में बैठा ड्राईवर लीवर को धक्का देता है, तो आसानी से पटरी बदल जाती है – पता ही नहीं चलता। इसी प्रकार हम जगत की ओर जाते थे, पर **बापा ने एक धक्का मार कर हमें 'अक्षरधाम' की ओर धकेल दिया।** तो उनका गुण गाना है; सच, हम में तो कुछ भी नहीं। ये दिव्य पुरुषों ने कैसी करूणा-कृपा की कि उन्होंने कृपादृष्टि में लिया, योग दिया, सेवा दी, ऐसे संतों के जोग में रखा। अकेले हाथ कोई काम नहीं हो सकता; सो ऐसे साथीदार दिए कि जो एकत्वभाव से एक साथ 'याहोम' हो गए। उसी के परिणामस्वरूप यह सब हुआ है। सच में गुणगान गाने हों तो बापा की कृपा के, काकाजी–पप्पाजी-हरिप्रसादस्वामिजी की दिव्यता के, अश्विनभाई, शांतिभाई, रतिभाई, सनंदभाई की मित्रता और बापा को राज़ी करने की भावना के एवं बाकी इन सभी हरिभक्तों के जितने गुणगान गाएँ वो कम हैं।

ऐसे दिव्य पुरुषों की हमें प्राप्ति हुई है, तो हमारे भाग्य का पार नहीं। बापा एक चीज़ सीखाते कि **भगवान के भक्तों की प्रभु के भाव से माहात्म्ययुक्त सेवा करो, तो भगवान राज़ी, राज़ी और राज़ी।** कैसे भी प्रारब्ध हों, बदल जाएँगे...

प्रभु ने हमें सब कुछ दिया है, अब जीना हमें है। बापा दृष्टांत देते थे कि एक सेठ खूब एशोआराम से रहता था। उसकी बीवी भोजन की थाली परोस कर मुँह में निवाला देती थी। साईड में और सिर पर पंखा भी चलता था, लेकिन फिर भी उसे पसीना आता था। आख़िर एक दिन उसकी पत्नी ने पूछा कि पंखे चलते हैं, मैं खाना बना कर परोस कर लाती हूँ और मुँह में निवाला देती हूँ, फिर भी आपको पसीना क्यों आता है ? तुरंत सेठ ने कहा कि चबाता कौन है, तेरा बाप ? बापा कहते कि उसे चबाने में इतनी तकलीफ पड़ती थी, यदि खाना बनाना होता तो हार्ट अटॅक आ जाता। बापा के कहने का अर्थ यह था कि हमें सर्वोपरि पुरुषोत्तम का आसरा हुआ, ऐसे

संतों के योग से निष्ठा दृढ़ हुई और जन्म-मरण की मूल वासनाएँ जल गईं। अब हमें कुछ करना नहीं है। लेकिन, खाली इंसान खुरापात ही करेगा; इसलिए भगवान ऐसे उत्सव-समैया द्वारा हमारी क़ाबिलीयत का उपयोग करने का मौका देते हैं। बापा कहते कि अक्षरधाम का इतना अच्छा सुख प्राप्त करने का चान्स मिला है, तो जतन करके उसे संभालें। वो किस प्रकार कि फलां ऐसा-ढिमका ऐसा, यह छोटा-यह बड़ा, किसी की निंदा किए या टिप्पणी करे बिना, किसी के दोष का विश्लेषण किए बिना भगवान और भगवान के भक्तों का केवल गुण गाओ, सुनो और अच्छाई देखो। इतना करेंगे तो भगवान कृपा करने के लिए बैठे हैं। हम भटक न जाएँ, तो प्रभु ने कृपा करके काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामिजी के सान्निध्य में रखा। उन्होंने महिमा की बेल चढ़ा दी। माहात्म्ययुक्त सेवा करने की आदत डलवा दी। सो, कहीं भी अभाव-अमहिमा की बात हो, अंदर घंटी बजती कि इसमें तो जाना ही नहीं। ऐसा अंदर का तंत्र बना दिया। तो, ऐसे संत, व्रतधारी भाई, संत बहनें और एकांतिक भक्त अक्षरधाम का सुख भोगते हो गए।

इसी मार्ग पर हम चलें और संप, सुहृद्‌भाव व एकता से चलें। मैंने मूर्तिप्रतिष्ठा के समय स्वामिजी से प्रार्थना भी की कि ***योगीबापा, काकाजी, पप्पाजी हमें बीच मझधार में छोड़ कर नहीं गए, आप जैसे दिव्य संतों का सान्निध्य देकर गए हैं; तो आज संकल्प करना कि अनुपम मिशन, योगी डिवाईन सोसाईटी, गुणातीत ज्योत, दिल्ली-गुरुजी, पवई-भरतभाई, शिकागो-दिनकरभाई द्वारा बापा का काम जो हो रहा है; वे हम सभी मिलजुल कर, एक होकर, एक-दूजे के पूरक बन कर भक्ति अदा करें, तो शक्ति प्रगटेगी। काकाजी हमें कहते-तुम आठ जने एक होकर रहोगे तो महाएकांतिक होओगे। बापा, काकाजी, पप्पाजी और बा की हूँफ से उमंगभरी 'जी हज़ूरी' की, तो उन्होंने कृपा बरसाई।*** *यह जो भी हुआ है या हो रहा है, उसके लिए बड़ी से बड़ी कृपा हो तो महाराज, गुणातीत, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामी जैसे संतों की है और शांतिभाई, अश्विनभाई, रतिभाई, सनंदभाई और यहाँ बैठे हुए एकांतिक भक्तों के साथ-सहकार से हुआ है... जिस-जिस ने तन, मन, धन और आत्मा से सहकार दिया है, वे सभी जीतेजी अक्षरधाम के सुख से सुखी हों... शक्ति, भक्ति, समृद्धि खूब मिले, प्रभु का दास होकर प्रभु की भक्ति विशेष वृद्धि से करे–ऐसी प्रभु एवं संतों के चरणों में प्रार्थना।*

प.पू. निर्मलस्वामिजी ने आशीर्वाद दिया–

...साहेब का आज प्रादुर्भाव है... साहेब सोलह वर्ष के थे, तब से उनके दर्शन कर रहा हूँ। गोंडल शरद्‌पूर्णिमा के उत्सव में साहेब ने पहली बार सभा में बात की तो बापा ने काकाजी से हार मंगवा कर स्टेज पर पहनाया था। मैं तब कोठार की सेवा में था; ***बापा ने मुझसे कहा था कि जसुभाई का ध्यान रखना, उनका समागम करना।*** *तब समागम का अर्थ पता नहीं था। पर, आज अक्षरधाम की सभा में मुझे और आपको एन्टरी मिली। जो अक्षरधाम में सभा है, वैसी ही आज वेमार गाँव में है। जो* ***भगवान स्वामिनारायण दादाखाचर को मिले थे, वही भगवान आज हमें मिले हैं।*** *स्वामिजी, साहेब को राज़ी कर सकें...*

प.पू. गुरुजी ने आशिष वर्षा की –

...साहेब की प्रतिभा सभी जानते हैं कि वे ***'समन्वयातक स्वरुप'*** *हैं। कहीं भी समन्वय करना हो, तो गुणातीत समाज में साहेब सहज ही याद आते हैं। संजोगवश*

आज सभी घटनाएँ समन्वयातक बन गईं। साहेब की प्राकट्य तिथि 'धुलेन्डी' और दिनाँक 23 दोनों एवं उसमें भी होली व धुलेन्डी दोनों एक ही दिन हैं। यह भी समन्वय है। रामदेवजी के लिए कहा जाता है कि योग को यदि लोकभोग्य किया हो, तो वो रामदेवजी महाराज ने किया है। **आध्यात्मिकता सिम्पलीफाई करके खुद जीकर बताया हो कि तुम भी ऐसा कर सकते हो, वो साहेब जैसे गुणातीत संत ने बताया है।** उनका भी उपस्थिति से आज समन्वय हो गया...

अभी साहेब ने अपनी साधना का क्रक्स दर्शाया। बहुत समझने लायक बात है। बापा ने खुद कहा हुआ है–गुणातीतानंदस्वामी ने 200 लड़कों को ब्रह्मविद्या पढ़ाई थी। 'ब्रह्मविद्या पढ़नी या पढ़ानी'–वो तो ब्रह्मविद्या क्या चीज़ है, इसे जो समझता होगा उसे ख्याल पड़ता होगा। उसे भी बापा ने खूब सिम्पलीफाई कर दिया कि–**प्रगट ब्रह्मस्वरूप संत को पहचानना, वो ब्रह्मविद्या!** इससे आगे, बापा ने साहेब के लिए कहा है–अस्सी ब्रह्मविद्या पढ़े हुए महारथिओं के वे भोमिया-गाईड हैं। मीन्स, दो सौ में भी साहेब की प्रतिभा क्या है, उसका ख्याल पड़ जाता है। वो ब्रह्मविद्या पढ़े हुए जो दो सौ थे, उनसे साहेब खूब ऊपर हैं। तो, कहना यह है कि जैसे इन्होंने कहा कि मैंने कुछ किया ही नहीं है, वो इनकी बात एकदम सही है। क्योंकि वे सद्यसिद्ध विभूति होंगे, तभी योगीबापा बोले कि अस्सी ब्रह्मविद्या के गाईड्स के वो महारथी हैं।

चटवानी साहेब ने साहेब के दासत्व की बहुत अच्छी बात की! 'दासत्व'–गुणातीत स्वरूप का लक्षण है। वे कभी महाराज के प्रति का सेवकभाव, महाराज का दासत्व चूकता नहीं है। अभी भी प्रतिष्ठा के समय पर सभी ने दर्शन किया होगा कि **साहेब को जो सम्मान मिलता है, वो महाराज को समर्पित कर देते हैं–वो दासत्व है। इससे भी आगे–हर एक मुक्त में वे महाराज को देखते हैं।** हर एक मुक्त को महाराज का ही स्वरूप मान कर वो मुक्तों के समक्ष समर्पित रहते हैं। हम अश्विनभाई को अश्विनभाई के रूप में देखते हैं या शांतिभाई को शांतिभाई के रूप में देखते हैं; पर, साहेब हर एक में महाराज-योगीजी महाराज को देखते हैं। एक छोटा-सा प्रसंग बताता हूँ–

...विदेश का ग्रुप लेकर साहेब दिल्ली आए थे। वहाँ से छपैया गए और वापसी में लखनऊ से दिल्ली एयरपोर्ट रुक कर वडोदरा जाने वाले थे। गुणातीत समाज अपना एक कुटुंब-परिवार है, तो स्वाभाविक ही हम साहेब एवं ग्रुप के लिए नाश्ता लेकर गए थे।

मैंने पप्पू से तीन-चार बार कहा था कि साहेब से कहना कि वे खाना खाकर न आएं, हम अच्छा-सा खाना लेकर आते हैं। पप्पू मुझे 'हाँ-हाँ' करता रहा। मैंने पूछा भी कि तूने कह दिया है, तो उसने कहा कि 'हाँ' कह दिया है। जब हम एयरपोर्ट पहुँचे और साहेब के सामने खाने की डिश रखी, तो पप्पू हँसने लगा। साहेब ने कहा कि मैं सिर्फ फ्रूट खाता हूँ। लेकिन बाद में साहेब को पता लगा कि सुबह से गुरुजी इसका आग्रह कर रहे थे, तुरंत इन्होंने फ्रूट छोड़ कर खाना ही खा लिया। यूं, वे अपनी बात नहीं रखते, मुक्तों की बात का स्वीकार करते हैं और इसीलिए वे महाराज का स्वरूप हैं।

भगवान कोई हुआ नहीं, कोई होता नहीं, न होगा। लेकिन महाराज जिसमें अखंड रहते हैं, ऐसा गुणातीत स्वरूप-ऐसी विभूतियों की गोद में हमें रहने को मिला है। तो, साहेब की और महिमा गाने के बजाय जिस ढंग से वे चले हैं, जैसे कि उन्होंने बताया कि उन सबकी 'एकता'...!

यहाँ एक चीज़ समझने जैसी है कि यह हुआ कैसे ? हमने इनकी बातों में ही सुना कि साहेब संतों से जुड़े रहे। योगीबापा, काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामिजी – जहाँ भी बापा ने इन्हें रखा, वहाँ ऐसे संतों से वे जुड़े रहे। जहाँ जिससे जुड़े उन्हें महाराज का स्वरूप समझ कर इन्होंने हमेशा उनका सेवन किया है। इन्हें सेवन करने की कोई जरूरत नहीं थी, लेकिन हमें एक रास्ता दिखाया है। तो, हमें यही करना है। सेवन करने के लिए तो हम भी तैयार रहते हैं। लेकिन, जैसे अभी अश्विनभाई ने प्रार्थना करते हुए बात की कि साहेब के प्रति आया हुआ ***'मनुष्यभाव'****... मैं क्या समझता हूँ कि अब हम सबको ऐसे संतों के प्रति मनुष्यभाव तो है नहीं। आज छोटे बच्चे से भी पूछेंगे तो वह कहेगा कि साहेब तो भगवान हैं। मनुष्यभाव की बात ही नहीं हो सकती। लेकिन, हमें इनके प्रति एक* ***'मायिकभाव'*** *जरूर रह जाता है।*

मनुष्यभाव और मायिकभाव में बड़ा फर्क है। मायिकभाव, वह मैं समझाता हूँ। रामचंद्रजी को मिलने के लिए जब विभीषण आए, तो रामचंद्रजी ने उन्हें 'आओ, लंकेश' कह कर संबोधित किया। सुग्रीव वहीं थे, उन्होंने रामचंद्रजी से एकदम कहा कि अभी तो हमने रावण के साथ युद्ध शुरू भी नहीं किया है। लश्कर का सेनापति भी मैं हूँ। आपने एकदम कह दिया लंकेश, लंका अभी कहाँ हमारी हुई है ? रामचंद्रजी ने फट् से कह दिया – लंका अपनी नहीं होगी, तो मेरी अयोध्या मैं विभीषण को दे दूँगा। यह जो विचार आया कि रामचंद्रजी ने इतना ठीक किया - इतना ठीक नहीं किया, वो मायिकभाव है। ***हम भी भीतर में झांकेंगे तो पता लगेगा कि कई बातों पर हमें ऐसा होता होगा। साहेब ने यह ठीक नहीं किया वगैरह। पर, हम यह मानें कि ऐसे बड़े संत जो भी बात करते हैं, वो एकदम सही है।*** *मैं आपको यह उपदेश करता हूँ, लेकिन यह बड़ा कठिन है। कई बार ऐसे संत हमें ऐसी चीज़ें कह देते हैं, वो हमसे निगली नहीं जाती है। मेरी खुद की बात करता हूँ। वर्षों पहले की बात है, जब हम अक्षरभुवन में रहते थे, मतलब 1966 से पहले की। एक बार बापा से मैंने अपनी कुछ बातें लिख कर दीं। बापा ने वो बातें पढ़ी - करी और एकदम कह दिया – मुकुंदजीवन बहुत 'निर्दोष'। मुझे हुआ कि बापा ने मेरी बातें पढ़ीं कि नहीं। वो बातें मैंने फिर काकाजी से करी थीं या शायद पप्पाजी उस समय वहाँ हाज़िर थे। यह बात पप्पाजी के कानों में गई। फिर किसी प्रसंग पर पप्पाजी ने मुझसे कहा था – बापा ने कहा हुआ है कि मुकुंदजीवन 'निर्दोष'। सो, मैं तो तुझे 'निर्दोष' मानता हूँ। तब, मैं सोच में पड़ा कि जो मुझे कहा हुआ है, वो मुझे मानना है ; जबकि पप्पाजी मानते हैं। और... पप्पाजी की मैंने मेरे साथ हमेशा ऐसी एप्रोच देखी है कि वे किसी निर्दोष स्वरूप के साथ बातें करते हों।*

हर एक को ऐसा हुआ होगा। उन्होंने सभी को निर्दोष-अक्षर के मुक्त ही समझा है। तो, और कोई चीज़ मांगनी नहीं है। मुझे याद है, ***काकाजी*** *ने साहेब को एक आशीर्वाद दिए हुए हैं। शायद इस बार की पत्रिका में भी आया हुआ है –* ***'आप सब अक्षरधाम के हो और यह मनवा देने का काम साहेब का है।'*** *तो स्वामिजी - साहेब - अक्षरविहारीस्वामी सब आज ऐसे आशीर्वाद बरसाएँ कि हम दिल से मान लें कि हम अक्षरधाम के हैं।*

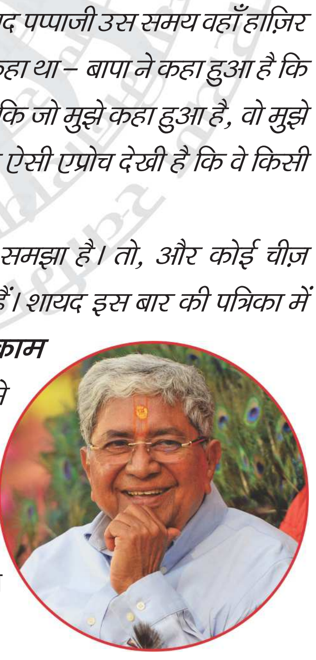

संयोगवश **शहीद दिन** था, सो प.पू. गुरुजी ने **'अक्षरज्योति'** की बहनों की ओर से **राष्ट्रीय ध्वज** के रंगों का विशिष्ट हार, **संतभगवंत साहेबजी** एवं **योगगुरु रामदेवजी महाराज** को एक साथ पू. अभिषेक एवं पू. आशिष द्वारा अर्पण करवाया। तदोपरांत **प.पू. रामदेवजी महाराज** ने आशीर्दान दिया –

...आज साहेब का अमृत महोत्सव है, हम सबका बहुत सौभाग्य है... चिलचिलाती गर्मी में आप सबके हृदय में भक्ति की इतनी ठंडक है कि सब गर्मी भूल गए... साहेब का बहुत प्रेम है। उनसे मिले हुए करीब दो दशक बीत गए। तब मैंने संन्यास नहीं लिया था, मुझे लोग 'आचार्य रामदेव' कहते थे... ***केवल भौतिकवाद ही जीवन का अंतिम गंतव्य नहीं है - भौतिकवाद आधार है, अंतिम गंतव्य तो अध्यात्म ही है... एक समर्थ गुरु की सत्ता का आश्रय हमें मिला है।*** *जीवन में किसी बड़े महापुरुष का आशीर्वाद हम पर रहना चाहिए। गुरु परंपरा की बात आती है, तो भगवे वस्त्र या जैन इत्यादि संप्रदाय हो तो श्वेत वस्त्र नज़र समक्ष आता है। लेकिन जैसे योगीजी महाराज ने साहेब को आदेश दिया, तो जब मैं 1993 में सूरत में उनसे मिला, तब ऐसा हुआ कि ऐसे भी कोई साधु हो सकता है। पर, जाना कि* ***साधु वस्त्र से नहीं, चरित्र से होता है। वस्त्र की भी परंपरा हो सकती है, उसका गौरव करते हैं। लेकिन, वस्त्र से बड़ा चरित्र होता है और उसमें भी गुरुआज्ञा...*** *योगीजी महाराज इस युग के महान योगी थे। इनके रोम-रोम में विश्व कल्याण की भावना थी – एक ही मंत्र कि भगवान सभी का भला करें। साहेब योगीबापा का प्रतिरूप हैं... साहेब को बीस साल पहले जैसा देखा था, वैसे के वैसे हैं और सौ वर्ष तक ऐसे के ऐसे रहेंगे व हम सबको आशीर्वाद देते रहेंगे...*

महोत्सव की पूर्णाहुति सभा के अंत में **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** ने आशिष वर्षा की –

...रामदेवजी महाराज ने हमें खूब आनंद कराया। ***कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग, वह स्वरूपयोग में लय हो जाता है। साहेब माँ जैसे साधु हैं। कपड़े आपके जैसे हैं, लेकिन हृदय साधु का है। वे कर्मयोगी, ज्ञानयोगी से बढ़ कर स्वरूपयोगी हैं। साहेब को कोई स्वार्थ नहीं।***

देह और देह के संबंधी के प्रति जितनी आत्मबुद्धि और प्रीति हो, उतनी प्रीति वच. अंत्यं. 5-7-11 के मुताबिक भगवान के भक्तों के साथ हो जाए, तो आत्मा की यात्रा प्रभु की ओर चले। 'संत समागम' इसीलिए जरूरी है। जब तक आत्मा प्रभु की ओर नहीं चलेगी, तब तक हठ, मान और ईर्ष्या जाएँगे नहीं। भगवान स्वामिनारायण ने कहा है कि माँ जैसे साधु को यदि तन, मन, धन से राज़ी कर लें, तो हमारी इन्द्रियाँ-अंतःकरण प्रभुमय बने... प्रभुभक्ति उसका प्राण बने। खुद की अस्मिता ज़ीरो बनती जाए... ***जैसे-जैसे संतों के साथ मैत्री – प्रीति बढ़ती जाए, वैसे-वैसे इन्द्रियाँ - अंतःकरण प्रभुमय बनते जाएँ।*** *संत को किसी की अपेक्षा और उपेक्षा नहीं... जैसे-जैसे संप, सुहृद्भाव, एकता से जीते जाएँगे, वैसे-वैसे हठ, मान, ईर्ष्या कम होते जाएँगे और तब आत्मा की यात्रा प्रभु की ओर चलती है...*

ये सारे आयोजन के पीछे साहेब की यही भावना है... ***कैसे भी संजोगों में माँ जैसे संत का समागम करते रहना।*** *मन, कर्म और वचन से सेवन करते रहना... जैसी रुचि अभी तुम्हारे हृदय में जाग्रत हुई है, वैसी सुरुचि प्रभु तुम्हारे हृदय में क़ायम रख कर जीवन को धन्य करें...*

यूं, गुणातीत स्वरूपों के आशीर्वाद का खज़ाना प्राप्त करके, गुणातीत समाज की विसर्जन प्रार्थना और शहीद दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रगान व राष्ट्रभक्ति के नारों से अमृत महोत्सव का समापन हुआ।

अलविदा – श्री महेता सेठजी !

प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी के ज़रिए करीब बीस साल से सत्संग समाज के संपर्क में रहे **श्री अरविंद महेता सेठ** –जिन्हें सभी **'महेता सेठ'** के नाम से जानते हैं – उनका **5 मई 2016** को यकायक बेवक़्त देहांत हुआ... ! उसी दिन दोपहर करीब दो बजे तो वे दर्शन करने मंदिर आए थे। ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की पुष्पसमाधि की परिक्रमा की थी और... !

सो, मंदिर में मौज़ूद सभी यह खबर सुन कर स्तब्ध - अवाक् रह गए ! यह दुःखद घटना सुनते ही प.पू. गुरुजी की आज्ञा से भाइयों के साथ प.पू. दीदी व बहनें तुरंत ही उनके घर गईं। उनकी धर्मपत्नी पू. बीना भाभी, दोनों बेटियों–सौ. शिवानी व सौ. शेफाली एवं परिवार को सांत्वना दी। देर रात को प.पू. गुरुजी भी सेठजी के दामाद प.भ. गगनजी एवं परिवार को ढांढस बंधाने के लिए सेठजी के यहां गए।

प.भ. महेता सेठजी धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे। आद्यशक्ति देवी माँ के प्रति उन्हें खूब आस्था। दिल्ली के झंडेवाला मंदिर में पूजा करने के लिए वे अकसर जाते। शायद परोक्ष की भक्ति का फल था कि उन्हें प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी का संपर्क हुआ। प.पू. स्वामिजी से लगाव के वश उन्होंने हरिधाम - सोखड़ा मंदिर की सेवा भी की। प.पू. स्वामिजी ने भी कई बार उनके घर को पावन किया।

दिल्ली में स्थित होने के कारण प.पू. गुरुजी से भी उनका संपर्क बना रहा। घर के सुख - दुःख के किसी प्रसंग पर, जब भी उन्होंने प.पू. गुरुजी को याद किया, तब - तब प.पू. स्वामिजी को राज़ी करने की एकमात्र भावना से प.पू. गुरुजी आधी रात को भी उनके लिए हाज़िर रहे। और... प.पू. गुरुजी के अपनत्व की भावना के वश पिछले अगस्त महीने से तो वे मंदिर लगातार आने लगे थे। सुबह 6:40 की धुन में वे अकसर मौज़ूद होते थे। यूं संतों के दर्शन, सेवा व समागम का लाभ लेते हुए उन्होंने जीवन की अंतिम सांस ली...

भगवान स्वामिनारायण एवं सभी गुणातीत स्वरूप इनकी आत्मा को शांति बख़्शें एवं उनके परिवारजनों को उनके इस वियोग से उबरने का बल दें।

अब उनका परिवार सत्संग से दिन - प्रतिदिन संबंध दृढ़ करता जाए - ऐसी प्रार्थना !

सूचना

'भगवत् कृपा' से लाभान्वित होते सभी मुक्तों से
वार्षिक चंदा – भारत के लिए **₹ 111** एवं **विदेश** के लिए **₹ 555** भेजने की नम्र विनती है।
यदि अब तक कुछ भी चंदा न दिया हो तो एक ही बारी **कम से कम ₹ 551** भेज कर,
2016 तक का पिछला सारा बकाया भी आप पूरा कर दें।

जब अंतरिक्ष से देवी-देवताओं ने पुष्पवृष्टि की!

गुरुजी काकाजी से जुड़े हैं, तो उनके संबंध वाले तो उन्हें अपने लगे ही;
पर, 'योगी के संबंध वाले सभी' मेरे, यह इन्होंने करके दिखाया।

– प.पू. ज्योति बहन

जब प.पू. दिनकर अंकल की आँखों से अश्रु टपक पड़े !

दिल्ली के लिए काकाजी ने गुरुजी का ही सिलेक्शन क्यों करा ?
यह खूब सोचने की बात है। – प.पू. प्रेमस्वामिजी

हमें काकाजी-पप्पाजी का जोग नहीं होता, तो हम यह जो म

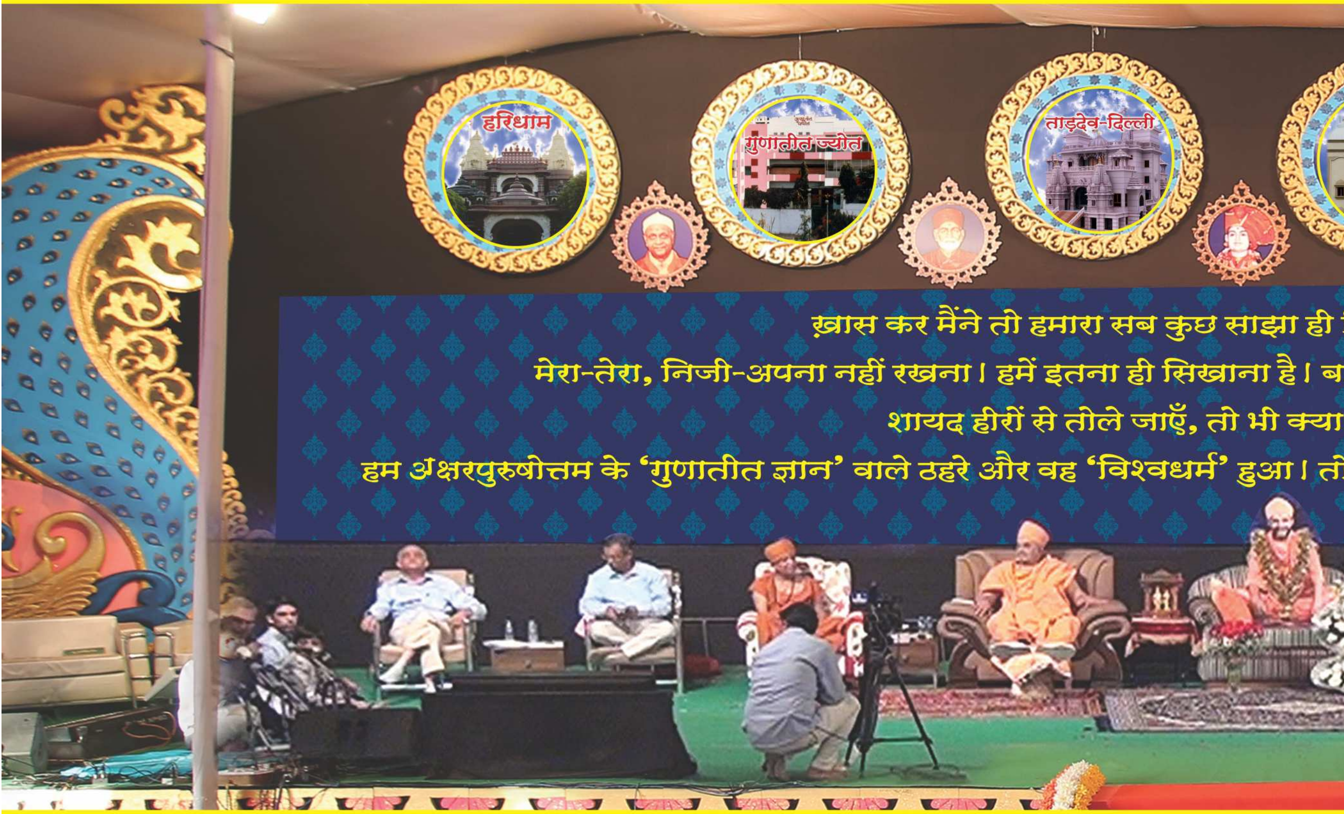

'सर जो तेरा चकराए...' इस भजन से दिव्यांग ने सबको झूमा दिया।

– संतभगवंत साहेबजी

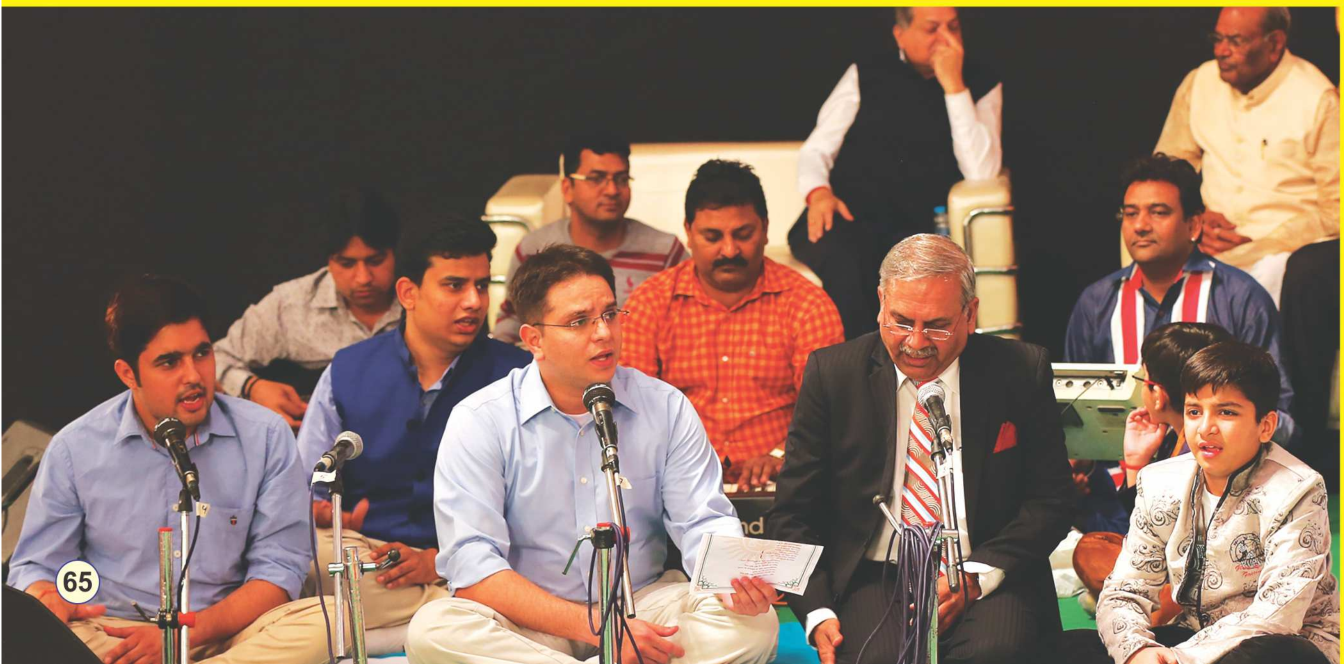

महकमा-आपस का एटॅचमेन्ट देख रहे हैं, वो नहीं बनता...

– प.पू. गुरुजी

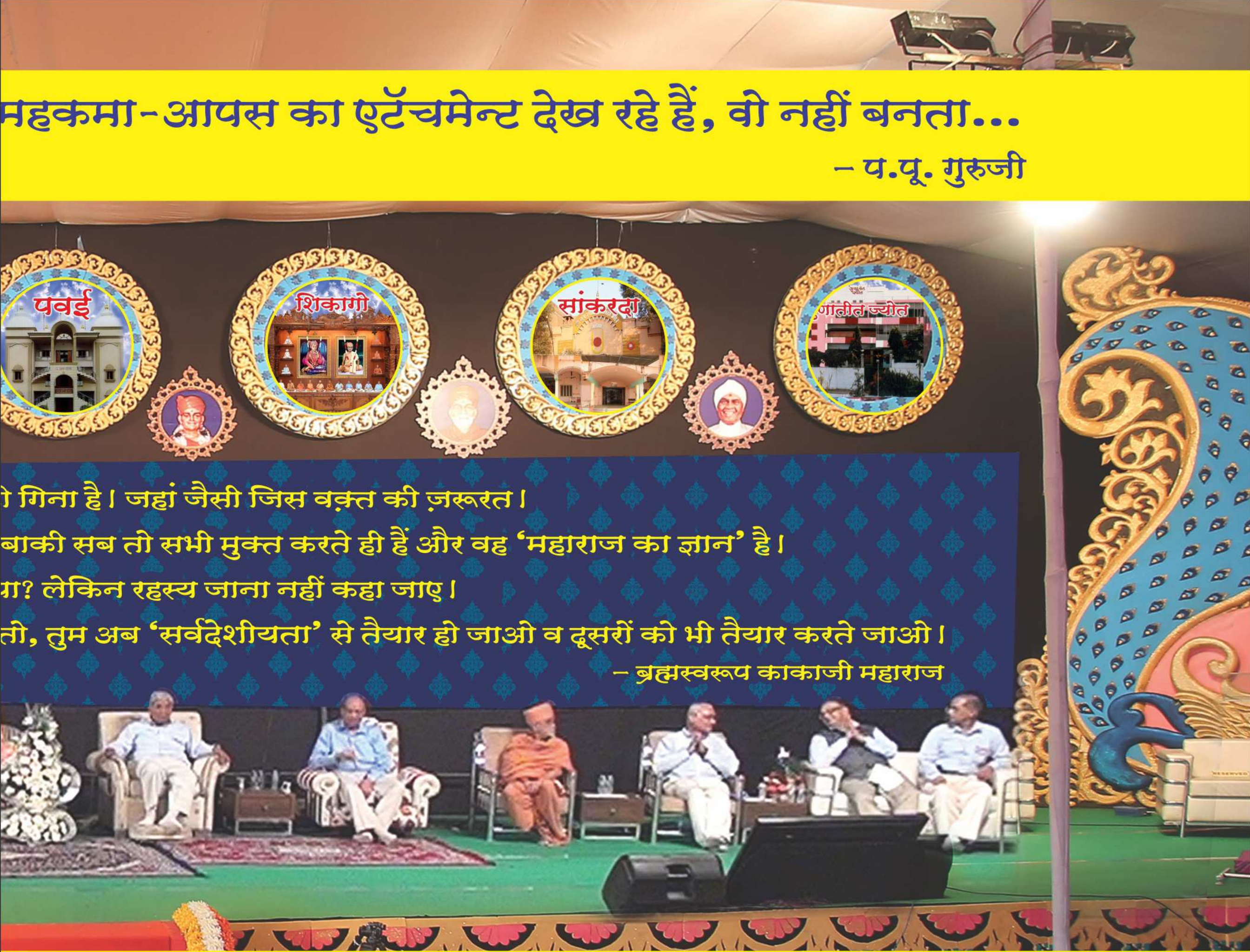

ो गिना है। जहां जैसी जिस वक़्त की ज़रूरत।

बाकी सब तो सभी मुक्त करते ही हैं और वह 'महाराज का ज्ञान' है।

गा? लेकिन रहस्य जाना नहीं कहा जाए।

तो, तुम अब 'सर्वदेशीयता' से तैयार हो जाओ व दूसरों को भी तैयार करते जाओ।

– ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज

व्रतोत्सव सूची

1. दि. 17.5.'16, मंगलवार – एकादशी – व्रत
2. दि. 20.5.'16, शुक्रवार – नृसिंह जयंती, फलारी व्रत
3. दि. 28.5.'16, शनिवार – गुरुहरि पप्पाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
4. दि. 1.6.'16, बुधवार – एकादशी – व्रत
   गुरुहरि पप्पाजी महाराज का दृष्टा दिन
   'गुणातीत ज्योत' – स्थापना दिन
5. **दि.2.6.'16, गुरुवार – ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की जयंती**
   प.पू. गुरुजी की भागवती दीक्षा तिथि
6. **दि.10-11-12-6.'16 – शिकागो में दिव्यबंधु जोड़ी काकाजी-पप्पाजी शताब्दी महोत्सव**
7. दि. 16.6.'16, गुरुवार – भीम एकादशी – व्रत
8. दि. 20.6.'16, सोमवार – वटसावित्री – व्रत
9. दि. 1.7.'16, शुक्रवार – एकादशी – व्रत
10. दि. 6.7.'16, बुधवार – रथयात्रा
11. दि. 15.7.'16, शुक्रवार – **देवशयनी एकादशी – व्रत, चातुर्मास प्रारंभ**
12. दि. 19.7.'16, **मंगलवार– गुरुपूर्णिमा ***

****(सुबह 8:45 से 10:15 ताड़देव मंदिर में मनाएंगे। जो इस समय न आ पाएँ, वे दिन में किसी भी समय आ करके 'गुरुपूजन' कर सकेंगे।)***

* विशेष महत्त्व की बात *

आजकल हर व्यक्ति मानो दौड़-सा रहा है। भागदौड़ के ऐसे माहौल में दुर्घटनाएँ सहज ही होती हैं।
ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज अकसर कहते – *कोई भी कार्य प्रभु के नाम का नमक डाल कर करो।*
गुणातीत समाज से जुड़े **सभी आत्मीय मुक्तों-हरिभक्तों** से
नम्र निवेदन, विनती, प्रार्थना या आख़िरकार कहिए कि आज्ञा है –

★ **कहीं से भी बाहर निकलने से पूर्व, प्रभु से साथ चलने की प्रार्थना करके ही कदम बढ़ाएँ।**

★ **सरकार की कड़ी पाबंदी भले ही न हो, लेकिन स्कूटर, बाइक या स्कूटी पर दूर या पास ही कहीं भी जाने वाले मुक्त (पीछे बैठने वाले भी) हॅल्मेट, और वो भी ISI मार्क वाला, पहन कर ही बैठें। इसी प्रकार–**

★ **गाड़ी में भी चालक एवं साथ वाली सीट पर बैठने वाले – यानि दोनों मुक्त सीटबेल्ट अवश्य लगा कर बैठें।**

हमारी इस बात को मान कर आप हमें अपनी ओर से निश्चिंतता प्रदान करें...
'सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु-मा कश्चित् दुःखमाप्नुयात्' की शुभेच्छा के साथ

हमारे गुरुजी के जय स्वामिनारायण।

आया, 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' – शिकागो !

अहो ! विदेश की धरती - शिकागो, जहाँ ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने पहल करके
पूर्व के संबंध वाले मुक्तों के जीव में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की 'प्रगट की निष्ठा' के बीज डाले
और... आज भी **प.पू. दिनकरभाई** द्वारा प्रगट रह कर सबकी परवरिश कर रहे हैं।
सभी के लिए अत्यंत आनंद व गौरव का विषय है कि
प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी, संतभगवंत साहेबजी और प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी
एवं संतों की निश्रा में 'बृहद् गुणातीत समाज' **शिकागो में 10, 11 व 12 जून 2016** को
ब्रह्मस्वरूप काकाजी – पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव का एक सोपान मनाएगा।
सो, प.पू. दिनकरभाई के कहे मुताबिक़ 43 साल के इंतिजार के बाद,
प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी करीब 80 मुक्तों के संग
इंदिरा गांधी इन्टर्नेशनल एयरपोर्ट T3 से मध्यरात्रि **2:00** बजे AI 127 से शिकागो जाने के लिए
दिनाँक 8 जून की 'देर शाम' 8:00 बजे दिल्ली - ताड़देव मंदिर से निकलेंगे।

- अतः **7 जून** की भजन संध्या दौरान विदाई समारोह संपन्न होगा।
- **अमेरिका की 15 दिन की यात्रा के बाद,**
  25 जून की दोपहर 2:50 बजे AI 102 से T3 पर वे दिल्ली लौटेंगे।

इसी प्रकार, **प.पू. भरतभाई** एवं **प.पू. वशीभाई** भी मुक्तों के संग
मुंबई से **25 मई** की रात को न्यूयॉर्क के लिए रवाना होंगे और **14 जून** को लौटेंगे।

- **जो मुक्त शिकागो नहीं जा पाएँगे, वे घर बैठे ही निम्न कार्यक्रमानुसार**
  http://live.kakaji.org पर इंटर्नेट के ज़रिए महोत्सव का लाभ ले सकेंगे।

भारतीय समयानुसार कार्यक्रम

10 जून 2016, शुक्रवार

सायं 07:00 से रात्रि 10:30	– समूह महापूजा
सवेरे 03:30 से सुबह 07:00	– गुणातीत समाज के मुक्तों द्वारा माहात्म्यदर्शन

11 जून 2016, शनिवार

सायं 07:30 से रात्रि 10:30	– गुणातीत समाज के संतों एवं साधकों द्वारा माहात्म्यदर्शन
मध्यरात्रि 01:30 से सुबह 04:00	– गुणातीत समाज की संत बहनों द्वारा माहात्म्यदर्शन
सुबह 06:30 से सुबह 08:30	– श्रद्धा - भक्ति अर्घ्य

12 जून 2016, रविवार

सायं 07:30 से रात्रि 11:30	– शताब्दी महोत्सव की पूर्णाहुति एवं प्रगट स्वरूपों व संतों के आशीर्वाद

R.N.I. 28971/ 77 *(Air Mail)*
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052